Machine Translated by Google

# खो जाने के लिए एक खूबसूरत जगह

Machine Translated by Google

निर्णय पर आधारित दुनिया में, क्या कोई ऐसी जगह हो सकती है जहाँ सही और गलत न हो। इस बारे में बहुत सारे आधिकारिक पाठ हैं कि चीजों को करने का सही तरीका क्या है, जीने का सही तरीका क्या है, वह प्रेम कहाँ है जो ज्ञान से निकलता है और जो मार्ग निर्धारित नहीं करता बल्कि आपके साथ मार्ग पर चलता है। वह प्रेम और उसकी अभिव्यक्ति, जो खुला है, जीवन की हर चीज पर आश्चर्य है और जो हो सकता है। कुछ ऐसा लिखा गया है जो बच्चों की वंडरलैंड की कहानी की तरह पढ़ा जाता है, फिर भी यह किसी भी विषय को यह कहकर टालता नहीं है कि यह बहुत जटिल है।

दो जिंदगियां बिना किसी डर या सीमा के साथ-साथ चलती हैं, बातें करती हैं, देखती हैं, परस्पर संवाद करती हैं, साझा करती हैं।

यह किसी रोमांटिक कल्पना की तरह लगता है, वास्तव में, यह सिर्फ ईमानदारी से और बिना किसी डर के साझा करना है। यह किसी को नींद में सुला देने के लिए, किसी को तथाकथित सफलता प्राप्त करने के लिए प्रेरित करने के लिए, अस्थायी बैसाखी प्रदान करके दर्द को कम करने के लिए नरम, खोखले शब्दों का संकलन नहीं है, बल्कि कोई भी शब्द चाहे कठोर हो या नरम, खुले दिमाग से लिखा गया है।

Machine Translated by Google

हम मन की भूलभुलैया से कैसे बाहर निकलें? मैं मन को कैसे नियंत्रित करूँ कि मैं जो चाहता हूँ उसे पा सकूँ? मैं मन को कैसे नियंत्रित करूँ और सबसे प्रतिभाशाली व्यक्ति कैसे बनूँ? दूसरों से हमें सिर्फ़ सवाल ही मिलते हैं जो इस उम्मीद पर आधारित होते हैं कि उनका जवाब क्या होना चाहिए। लोगों को यह सोचने के लिए तैयार किया जाता है कि जीने के सिर्फ़ सीमित तरीके हैं।

ऐसा लगता है कि जीवन खत्म हो गया है, जैसे कोई मशीनी चीज हो, बस ऐसी भूमिकाएं निभा रही हो जो बहुत कठोर हैं। हमारे वर्तमान समय में जीवन का अर्थ इतना बेजान, इतना कठोर, बंद, मशीनी, दोहराव वाला, बलपूर्वक है। प्रेम लालच, इच्छाओं की गलियों में खो गया है।

लोग अपने आस-पास लोहे के सख्त बक्से लेकर घूम रहे हैं जो खुले और प्रेमपूर्ण लोगों से रगड़ खाते हैं। इससे खुला रहना मुश्किल हो जाता है, खुद पर संदेह करना कमज़ोरी के रूप में देखा और महसूस किया जाएगा। लेकिन दूसरा

विकल्प बंद, संकीर्ण सोच वाला, आत्म-केंद्रित, जीवन के किसी भी वास्तविक अन्वेषण से रहित अस्तित्व वाला तथा सीमित और सीमाबद्ध होना है।

क्या आप वाकई यह जानने की हिम्मत दिखाएंगे कि जीवन क्या हो सकता है, या फिर आप दिए गए 5, 10, 100 विकल्पों में से ही चुनेंगे? अगर आप वाकई खुले दिमाग से तलाश करने के लिए तैयार हैं, तो ये शब्द आपके दिमाग में वैसे ही घूमने लगेंगे, जैसे हवा आपके शरीर के चारों ओर घूमती है।

Machine Translated by Google

Machine Translated by Google

भाग ---- पहला

Machine Translated by Google

कोई खो जाना चाहता है। सड़कें बहुत साफ़ हैं। मन सीमाओं पर सवाल उठा रहा है।

स्वयं की सीमाएं, बुद्धि की, भावनाओं की, कल्पना की, सोच की, धारणा की, मन द्वारा स्वयं बनाई गई समस्या का समाधान करने और उससे खुश होने की सीमाएं...

चलो हम जंगल में खो जाएं।

सरलता एक पिंजरा है। पक्षी ने जो पिंजरा बनाया है, उसमें बैठकर अब वह उड़ने से डरता है। क्या होगा अगर... क्या होगा अगर... क्या होगा अगर...मन रोता है...और मन में सभी क्या होगा अगर को जीते हुए, ऊर्जा बाहर निकल जाती है,

और वह पिंजरे की खिड़की से देखता रहता है, किसी के द्वारा उसे स्वयं से मुक्त किये जाने की प्रतीक्षा में।

वहाँ कोई और नहीं है। यह एक पिंजरे में बंद शून्य में बैठा पक्षी है। पिंजरा, शून्य, सब कुछ मन में मौजूद है।

क्या और भी कुछ है? कोई पूछता है...वास्तव में नहीं, अस्तित्व की तह से नहीं, स्वयं को छोड़ने के लिए नहीं..... बल्कि स्वयं को विकसित करने के लिए, पोर्टफोलियो में एक और आकर्षक उपलब्धि जोड़ने के लिए, अपने संग्रह में एक और दुर्लभ रत्न जोड़ने के लिए...

Machine Translated by Google

इसका मतलब है अधिक साधन, अधिक समान प्रकार... अधिक समान धन, अधिक समान लिंग, अधिक समान शक्ति....वास्तव में इसका मतलब अधिक नहीं है।

वास्तव में इससे अधिक क्या होगा?

कुछ ऐसा जो शब्दों में नहीं बयां किया जा सकता।
कुछ ऐसा जो पहले से मौजूद चीज़ों से प्राप्त नहीं किया जा सकता। कुछ मौलिक, नया, अलग-अलग कपड़ों के साथ उसी का दोहराव नहीं।

क्या हम इन शब्दों की गहराई को समझ पा रहे हैं? फिर से सोचें...क्या हम समझ पा रहे हैं?...
अगर कोई अभी भी पढ़ रहा है, तो इसका मतलब है कि अर्थ छूट गया है। अगर किसी को वाकई 'और अधिक' जानने की ज़रूरत है, तो वह रोमांटिक शब्दों से अपना मनोरंजन नहीं करेगा। अगर सवाल समझ में आ गया है, जैसे कि वाकई समझ में आ गया है, तो आपको जवाब बताने वाले किसी व्यक्ति को पढ़ने या सुनने की ज़रूरत नहीं होगी।

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। शब्द नहीं पहुंच सकते... प्यार पहुंच सकता है।

अस्तित्व हो सकता है और है। प्रेम जो शुद्ध स्वीकृति है।
किसी के अंगों में कोई संघर्ष नहीं है। सब कुछ एक साथ चल रहा है, जैसे कि वह अलग नहीं है... और बस यही है... यह अहसास कि कोई अंग नहीं है।

यह सब एक है.

Machine Translated by Google

क्या समस्या सोच की है?
या
सोच को नियंत्रित करने की इच्छा?

क्या मैं स्वयं को एक प्रश्न की दृष्टि से देख रहा हूँ?

यह 'मैं' क्या है, जो खुद से सवाल करता है

'मैं' एक मुद्दा है?
या
'मैं' हूँ या नहीं, इस प्रश्न पर विचार कीजिए।

चलो मैं हटा दूँ
इस पर सवाल उठाने से नहीं और इसे स्वीकार
करने से नहीं, बस इसे हटा दें

जो बचा है वह 'है'

Machine Translated by Google

मैं मन हूं और मन मैं हूं

इस अहसास के साथ व्यक्ति सीढ़ियों पर आगे बढ़ता है

ऊपर या नीचे? कोई फर्क नहीं पड़ता

## यह सोच रहा है और मैं इसे रोक नहीं सकता, यह सोच नहीं रहा है और मैं इसे हिला नहीं सकता

आधार एक ही है

यह सोचना या सोचना बंद करना नहीं है, यह इस बात पर नियंत्रण है कि कब क्या होता है

Machine Translated by Google

जीना ही अस्तित्व है। यह सहज है। प्रकाश की तरह जो सिर्फ़ सीधा चलना जानता है।

यह सब एक कहानी है। एक इंसान की कहानी। समय तब शुरू हुआ जब किसी ने गिनती शुरू की। हम एक दूसरे के सबूत के रूप में मौजूद हैं।

क्या हम जान सकते हैं कि समय से पहले क्या था?

समय या अंतरिक्ष-काल की परिभाषा के अनुसार, जो व्यक्ति इस समय मौजूद है, वह अनुभव करने के लिए कहीं और नहीं जा सकता।

यदि कोई अस्तित्व की गहराई में जाए, अस्तित्व की अछूती घास में, जहां भागों में भेदभाव नहीं किया जाता, जहां कोई संघर्ष नहीं है, कोई वरीयता नहीं है, जहां अस्तित्व को 'वर्तमान' के रूप में महसूस किया जाता है... तब उसे एहसास होगा कि यह जानना नहीं है कि कहानी से परे क्या है, यह पूरी कहानी जानने के लिए है।

बल के बिना अन्वेषण, अस्तित्व का अन्वेषण है।
उस अन्वेषण में कोई विकल्प नहीं है। लेकिन यह शुद्ध अन्वेषण है क्योंकि इसमें कोई भविष्यवाणी नहीं है। सब कुछ एक आश्चर्य है, हर पल पूरी तरह से जिया जाता है।

पानी नीचे की ओर बहता है और अपना रास्ता खुद बनाता है।

Machine Translated by Google

जो वस्तु छूने जा रही है, उसे पहले कभी पानी ने नहीं छुआ है।
सब कुछ पहली बार है क्योंकि उसे केवल यही पता है कि क्या है।

क्या यह संग्रह है? इसका आरंभिक बिंदु कहां है? आप 'बिना आरंभिक बिंदु के घटित होने वाली यादों के संग्रह' को क्या कहेंगे या नाम देंगे?

दरअसल यह पानी की उस बूंद की कहानी है। यह एक ऐसी कहानी है जिसका कोई आरंभ और अंत नहीं है।

और यह एक इंसान की कहानी है।

Machine Translated by Google

गोल-गोल घूमता है मन, क्यों... और गोल-गोल घूमता है

यह फिर से

हर प्रश्न इसे घुमाता है लेकिन यह केवल एक चक्र में ही घूम

सकता है तो यह कहाँ घूमेगा

प्रश्न पर वापस

अगर सवाल बंद हो जाएं तो

आंदोलन रुक जाएगा, यह रोक जबरन नहीं

लगाई गई है, यह बस वहां नहीं है, जैसे यह

गायब हो गई हो।

यह कैसे लुप्त होगा?

क्या हम इस मन को प्रश्नों के माध्यम से वहाँ पहुँचने का प्रयास करते हुए देख रहे हैं

मैं और क्या प्रयास करूँ? रास्ता कहाँ

है? वह क्या है?

.

.

.

और यह फिर गोल-गोल घूमता रहता है

Machine Translated by Google

सुंदरता व्याख्याओं में नहीं है, यह शब्दों, छवियों, वीडियो के माध्यम
से वर्णन करने में नहीं है...

यह अनुभव में निहित है और किसी भी
अनुभव को पकड़ा नहीं जा सकता है, अनुभव स्वतंत्र रूप से घूमता
हुआ विचार है

यह वरीयताओं में नहीं है एक बरसात का दिन सुंदर है
और एक धूप वाला दिन सुंदर है क्या ऐसा कोई
दिन है जो सुंदर नहीं है

यह स्थिर नहीं है

यह गतिशील होने की इसकी भेद्यता में निहित है और यह सुंदर है क्योंकि यह होने के
साथ-साथ बदल रहा है, यह 'है और बन रहा है' दोनों घटित हो रहा है

Machine Translated by Google

एक तितली अपने पंख फड़फड़ाती है और सब कुछ बदल जाता है

एक तितली अपने पंख न फड़फड़ाने का फैसला करती है और सब कुछ बदल जाता है

क्रिया या कर्म भौतिकता में निहित नहीं है

यह इच्छाशक्ति में निहित है

भौतिकता केवल इच्छा की अभिव्यक्ति है

Machine Translated by Google

मुझे एक टुकड़ा दे दो, मुझे
यह भी एक टुकड़ा दे दो,
वह भी, वह भी...

मैं अभी भी खाली क्यों महसूस करता हूँ
क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों

मेरे पास सबकुछ है, वो सबकुछ जो एक इंसान चाहता है, वो सबकुछ जो एक
इंसान कल्पना कर सकता है

मैंने यह कौन सा प्रश्न पूछा है जिसका उत्तर
खरीदा नहीं जा सकता

मुझे कोई किताब, पॉडकास्ट, लेक्चर, शिक्षक, कोई जगह बताओ... मुझे कुछ ऐसा करने
को कहो जिससे मुझे खालीपन महसूस
न हो

खुद को इतना असहाय देखकर आँखों से आँसू
बहने लगते हैं

Machine Translated by Google

एक पक्षी उड़ता है

लेकिन उसे इस बात की अवधारणा है कि वह किस तरह के पेड़ पर बैठना चाहता है

यह हर उस पेड़ से मेल खाने की कोशिश करता है जो मन में छवि के साथ आता है

कुछ भी इससे पूरी तरह मेल नहीं खाता

मन में छवि माप के साथ बनाई जाती है
जाहिर है यह कभी भी वास्तविकता से मेल नहीं खा सकता

यह अपनी कल्पना की हुई चीज़ को पाने के उथले उद्देश्य से उड़ता रहता है

अहंकार उसे कहीं और बैठने नहीं देता

अब यह रुक नहीं सकता
केवल मृत्यु ही इस संघर्ष को समाप्त कर सकती है

Machine Translated by Google

जिंदगी क्या है?

यह आपके माध्यम से चलता है, आप जो जीवित हैं

मृत्यु क्या है?

जब गति रुक जाती है, तो वह मृत्यु है

अब क्या यह गति कभी रुकती है कि पानी का एक अणु पहाड़ों से यात्रा करते हुए
समुद्र में चला जाता है?

यह अभी भी चल रहा है, केवल नाम बदल गया है

जो ख़त्म हो गया वो उसके एक रूप की कहानी है जो चल रहा था वो अभी भी चल रहा है

Machine Translated by Google

एक फूल खिला

और हर कोई एक दूसरे को समझाने आया कि क्या हुआ है

किसी ने पेंटिंग शुरू कर दी
कोई व्यक्ति उग्रता से लिख रहा है

लोग अपने मापन के उपकरणों के साथ आ रहे हैं - किसी भी विषय की भाषा,
विज्ञान, अध्यात्म, दर्शन, कला...

हर उपकरण अलग है और कोई भी वास्तव में फूल को नहीं देख पाता

अब गुट बन गए हैं

आइये अंत तक लड़ें कि कौन सही है

हम कैसे तय करेंगे कि कौन सही है?
क्या होगा अगर सभी लोग गलत हों?

अब क्या यह बात मायने रखती है कि वास्तव में सत्य क्या है?
.
.
.
कोई व्यक्ति फूल के पास बैठा हुआ बस.....

Machine Translated by Google

अंदर से लेकर बाहर तक हर चीज़ के प्रति सचेत, हर
चीज़ के प्रति सचेत

वास्तव में दुनिया को अपने अंदर खेलते हुए देखना ऐसा नहीं
है जैसे दुनिया किसी चीज़ में खेल रही हो

जिसे हम 'मैं' कहते हैं और 'मैं नहीं' कहते हैं, उसका खेल ही आपकी पूरी दुनिया है, जिसे
कोई महसूस कर सकता है।

इसके अलावा किसी भी बात की व्याख्या व्यर्थ है यह सब रहस्य है, हर पल बदल
रहा है, कोई नियम नहीं, कोई पैटर्न नहीं, रूप बदल रहा है, अपने आप में
गतिशील है

कोई इसे ईश्वर कहता है, कोई आत्मा, कोई जीवन...

शब्द, बस शब्द

Machine Translated by Google

प्रेम जवाब है

यही है ना?

'मैं जो कुछ भी हूं, वह सब बाहर से आ रहा है' का एहसास

यह विनम्रता नहीं है

'मैं विनम्र हूं' या 'मैं विनम्र हो गया हूं'

यह विनम्र है क्योंकि इसमें कोई 'मैं' नहीं है

या 'मैं' ने यह महसूस कर लिया है कि यह पूरी तरह से दुनिया के साथ संबंधों से निकला है

जाने देना एक बार की प्रक्रिया नहीं है क्योंकि बाहर से संग्रह करना

मानवीय स्वभाव है, इसलिए संग्रह के साथ जाने देना भी होता रहता है

यह गति वास्तव में जीवन है और इसका बार-बार एहसास

होता है अब यह पूर्णतः विचार की गति है

आइये एक अलग तरीका आजमाएं

'ईश्वर' ईश्वर है क्योंकि उसे 'ईश्वर नहीं' द्वारा स्वीकार किया जाता है

अवधारणाओं में मूल्य मुद्रा, ब्रांड, हीरे आदि जैसी अवधारणाओं के उपयोगकर्ता द्वारा स्वीकृति से प्राप्त होता है।

Machine Translated by Google

अगर हम ये समझ लें तो क्या स्वीकार करने वाला उतना ही शक्तिशाली नहीं है
मेरी कहानी नहीं रहेगी
अगर कोई स्वीकार न करे कहानी रिश्तों में प्रकट होती है

क्या है एक,

वास्तव में दूसरों द्वारा स्वीकार किया गया प्रेम ही

Machine Translated by Google

हम सभी अपनी-अपनी कहानियों, अपने-अपने अतीत के बोझ तले दबे हुए हैं

यदि आप यात्रा पर सोने की ईंटें ले जा रहे हैं तो इससे
कोई फर्क नहीं पड़ता कि यह सोना है या नहीं,
फर्क तो उसके वजन पर पड़ता है।

उसी तरह एक कहानी का वजन तो वजन ही होता है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह अरबपति की कहानी है या गरीब की, अगर उसका नाम भारतीय, अमेरिकी, चीनी है.... अगर वह विजेता की कहानी है या हारने वाले की

जो कोई भी इसे पढ़ रहा है, क्या आप सीमाओं
और सीमित संभावनाओं को महसूस नहीं करते हैं, मिट्टी को
निश्चित पैटर्न में ढाला जा रहा है?

भले ही हम रचनात्मक बहाने या कारण खोज लें

अपना वजन कम करते समय हम कभी न कभी
सीमाओं को महसूस करते हैं

यह बात मन द्वारा निर्मित कल्पनाशील परिदृश्यों में खो जाती है - जीवित रहने के लिए वजन की आवश्यकता है - इसके अलावा और क्या विकल्प है
- क्या वास्तव में वजन से छुटकारा पाना संभव है?

Machine Translated by Google

- वजन कम करने की कोशिश करने से बेहतर है कि इसे अधिक कुशलता से प्रबंधित किया जाए

- मुझे अपना वजन पसंद है, भले ही यह मुझे मार डाले

यह कभी समाप्त नहीं होता

इसका सामना करना ही इसका एकमात्र अंत है
क्या हो सकता है या क्या नहीं

इसका उत्तर देने का एकमात्र तरीका यह है कि इसे करें और पता लगाएं

अपने आप से सवाल के बारे में ईमानदारी जीवन का ईंधन होगी

मैं संदेह और प्रश्न अपने पास रखता हूँ
लगातार जानने और विश्वास करने के बीच के अंतर को समझना

कहानी जीने का यही एकमात्र ईमानदार तरीका है

Machine Translated by Google

जो बाहर जाता है, वह अंदर भी आता है
दूसरों के प्रति जो घृणा, निर्णय होता है
यह स्वयं के लिए भी मौजूद होगा

वास्तव में वहां कोई आदान-प्रदान नहीं हो रहा है
यह सिर्फ आक्रामक कंपन है

जब कोई क्रोधित, घृणास्पद होता है तो क्या होता है
मानसिक कहानी के अलावा जो अलग-अलग लोगों के लिए अलग-अलग होती है
यह ऊर्जा के तीव्र उत्सर्जन के रूप में अभिव्यक्ति मात्र है

जो प्यार बाहर जाता है, वो अंदर भी आता है
तो वास्तव में आत्म-प्रेम की अवधारणा आपके बारे में नहीं है
यह इस बारे में है कि कितना प्यार दिया जाता है

किसी और से प्यार करने और खुद से प्यार करने में कोई अंतर नहीं है

यह सिर्फ प्यार है
जैसे क्रोध की कोई दिशा नहीं होती वैसे ही इसकी भी कोई दिशा नहीं होती

क्या हम यह महसूस करते हैं कि ध्वनि के उच्चारण के अलावा शब्दों का कोई अंतर्निहित प्रभाव नहीं होता है?
और अर्थ केवल स्वीकृत सीमा में ही विद्यमान रहता है

Machine Translated by Google

जो इसे सुन रहा है

यहाँ जो लिखा गया है, उसका वास्तविक अर्थ, पाठक की स्वीकार्यता की सीमा में ही विद्यमान है

क्या अब हम कह सकते हैं या हमने समझ लिया है कि प्यार का एहसास दिशात्मक नहीं होता

अगर आपके अंदर यह भावना किसी भी चीज से उत्पन्न होती है

मतलब

यह स्वयं के साथ-साथ दूसरों के लिए भी होगा

Machine Translated by Google

क्या तुम एक पल के लिए भी खुद को छोड़ दोगे

एक पल के लिए भी, किसी भी ऐसी चीज को पकड़ने की कोशिश न करें जिसके लिए प्रयास की आवश्यकता हो

चाहे आप शिक्षक हों, नेता हों, बेटा हों, बेटी हों, पुरुष हों, महिला हों, INFP हों, INTJ हों, अंतर्मुखी हों, बहिर्मुखी हों, धर्मनिरपेक्ष हों, चीनी हों, अंग्रेज हों, अमीर हों, गरीब हों, कुत्ता-प्रेमी हों, बिल्ली-प्रेमी हों, सुंदर हों, कुरूप हों, नारीवादी हों, नस्लवादी हों, विज्ञान में विश्वास करने वाले हों, धर्म में विश्वास करने वाले हों, गांव के व्यक्ति हों, शहर के व्यक्ति हों, मुख्यधारा के हों, अलग-थलग हों, जो भी हों...

आपके इस अनंत अस्तित्व से जुड़े लेबल

अनंत को नियंत्रित करने का यह प्रयास

Machine Translated by Google

प्रेम कोई विकल्प नहीं है

यह अन्य में पिघल रहा है

'मैं तुमसे प्यार करता हूँ' का मतलब यह भी हो सकता है कि 'मैं तुमसे प्यार नहीं करता' या 'मैं तुमसे नफरत करता हूँ' इसमें 'मैं'

और 'तुम' को हटा दें, यही प्यार है

प्रेम वहीं है जहाँ मैं और तू नहीं है

या मैं और तुम दोनों हो सकते हैं

जहाँ दोनों बिना किसी घर्षण के मौजूद हैं

पेड़ और प्रकाश के नृत्य की तरह साँस लेना और छोड़ना

जब यह सामंजस्य में होता है तो इसमें एक अर्थ होता है

इसमें एक आदेश

और क्रम में कोई अलगाव नहीं है

Machine Translated by Google

आओ हम कभी बैठें

जब समय की सीमाएं इतनी सख्त नहीं होतीं

जब डर कम हो, ताकि हमें खुद को छुपाना न पड़े

जब इतनी देर तक दौड़ने के बाद आराम करने का समय आता है

आओ हम अपने द्वारा इकट्ठा किया गया भारी कवच उतार दें

एक दिन युद्ध लड़ने के बाद टूटे, घायल, थके हुए आदमी की तरह

एक महिला की तरह जो दिन भर दूसरों की देखभाल करने के बाद थक जाती है

पूरे दिन आपने अज्ञात शत्रुओं को हराया है

कहानी को जारी रखने का संघर्ष

## इसे लगातार दूसरों द्वारा सत्यापित करना

## आइये हम इस पर विचार करें कि आप वास्तव में क्या हैं और मैं वास्तव में क्या हूँ

यह बायोडाटा नहीं है, यह दिखावट नहीं है, यह वह डेटा नहीं है जिसे आप और मैं जानते हैं

बिना अपनी सीमा हटाए हम कैसे जानेंगे कि कोई दूसरा व्यक्ति सीमा पर कब्जा कर रहा है?

Machine Translated by Google

हम आपके जख्मों को कैसे समझ पाएंगे अगर हम उन्हें चमकदार
आवरणों के नीचे दबाए रखेंगे
देखें कि वे वास्तव में क्या हैं

आओ हम सब लोग साथ बैठें
पृथ्वी, सूर्य, बादल, तारे, पेड़, पक्षी ..... और मनुष्य

आओ हम सब बिना किसी सीमा के एक साथ नंगे बैठें

Machine Translated by Google

जब कोई दूसरे के साथ जीवन का खेल खेलता है तो एक
मध्य मार्ग होता है, मध्य मार्ग
होता है ओवरलैप, खुलेपन का स्थान, कोई संघर्ष नहीं

जहाँ इशारे से बातें समझ में आती हैं, यह वही जगह है जहाँ
अलाव के इर्द-गिर्द संगीत से ज़्यादा हँसी की आवाज़
आती है

जहाँ मैं होना सहज है, जहाँ मौन कुछ खोखला
नहीं लगता, जहाँ 'मैं' खुद पर और दूसरों पर कुछ थोपा नहीं जाता।

यही वह स्थान है जहाँ हमें वास्तव में बातचीत
करने की आवश्यकता है

भाषा सिर्फ व्याकरण से नहीं सीखी जाती, अर्थ कहानियों में छिपा
होता है

Machine Translated by Google

मन और शरीर एक साथ मिलकर यह
किसी भी तरह से हो सकता है - प्रेम, दया,
क्रोध, घृणा, मौन,
आंदोलन
यह कोई भी रास्ता है जो अपने गंतव्य तक पहुँच गया है, कोई भी रास्ता जो
अपने अंत तक चला है, किसी एक के अंत तक
पहुँचना हर चीज के अंत तक पहुँचना है

हम सभी ने इसका अनुभव किया है
फिर भी यह यहाँ नहीं है क्योंकि हमने इसे स्वीकार नहीं किया है

यह बकवास है, यह अंतर्ज्ञान है

बिना बिन्दु की दिशा

Machine Translated by Google

विचार पेड़ की तरह बढ़ता है इसे बढ़ने
मत दो

लेकिन विचार का स्वभाव है बढ़ना, अब व्यक्ति स्वयं
से ही लड़ रहा है

एक पेड़, पेड़ न बनने की कोशिश कर रहा है सूरज,
सूरज न बनने की कोशिश कर रहा है

जो जलता है वो सिर्फ़ जल सकता है जो
बहता है वो सिर्फ़ बह सकता है

मन का यह आंतरिक संघर्ष कि आप अपने एक हिस्से को स्वीकार न करें या आप
खुद को वैसे ही स्वीकार न करें जैसे आप हैं

यह मनुष्य का प्रयास है कि वह चीजों को केवल वही
स्वीकार करने के लिए मजबूर करे जो वह समझता है

समस्या यह नहीं है कि विचार बढ़ता है

समस्या यह है कि इसे कैसे विकसित किया जाए, इसे कहाँ विकसित किया
जाए, इस पर नियंत्रण किया जाए

Machine Translated by Google

अंततः

पूर्ण अंत

बस एक ही सवाल होगा कि जीवन क्या है, मन क्या है यह
नहीं, बल्कि यह कि ये सारे सवाल कौन पूछ रहा है

मैं कौन हूँ?

ये क्या है मैं सवालों से भरा हुआ हूँ

वह अंतिम या सबसे गहरा बिंदु है जहां तर्क पहुंच सकता है

मैं खुद से सवाल करता हूँ, मन खुद से सवाल करता है

Machine Translated by Google

यह वह क्षेत्र है जहाँ शब्दों को अत्यंत सावधानी से लिखना पड़ता है

## इससे आगे वह जगह है जहाँ व्यक्ति अकेला है

मैं कौन हूँ?

क्या कोई और मुझे यह बता सकता है?

मैं कौन हूँ इसका उत्तर केवल वही दे सकता है जो इस पर प्रश्न कर रहा है, इस प्रश्न की पूर्ण समझ ही इसका उत्तर है।

उत्तर

मैं की इस अवधारणा में अकेलेपन का अहसास, सीमाओं का अहसास

## यह अहसास कि विचार उस तक नहीं पहुंच सकते यह अहसास कि मन द्वारा किया गया कोई भी कार्य मदद नहीं कर रहा है

जब निरर्थक, पूर्ण निरर्थक का बोध होता है

वहाँ कोई पकड़ या दबाव नहीं है, कोई लगाव नहीं है

यही मृत्यु का क्षण है

यही जीवन का क्षण है

यह पूर्ण मौन है

और यह सभी ध्वनियाँ हैं जो अस्तित्व में हो सकती हैं

Machine Translated by Google

यह अपने आप में जीवन है

अब कोई तरीका नहीं है, कोई सीढ़ी नहीं है, पूर्णतः वर्तमान में रहना है, मन
की मूर्खता या कहें बचकानापन का एहसास होना है

अब हम लड़ते नहीं अगर एक चाहता
है तो दूसरा मान जाता है अगर एक सही जाता है तो दूसरा
भी सही जाता है अब कोई संघर्ष नहीं है कोई दो नहीं है यह एक है

यह हर चीज के प्रति जागरूकता है, जैसे बारिश, नदी, बर्फ, समुद्र...

क्या यह सब पानी नहीं है

Machine Translated by Google

बारिश की बूंदों की आवाज़ वास्तव में
बारिश की आवाज़ नहीं है, यह बरसती सतह
और बारिश का नृत्य है

दो लोग अनंत तरीकों से नृत्य कर सकते हैं

कुछ ऐसा जो अनंत रूपों में अभिव्यक्त हो रहा है और वे रूप एक साथ नृत्य करते
हुए जो कुछ है उसे 'है' बनाते हैं
'आईएस' बिना रूपों के अस्तित्व में नहीं रह सकता, और 'फॉर्म' बिना 'आईएस' के अस्तित्व में नहीं रह सकता

इसी तरह सब कुछ एक साथ चलता रहता है, दिन रात में बदल जाता
है या रात दिन में बदल जाती है, इस परिवर्तन
में दिन और रात मौजूद होते हैं

क्या इसे इस तरह देखा जा सकता है
'दिन और रात के दो रूपों में विद्यमान कोई चीज़'
हाँ हम कर सकते हैं
और यह कुछ आप हैं

आप जिनमें दिन-रात प्रकट होते हैं, आप जो पूरे ब्रह्मांड को अपने अंदर
रखते हैं

प्रश्न बाहर का नहीं, भीतर का है। ब्रह्माण्ड को समझने का अर्थ है
स्वयं को समझना।

Machine Translated by Google

आप सभी सम्पूर्ण मानवता हैं क्योंकि किसी न किसी रूप में आपमें समानता है, यह समानता 'मैं' के इर्द-गिर्द केन्द्रित
होकर बाहर तक फैली हुई है।

मैं वह है जो उसने एकत्रित किया है

जो कुछ एकत्र किया जा रहा है, उसमें वास्तव में कोई विकल्प नहीं है, उसे विकल्प बनाने का प्रयास कष्टकारी है

यह निरंतर है, फिर भी मैं जो सबसे अच्छा कर सकता हूं वह पिक्सेल है यह अनंत है,
फिर भी मैं जो सबसे अच्छा कर सकता हूं वह संख्याएं हैं

Machine Translated by Google

'कर्म' की सीमाएं

इसे अच्छा और बुरा बनाना, इसे सफल और
असफल बनाना, इसे उपयोगी और बेकार बनाना

सारे भार उस एक कर्म पर लटके हुए हैं, धर्म भार नहीं है, यह तो कर्म का प्रवाह
है जब भार हट जाता है

यह कोई निश्चित मार्ग नहीं है, यह किसी
एक के लिए पृथक रूप से परिभाषित नहीं है

यहाँ क्रिया केवल भौतिक नहीं है, इसमें मूर्त और अमूर्त सभी
चीजें शामिल हैं

Machine Translated by Google

मन बचकाना है

मन जिद्दी है

मन मूडी है मन बंदर है

यह सुनता नहीं

यह बात नहीं करता

जब यह चलता है तो यह चलता है

और जब रुकती है तब रुकती है

इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है

इसे प्यार की जरूरत है

## इसे स्वीकार किया जाना चाहिए

अब यह वही है जो यह है

विकल्प स्पष्ट है

इससे लड़ते रहो या इसे जीतने दो, इसे जो करना है करने दो

बिना निर्णय के

Machine Translated by Google

केवल प्रेम ही वहां पहुंच सकता है जहां कुछ भी नहीं पहुंच सकता

केवल प्रेम ही आपकी रक्षा को छू सकता है, जिसे
केवल अंदर से ही समाप्त किया जा सकता है।
बाहर से किसी भी बलपूर्वक प्रयास से सुरक्षा में वृद्धि ही होगी, कमी नहीं होगी।

क्या आप इन शब्दों को अंदर आने देंगे
या फिर आप इसे कागज़ पर स्याही की तरह ही समझेंगे

हम वस्तुतः शब्दों की बात नहीं कर रहे हैं, यहाँ सभी शब्द, चाहे सचेत रूप
से या अनजाने में, किसी न किसी दिशा की ओर संकेत कर रहे हैं

शब्द खुले हैं, आप दिशा तय करें
प्रेम थोपता नहीं
प्रेम केवल स्वीकृति में ही विद्यमान है

किसी ने लिखा और कोई पढ़ रहा है
अगर शब्द बिना किसी घर्षण के निकले
और उन्हें बिना किसी टकराव के स्वीकार कर लिया जाता है
तो ये रिश्ता प्यार है

हालाँकि हमें प्यार करने की आदत नहीं है
हम किसी व्यक्ति द्वारा अधिकार के माध्यम से अपने दृष्टिकोण को थोपने के आदी हो चुके हैं

हमें यह बताया जाता है कि हम कौन हैं और हमें क्या होना चाहिए

इसलिए प्यार भी हमें परेशान करता है

Machine Translated by Google

वह नफरत बेहतर है जो पूर्वानुमान योग्य है, बजाय उस प्यार के जो संवेदनशील है

यदि आप बाहर से अपने लिए उत्तर की अपेक्षा से पढ़ रहे हैं

तो फिर मेरा प्यार
यह नहीं किया जा सकता
मेरा रास्ता तुम्हारा रास्ता नहीं हो सकता

एक सेब केवल एक सेब होना जानता है
आम को खुद ही समझना होगा कि आम होना क्या है

Machine Translated by Google

सोच में गहरा अकेलापन है, तर्क के तीखे तार गहरे काटते हैं

दीवारें जो बहती है उसके और करीब आती जाती
हैं

## जिसकी सीमाएँ हैं, वह परिभाषा के अनुसार अकेला है, उसकी परिभाषा, उसका अस्तित्व अलगाव, पृथक्करण में निहित है

लोग लोगों के साथ ताश का खेल खेलते हैं, लेकिन यह ऐसा खेल
नहीं है जिसमें हर कोई 'विजेता' बनना चाहता हो।

यह एक दौड़ है, यह एक तुलना है, यह मैं बनाम वह है, यह खुद को ऊपर रखना और दूसरों को नीचे रखना है

यहीं पर सीमा निर्धारित होती है। सीमा केवल दीवारों, कमरों, अपार्टमेंट,
इमारतों, समाज, शहर, राज्य, देश, ग्रह, आकाशगंगा की भौतिक सीमा नहीं होती... यह मानसिक सीमा भी होती है।

मैं क्या हो सकता हूँ और क्या नहीं हो सकता

ये मानसिक सीमाएं हम अपने साथ लेकर चलते हैं इसलिए हम जीवन के बीच में भी अकेलापन महसूस करते हैं

क्या सीमा अंदर से या बाहर से परिभाषित की गई है?

Machine Translated by Google

यह एक सतत संतुलन है

मुझे डर लगता है और यह अपनी सीमा कम कर देता है
और दुनिया तुरन्त खुली हुई जगह पर कब्ज़ा कर लेती है

मैं प्यार करता हूँ और यह फैलता है
और दुनिया इसके लिए जगह बनाती है

पिंजरा तो पिंजरा ही है, चाहे वह कितना भी बड़ा हो, कितना भी भव्य हो, और कोई भी पिंजरा अंततः आपको अकेला कर देगा।

Machine Translated by Google

जब आप अनंत को पकड़ने की कोशिश करते हैं
क्या हो सकता है
या तो तुम भस्म हो जाओगे
या फिर तुम्हें मुक्त कर दिया जाएगा

यह आप पर हंसने और आपके साथ हंसने के बीच का अंतर है

जब कोई हंसता है, तो कोई मैं नहीं होता, वह अब अनंत हो गया है

स्वयं की सीमाएं हमारे द्वारा अलग-थलग करने, अलग करने, हमारे लिए समझना आसान बनाने के प्रयास हैं

जब हम समझते हैं या हमें लगता है कि हम समझ गए हैं, तो हम समझी गई बात पर श्रेष्ठता का भाव महसूस करते हैं

यह स्वामित्व है, जहां कोई चीज मालिक है और कोई चीज स्वामित्व में है

लेकिन अनंत का स्वामित्व नहीं हो सकता
बादलों का मालिक कौन हो सकता है
क्या अंतरिक्ष का मालिक हो सकता है
फिर भी हम अपने मन में खेलते रहते हैं
'यह मेरा है' और 'यह तुम्हारा है', 'मेरा प्यार', 'मेरा घर', 'मेरी संपत्ति', 'मेरा संगीत', 'मेरे विचार' का यह खेल...

Machine Translated by Google

यह एक मकड़ी है जो अपने ही जाल में फंस गई है,
इसने देखा कि यह जाल बना सकती है और जीवित रहने के लिए
भोजन प्राप्त कर सकती है और लालच के पागलपन में, अपनी क्षमता के
अहंकार में, इसने हर जगह जाल बना दिया

और जल्द ही किसी और चीज़ के लिए कोई जगह नहीं बची

बस एक मकड़ी अपने ही जाल में फंस गई

Machine Translated by Google

ध्वनि का नृत्य

प्रकाश का नृत्य अंतरिक्ष
का नृत्य

.....

और यह सब संयुक्त

यह देखने वाले का नृत्य है यह चेतना का नृत्य है

जो चेतन है वही 'है'

वह संसार है और वह संसार को देख रहा है

Machine Translated by Google

क्या हो सकता है?

इसकी सीमाओं का एहसास कैसे किया जाए?

यदि आप मेरे साथ सोचते हैं तो क्या यही
सीमाओं को समझने की पूरी खोज नहीं है

अन्वेषण

पानी की एक बूंद की खोज समुद्र, बादल, बर्फ, हिम, नदी, झील और इन सभी में प्रकट होती है

और अगर आप हमें और गहराई में जाने की इजाजत दें तो पानी की
बूंद भी किसी चीज की खोज है, यह कुछ जिसकी खोज ही सब कुछ है, जीवन है

Machine Translated by Google

मैं दूसरों द्वारा दिए गए निर्देश को स्वीकार करता हूँ

बिना किसी संदेह के स्वीकृति

यदि जकड़न है, तो बाहर निकलने का निर्देश है

यदि शून्यता है, तो दिशा विस्तार की है

यदि आवाज बहुत अधिक हो तो चुप रहने और ध्यान से सुनने का निर्देश दिया गया है।

अब ये सभी रोमांटिक शब्द हैं

यह एक पतली रेखा है जिस पर हमें कार्यान्वयन में चलना है

इसके लिए जबरदस्त संवेदनशीलता की आवश्यकता होती है और फिर अंतर्ज्ञान का पालन करने से डरना नहीं चाहिए

लेकिन अगर यह सब सोच-विचार से, तर्क से किया जाए

तो यह सिर्फ नकल है

Machine Translated by Google

प्राकृतिक कंपन वह कंपन है जिसे बनाए रखने के लिए किसी प्रयास की
आवश्यकता नहीं होती
बनने का कंपन होने के कंपन के ऊपर है

यह प्राकृतिक नहीं है और इसके लिए निरंतर ऊर्जा की आवश्यकता होती है
भले ही ऊर्जा कोई मुद्दा न हो
मन और शरीर थक जाते हैं

लेकिन हम इसे आराम नहीं दे सकते क्योंकि यह एक दौड़ है
इसलिए हम हर आखिरी बूंद को तब तक
निचोड़ते हैं जब तक बुखार या अवसाद का प्रकोप न हो जाए
ये दोनों संतुलन के प्राकृतिक तरीके हैं
लेकिन हमारे पास इसे स्वाभाविक रूप से रीसेट करने का समय भी नहीं है

और हम नाचते रहते हैं, थके हुए, बिना किसी भाव के, चाय, कॉफी, गांजा, सिगरेट,
शराब, गोलियों के बीच...

जैसे कोई अपनी ही अंत्येष्टि में नाच रहा हो

Machine Translated by Google

प्रेम 'संदेह' है

जिस क्षण कोई व्यक्ति निश्चित हो जाता है

सीमा अलगाव पैदा करती है
यह अलगाव पैदा करता है

एक अवधारणा के रूप में पहचान अलगाव पर निर्भर करती है

और यह अलगाव, सीमा, अलगाव संघर्ष पैदा करता है

लेकिन संदेह से उत्पाद नहीं बिकेंगे

इससे अनुयायी, प्रशंसक, विश्वासी, समर्थक नहीं बनेंगे

अपने चारों ओर देखें, अंदर और बाहर चिंतन करें

क्या आप उस आदमी की बात सुनेंगे जो कह रहा है 'मैं जानता हूँ' या उस आदमी की बात सुनेंगे जो कह रहा है 'मैं जानता हूँ कि यह नहीं जाना जा सकता'

आत्मविश्वास को ईमानदारी या विनम्रता से अधिक महत्व दिया जाता है

परिणामों को तरीकों से अधिक महत्व दिया जाता है

शक्ति का मूल्य दयालुता से अधिक है
नियंत्रण को स्वतंत्रता से अधिक महत्व दिया जाता है

हमारे पास कुछ भी न होने की अपेक्षा बुद्ध की एक मूर्ति/फोटो होना अधिक बेहतर है

जब 'कुछ' का मूल्य 'कुछ नहीं' से अधिक हो

फिर प्यार गायब होने लगता है

जब कोई बचाव करना शुरू करता है, तो कोई भी खोजकर्ता हमलावर की तरह दिखेगा

Machine Translated by Google

निश्चितता का सुख सुखद तो होता है, लेकिन इसकी लत लग जाती है और धीरे-
धीरे यह पिंजरा बन जाता है
संदेह ही पिंजरे को खुला रखने वाला एकमात्र द्वार है

किसी भी उद्घाटन का मतलब है कि इसे परिवर्तित किया जा सकता है
निश्चितता का सुख और परिवर्तन का भय व्यक्ति को पंगु बना देता है
यह जितना अधिक कठोर होता जाता है, उतना ही कम लचीला होता जाता है।
अनुरूप

कठोरता मृत्यु की ओर बढ़ना है और लचीलापन जीवन है
क्या यही कारण नहीं है कि मूर्खतापूर्ण चीजों में अधिक जीवन होता है
विपरीत दिशा की अपेक्षा रेखाओं के बाहर जाना अधिक मजेदार है

जीवन दयालुता में निहित है
खुले होने में
सब्र करते हुए
एक घोंघे की तरह हर पल, हर सेकंड को पूरी तरह से जीने वाला,
जो अपने साथ मौत को भी ले जाता है

जीवन यहीं है
इस पृष्ठ पर स्याही को जबरन फैलाए जाने के इस क्षण में
और जिस क्षण यह पाठक के मन में दर्ज हो गया
मुझसे तुम तक की यह गति ही जीवन है
यह सिर्फ मुझमें और सिर्फ आप में मौजूद नहीं है

Machine Translated by Google

विचारों में मौन रहना आनंद है
यह शांति है
शांति पूर्ण निष्क्रियता नहीं है
शांति का अर्थ है सद्भावना
यह प्रयासों की शांति है
आपके आस-पास प्राकृतिक प्रवाह में रहना

अंतरिक्ष अंतहीन है, फिर भी मन इसकी सीमाएं निर्धारित करने का प्रयास करता है
अंतरिक्ष पर
और यह पूरी खोज समय में दर्ज है

क्या पहाड़ वहाँ नहीं है अगर वह बादलों से ढका हुआ है
वर्तमान में जो है उसके लिए - यह नहीं है
फिर भी जिसने इसे स्मृति में दर्ज कर लिया है वह कहेगा - यह वहाँ है, मैं इसे जानता हूँ

फिर कोई व्यक्ति विवाद को सुलझाने की कोशिश करता है और वे सभी उस ओर बढ़ जाते हैं

तीनों पहाड़ पर पहुँचते हैं
जो वर्तमान में है वह कहेगा - यह भूतकाल में नहीं था, यह वर्तमान में है

क्या वर्तमान पर कोई विवाद है?
विवाद हमेशा इस बात पर होता है कि क्या था
यह रिकॉर्ड की गई स्मृति है

समय चलता है, समय की अवधारणा

Machine Translated by Google

केवल अतीत की स्मृति को सत्यापित करने के लिए वास्तविक समय
वर्तमान के साथ चलता है

एक चिड़िया गाती है
किसी को सुनाई देती है

गीत तभी अस्तित्व में आता है जब कोई उसे सुनता है, अनुभव की जागरूकता ही
अनुभव है, कोई स्थान-समय नहीं है, केवल वर्तमान है।

Machine Translated by Google

जैसा कि मैं यह लिख रहा हूँ, इसमें लगातार कुछ न कुछ चल रहा है

मैं चाहता हूं कि आप इसे पढ़ें, लेकिन मैं शब्दों की सीमाओं को भी समझता हूं

अहंकार का विचार महल इतनी तेजी से बनता है
देखिए, वहां पहले से ही एक पाठक की धारणा है
पहले से ही शब्दों के महत्व की धारणा और सहसंबंध के माध्यम से 'मैं'

भविष्य में एक प्रक्षेपण निर्मित होता है और वह प्रक्षेपण अभी जैसे शब्दों को प्रभावित करना शुरू कर देता है

आपको पता है.....।
प्रवाह यह है
जहाँ भी ले जाओ वहाँ जाओ
जो भी लिखा जा रहा है उसे लिखना

हम 'मन पर नियंत्रण' चाहते हैं, लेकिन इसका उत्तर इसमें निहित है
'मन के साथ रहना'

Machine Translated by Google

बादल पहाड़ के साथ लुका-छिपी खेल रहे हैं

हर पल नया है और हर पल खूबसूरत है
पहाड़ और पहाड़ियों के बीच पेड़ जीवंत हो उठे हैं

बादलों

पक्षी नदी के साथ गा रहे हैं

यदि हम मानव निर्मित यंत्रों को हटा दें, तो सब कुछ सहज, सौम्य, प्रेमपूर्ण हो जाएगा

पेड़ चेरी से भरे हुए हैं

हर चीज़ अपने आप में इतनी खूबसूरत है

गुलाब - नाजुक, उज्ज्वल, गहरी खुशबू

एक सेब का पेड़ - छोटा किन्तु मजबूत, कुशल

कौवे - अंधेरा, छिपना, गहरी आवाज

...ये सब मन की रूमानियत है लेकिन अंदर ही अंदर

यह अहसास होता है कि यही है, स्वर्ग और नर्क दोनों

Machine Translated by Google

एक कहानी एक यात्रा पर जाने का विचार है
विचारों से खेल, भावनाओं से खेल
यह स्वयं के अंदर एक अन्वेषण है
जो वास्तव में नया है उसकी खोज नहीं
लेकिन जो नया सा लगता है

कोई व्यक्ति अपनी कहानी को किस प्रकार से प्रस्तुत कर सकता है, इसके तरीकों की खोज करता है
या समानताओं को देखकर मान्यता का आराम महसूस करना

पूरी कहानी यही है कि कैसे एक व्यक्ति के अपने हिस्से जुड़े हुए हैं
यह एक बदलती स्क्रीन पर स्वयं का प्रतिबिंब है

यह पूरी किताब एक कहानी है और यह दुनिया के साथ मेरे अपने रिश्तों का प्रतिबिंब है

और आप जो समझ रहे हैं वह दुनिया के साथ आपके रिश्तों के आधार पर इन शब्दों का प्रतिबिंब है

Machine Translated by Google

किसी के कुछ कहने मात्र से ही हमारे अंदर भय उत्पन्न हो जाता है

पहली प्रतिक्रिया यह है कि इसका मूल्यांकन किया जाए
यह मेरे पक्ष में है या विपक्ष में

जब डर इतना गहरा हो जाए
कि जीने से भी डर लगता है

यह कोई निर्णय नहीं है
इसका मतलब यह नहीं है कि आप खुद को कुछ IQ मानकों या कुछ आध्यात्मिक
मील के पत्थरों से मापें
यह एक यात्रा है, एक वार्तालाप है जो हम कर रहे हैं
यह कोई पूर्ण कथन नहीं है जिसे हम स्वीकार नहीं कर सकते
का हिस्सा
आप जो भी हैं, जो भी आपको आगे बढ़ाता है
ये शब्द यही हैं

Machine Translated by Google

गुलाब पर पानी की बूंदें सूरज की तरह चमकती हैं सेब के पेड़ एक हल्का दृश्य
संगीत बजा रहे हैं सूरज सेब के साथ खेलता है और इस नाटक की छाया पृथ्वी के साथ
खेलती है

यह अंतहीन है

सब कुछ अपने-अपने तरीके से नाच रहा है

और फिर आता है मानव, जो परिभाषित करता है कि नृत्य क्या है और क्या नहीं

संगीत क्या है और क्या नहीं है, यह परिभाषित करना, अंक देना, निर्णय करना,
निरंतर मूल्यांकन करना

पैसा एक ऐसा पैरामीटर है, प्रसिद्धि, शक्ति, एक दूसरे के
खिलाफ मापने के तरीके हैं

Machine Translated by Google

जो भी चीज हमें पूर्णता की हमारी परिभाषा से भटकाती है, 'हम उसे बीमारी कहते हैं'

मन को ऐसे ही काम करना चाहिए और कोई भी विचलन मानसिक रोग होगा

भौतिक शरीर ऐसा ही होना चाहिए और इससे कोई भी विचलन शारीरिक बीमारी होगी

अगर ध्यान से देखा जाए तो जीवन मृत्यु से ही आता है
जिसे हम बीमारी कह रहे हैं वह वास्तव में जीवन की घटना है
प्रत्येक जीव अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहा है

हम किसी और के लिए वायरस हैं, जैसे कोरोना हमारे लिए वायरस है

इसलिए हमें जीवन का खेल अवश्य खेलना चाहिए

लेकिन इस समझ के साथ कि चाहे हम अपने अस्तित्व के लिए हत्या करें

या कोई चीज़ अपने अस्तित्व के लिए हमें मार देती है
कोई सही और ग़लत नहीं है

यह तो बस जीवन घटित हो रहा है....

Machine Translated by Google

भय सचेतन गति को रोकता है, यह तात्कालिकता है, इसलिए व्यक्ति परिदृश्यों
के बारे में सोचने पर निर्भर होना बंद कर देता है

और अतीत की प्रतिक्रियात्मक स्मृति पर अधिक निर्भर करता है

सब कुछ सहज बनने की कोशिश करता है, जो सोच से दबा है वह प्रतिक्रिया के रूप
में सामने आएगा

प्रतिक्रियाओं में बुद्धिमत्ता नहीं होती, यह सिर्फ अतीत का संग्रहीत डेटा
है, यह दिशात्मक नहीं है, इसलिए यह चयनात्मक नहीं है

जीवन की व्यक्तिपरक प्रकृति समाप्त हो जाएगी

एक घुमावदार तरीके से डर हमें सच्चाई दिखाता है बस उस समय उसे देखने वाला कोई नहीं होता

डर असलियत दिखाता है लेकिन डर के कारण ही आंखें बंद होती हैं

Machine Translated by Google

अरे

तुम कैसे कर रहे हो?

हाँ, आप जो पढ़ रहे हैं

आप कैसे हैं?

आइये इस बातचीत को विराम दें और अपने आस-पास और अपने अंदर का अवलोकन करें

.

.

.

.

.

.

.

धीमे हो जाइए और अपने चारों ओर देखिए, कमरे, बालकनी, लिविंग रूम का हर छोटा-सा विवरण देखिए... हर आवाज़ को सुनिए, हो सकता है आप सूक्ष्म आवाज़ों को न सुन पाएं, मन को शांत होने दीजिए।

आपको हाथ, पैर, पेट, सिर कैसा लग रहा है? आइए हम एक दूसरे के साथ मौन होकर बैठें और वर्तमान में रहें।

.

.

Machine Translated by Google

.
.
.
.
.
.
.
.
.
.

क्या आपने इन्हें सिर्फ बिंदुओं के रूप में देखा या आपने धीरे-धीरे प्रत्येक को देखा

## दूसरे का अनुसरण करना

.
.
.
.
.
.

## इस सारे शोर के पीछे एक गहरी खामोशी है

.
.
.
.
.

Machine Translated by Google

.

आइये हम अंदर और बाहर दोनों
का निरीक्षण करें

आइये इस पल को इसकी गहराई में जियें

क्या तुम सूरज की रोशनी महसूस करते
हो? या चिड़िया की आवाज़

या रात के कीड़ों की आवाज़

क्या आप अपने दिल की धड़कन पर पड़ने वाले
भारी दबाव को महसूस करते हैं और जीवन की चंचल प्रकृति
का एहसास करते हैं?

.

.

.

.

.

लेट जाओ और आराम करो

आपके चारों ओर एक कम्बल की तरह हवा है, अपने चारों ओर की
दीवारों को हटा दीजिए और पूरा स्थान आपका है, आपके
अंदर एक ऊर्जा नृत्य कर रही है।

.

.

.

आइये हम बस निरीक्षण करें

Machine Translated by Google

आपने क्या पकड़ा हुआ है? आइये हम सब मिलकर
बताएं

हम धीरे-धीरे सरल चीजों से शुरुआत कर सकते हैं, एक के बाद एक
कदम

आओ इस मौन को सौन्दर्य से भर दें, हृदय की सुन्दरता से, अन्दर से
प्रकाश को खोल दें, मुक्त कर दें

इन पलों में कुछ तो है जो दिल को छू जाता है

डर पर काबू पा लिया गया
और प्यार की गर्माहट महसूस होती है

Machine Translated by Google

आज नहीं हो सकता

शायद कल

धैर्य.....

आइये देखें कि यह कैसे सामने आता है

क्या है, यही असली खजाना है

शांत रहो

साँस लेना

Machine Translated by Google

चेतना की शांत घाटी में तनाव छिपा है

घर्षण

ऊर्जा की अधिकता

नदी के प्रवाह को रोककर

अनंत को परिमित में बदलने का व्यर्थ प्रयास

केवल अंदरूनी बातें ही जानी जा सकती
हैं, यह केवल अपने आप को ही
जान सकता है और यह अपने द्वारा बनाए गए खेलों में अपनी ही
रचनाओं से विचलित हो जाता है

गांठों में जीना गांठें ध्रुवों में

होती हैं कुछ ऐसा जो दोनों दिशाओं से

फैला होता है प्यार तब होता है जब कोई जाने देता है

Machine Translated by Google

स्वीकृति कठिन क्यों है?
क्योंकि इसका मतलब है प्यार और नफरत दोनों को स्वीकार करना

जाने देना कठिन क्यों है?
क्योंकि इसका मतलब है डर और इच्छाओं दोनों को छोड़ देना

मौन क्यों कठिन है?
क्योंकि इसका मतलब है मिठास और कड़वाहट, संगीत और शोर दोनों को ना कहना

संतोष पाना कठिन क्यों है?
क्योंकि इसका मतलब है सपनों और दुःस्वप्नों दोनों को छोड़ देना

यह सिर्फ एक ही तरीके से नहीं हो सकता
अतीत को छोड़ देने का मतलब है सब कुछ छोड़ देना

यह निरपेक्ष है

Machine Translated by Google

एक कहानी जन्म लेती है, कहानी
में हमेशा बाधाएं होंगी क्योंकि बाधाएं अलग, नई कहानी
को परिभाषित करती हैं।

आप अपनी कहानी में नायक हैं, आपको इसे साबित करने की
जरूरत नहीं है, भले ही दुनिया लगातार आप पर
संदेह कर रही हो

इसका उद्देश्य अहंकार बढ़ाना नहीं है, बल्कि विनम्रता के साथ
आगे बढ़ना है
हाँ, हम सत्य के साथ आगे बढ़ सकते हैं हाँ, हम दयालुता के साथ आगे
बढ़ सकते हैं

मुझे पता है कि मापने वाला दिमाग यह कहेगा कि ज्यादातर लोग ऐसे नहीं हैं, आप उस तरह
सफल नहीं होंगे, लेकिन आपने देखा होगा कि सफलता
पर्याप्त नहीं है, पैसा पर्याप्त नहीं है, शक्ति पर्याप्त नहीं है।

जब अंत आएगा तो क्या फर्क पड़ेगा
आपके चेहरे पर संतोष का भाव, आपके प्यार को अपने साथ ले जाने वाले दिलों
की संख्या, आपके होने का तरीका

अब यह स्मरण कोई जबरन स्मरण नहीं है
तानाशाहों का

Machine Translated by Google

जिनके नाम डर के कारण लिए जाते हैं
और प्रेम के कारण नहीं

आपकी दुनिया, आपके दिमाग में है आपने अपनी कहानी में
भूमिका स्वीकार कर ली है या तो भूमिका बदलने के लिए स्वीकृति की इस इच्छा
शक्ति का प्रयोग करें या भूमिका को पूरी तरह से स्वीकार करें

यह कठिन होगा
प्रेम का मार्ग कठिन है

लेकिन अंत में
जब मौत आएगी तो तुम्हारे शरीर पर निशान
रह जाएँगे
इस रूप की वास्तविक मृत्यु

दिल में शांति होगी

Machine Translated by Google

हमें भय, घृणा, क्रोध और अज्ञानता के बावजूद आगे
बढ़ते रहना चाहिए।

परिवर्तन एक से शुरू होता है आइए हम
सामान्य भागों से शुरू करें और धीरे-धीरे केंद्र की ओर बढ़ें

अभी नहीं तो कल

शायद तब भी नहीं

यह कार्रवाई है जो मायने रखती है

.
.
.
.
.
.
.
.
.

प्यार

Machine Translated by Google

Machine Translated by Google

Machine Translated by Google

# भाग 2

Machine Translated by Google

हम पुनः रिक्त स्थान से शुरू करते हैं, यह प्रश्न करने

के लिए कि क्या मान लिया गया है, क्या जानने के लिए
बाध्य किया गया है और क्या स्वाभाविक है

वह विचार जो यात्रा पर था, एक यात्रा भविष्य की धारणा और भविष्यवाणी

क्या दिनचर्या में बदल गया है

एक पूर्वानुमान एक आरामदायक
क्षेत्र

यादों और आसक्तियों का भार, जो परतें मन ने उसके ऊपर जमा कर रखी हैं, मुझे फिर

से विलीन होने दो, क्या तुम कृपया मुझे कोई नहीं रहने दोगे,

तुम्हारा मार्ग मेरा मार्ग है, मेरी

स्वतंत्रता तुम्हारे हाथों में है।

हमें वास्तव में इसे पाने के लिए जाने

देना होगा, तभी हम जान सकते

हैं कि वास्तव में क्या है, ताजा पानी से बारिश की बूंदों की आवाज सुनने के लिए हमें

रोमांटिकता को पदार्थ से अलग करने की आवश्यकता है।

हमारे बुलबुले को अनंत से अलग देखने के लिए राय/परिप्रेक्ष्य से वास्तविकता

Machine Translated by Google

मैं वास्तव में नहीं जानता कि मैं कुछ क्यों लिख रहा हूँ, हालांकि मौन में सहजता
महसूस होती है

मैं बस यह साझा करने की कोशिश कर रहा हूं कि मैं इसे कैसे
देखता हूं, यह कैसे शांतिपूर्ण, संवेदनशील है

हम दोनों एक साथ चलने की कोशिश कर रहे हैं, हम दोनों जानते हैं कि हम
एक दूसरे को कभी नहीं जान सकते
फिर भी हम संवाद करने की कोशिश कर रहे हैं
मैं तुम्हारे साथ बेवकूफ़ बनकर सबके साथ ज़िंदगी का खेल
खेलना चाहता हूँ जहाँ हम बिना किसी डर के साथ हों जहाँ खामोशी बर्दाश्त की
जा सके

यहाँ लिखने का एकमात्र तरीका यह लगता है कि मन अनुभव
तक पहुँच सकता है और उस अनुभव की एक झलक ये शब्द हैं जो हमारी सामान्य
समझ से निकले हैं

कुछ इन शब्दों के माध्यम से जीने की कोशिश कर रहा है, उसे कोशिश करने की जरूरत
नहीं है, फिर भी उसका अस्तित्व
कोशिश करने में निहित है

Machine Translated by Google

मनुष्य होने का क्या अर्थ है?

उन शब्दों में जो ज्ञात हैं और आम हैं

समझ, मनुष्य होने के नाते मनुष्य ने हर चीज़ को कैसे समझा है। यह वह समझ नहीं है जिसका हम यहाँ उल्लेख कर रहे हैं। यह समझ बनाने का तरीका है - धारणा, सोच, अभिनय, सहज ज्ञान, भावनाएँ... सबका योग।

दूसरे तरीके से देखें तो यह बुद्धि बनाने की प्रक्रिया है। लकड़ी है और लकड़ी को एक खास तरीके से सजाना टेबल है। दोनों के बीच का अंतर बुद्धि या अर्थ है। और इस बुद्धि की संभावना ही मानव अस्तित्व है।

हमारे समय के शब्दों में इसे सोचना कहते हैं। यहाँ सोचना सिर्फ़ ज़बरदस्ती थोपे गए विचार नहीं हैं। इसमें सहज ज्ञान, साँस, दिल की धड़कन, विश्वास और अतार्किकता भी शामिल है।

हम इसे और भी सरल तरीके से देख सकते हैं, कुछ चिह्नों वाले कागज़ को पैसे के रूप में परिभाषित किया जाता है। एक बच्चा इसे देखता है और वह सब कुछ देखता है - कागज़, चिह्न और वह सब जो इससे अनुभव किया जा सकता है। फिर भी कुछ कमी है। यह उस कागज़ को मूल्य का असाइनमेंट, अर्थ का असाइनमेंट है। वह अर्थ है

Machine Translated by Google

हम यहां जिस बात का उल्लेख कर रहे हैं, सटीक रूप से कहें तो इसी अर्थ की रचना।

मानवता अपने अनूठे तरीके से अर्थ, व्यवस्था, भावना पैदा करने की क्षमता है।

अब किसी भी तरह से इसका अर्थ समझने में कुछ भी श्रेष्ठ या निम्न नहीं है। वास्तव में हम सभी अपने-अपने अनूठे तरीकों से दुनिया को समझते हैं, जैसे अभी आप इन शब्दों को अपने अनूठे तरीके से समझ रहे हैं।

जीवन यह विशिष्टता भी है और साझा अतिव्यापन भी।
जहां कोई बात लेखक के आशय से समझी जाती है, लेकिन फिर भी उसमें पाठक की विशिष्टता बनी रहती है।

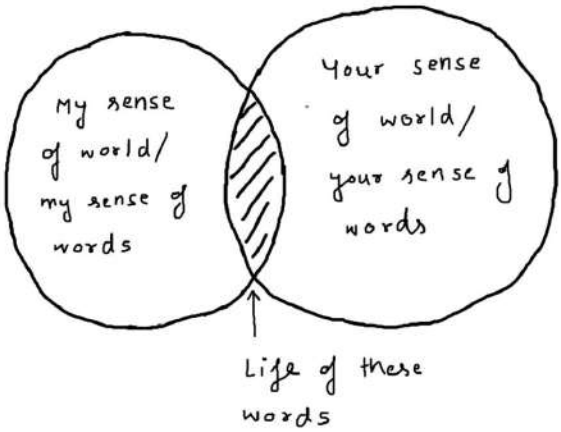

Machine Translated by Google

एक मनुष्य और दूसरे मनुष्य के बीच भी यही बात है और यह

मनुष्य और प्रकृति के बीच भी यही बात है। उदाहरण के लिए, अगर कोई अंतरिक्ष को समझने की कोशिश कर रहा है, तो हम इसे एक बिंदु से निकलने वाली अनंत सीधी रेखाओं या अनंत संकेंद्रित वृत्तों के रूप में देख सकते हैं।

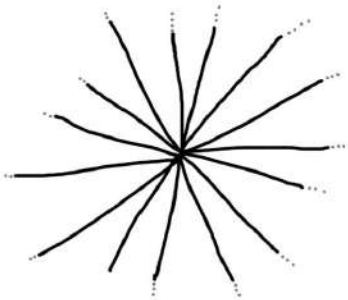


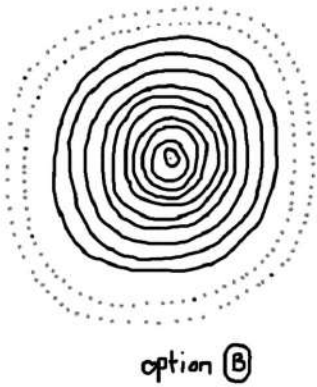


इसे समझने के अनंत तरीके हो सकते हैं, जैसे यदि हम संदर्भ केंद्र बिंदु को हटा दें तो हम इसे समानांतर रेखाओं, बिंदुओं आदि के रूप में भी देख सकते हैं।

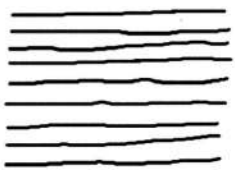


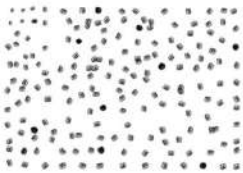

Machine Translated by Google

क्या हम साथ हैं? मैं 'क्या है' को 'कैसे कोई इसका अर्थ निकाल सकता है' से अलग करने की कोशिश कर रहा हूँ। विकल्प E वह है जो है, और A, B, C, D अर्थ निकालने के तरीके हैं।

ई को खाली या पूर्ण के रूप में देखा जा सकता है। यह शून्य या शून्य हो सकता है और यह अनंत या विलक्षणता हो सकता है। एक अर्थ में ई वही है जो है। ए, बी, सी, डी वे हैं जिन्हें आप कह सकते हैं - दृष्टिकोण, अर्थ निकालने के तरीके, बुद्धि के विभिन्न रूप।

चलिए आगे बढ़ते हैं। उसी तरह अलग-अलग इंसान इसे अलग-अलग तरीके से देख सकते हैं, फिर भी इसमें ओवरलैप है।
यह ओवरलैप किसी मौलिक चीज़ में निहित है, वह मौलिक चीज़ जो साझा की जाती है वह है मानव होने का सार। सार शब्द का अर्थ है अमूर्त। यह मानव की बुद्धि है, और इन दिनों जो शब्द सबसे ज़्यादा स्वीकार्य है, वह है मानव की चेतना।

आइये इस प्रश्न का विश्लेषण करें या इस उत्तर पर नजर डालें।
मूल प्रश्न उसी तरह से है। आइए हम शब्दों से जो कुछ भी समझ पाए हैं उसे शब्दों पर लागू करें

खुद को। तब हमें एहसास होगा कि हमने जो कुछ भी साथ मिलकर समझा है, वह दुनिया को समझने की कोशिश भी कर रहा है। यह A, B, C, D विकल्पों में से एक जैसा है।

Machine Translated by Google

यह एक दृष्टिकोण है, व्याख्या करने का एक तरीका है, E की ओर इशारा करने का एक तरीका है। यदि हम बुद्धि की परतों, जो A, B, C, D हैं, के पार देख सकें, तो E भी A, B, C, D में निहित है।

अब यह समझना कि A में E भी है, और इसे एक साथ देखना, यही मानव चेतना का पूर्ण रूप है।

Machine Translated by Google

व्यर्थ

जो समझ में न आये
इसका मतलब क्या है
इसका मतलब यह है कि इसका मतलब यह नहीं है
कौन जानता है इसका क्या मतलब है

मैं बस वही लिखने की कोशिश कर सकता हूँ जो मैं महसूस करता
हूँ, यह जानने का कोई तरीका नहीं है कि आपने शब्दों की कठोर अनुभूति को क्या समझा

यह इसलिए है क्योंकि
शब्दों का कोई मतलब नहीं होता यह एक अनुभव
का प्रतीक है
मैं अनुभव की विचित्रता और अहसास की यादृच्छिकता का वर्णन नहीं कर सकता

इसलिए मैं अपने मन में सबसे करीबी शब्द चुनता हूं

यह शब्दों की बात नहीं है
यह प्रवाह के बारे में है
व्यक्तिगत अर्थों का योग संपूर्ण अर्थ नहीं है

Machine Translated by Google

खुद में बंद रहना संघर्ष लाता है कभी-कभी व्यक्ति
बंद हो जाता है

किसी की चाहत के कारण
और कभी-कभी यह समाज का डर होता है, यह लूप में काम
करता है, कोई भी आक्रामकता,
हिंसा, घृणा, निर्णय अधिक आक्रामकता और निर्णय को जन्म देता है

मेरे पिता को केवल आक्रामकता, निर्णय मिला, इसलिए अब वह केवल यही दे सकते हैं

कोई व्यक्ति एक बच्चे के घर और उसके माता-पिता पर बम फेंकता है, उस बच्चे को कौन जवाब देगा

और हो सकता है कि बमबारी, हत्या, विनाश करने वाले को केवल घृणा, न्याय, अकेलापन मिला हो

या शायद वह अहंकार से दूर है और उसे पूरा यकीन है कि वह सही है

जब भी कोई व्यक्ति इस बात पर पूरी तरह आश्वस्त हो जाए कि उसका मार्ग ही एकमात्र मार्ग है तो संदेह के लिए कोई स्थान नहीं
रह जाता
अपनी ही दुनिया में पूरी तरह बंद रहने से सभी को बहुत दुख पहुंचा है

Machine Translated by Google

किसी व्यक्ति ने किसी विशेष पहचान के कारण लोगों को मार डाला, नष्ट कर दिया, बलात्कार किया
और वह भय, चोट, पीड़ा आगे चलकर किसी
और के साथ ऐसा करने की परिस्थितियां पैदा करती है

एक असहिष्णु समाज केवल असहिष्णुता ही पैदा कर सकता है और वह असहिष्णुता फिर से
असहिष्णु लोगों को जन्म देती है जो अगला चक्र शुरू करते हैं

Machine Translated by Google

शारीरिक और मानसिक स्पष्टता और
उनके अध्यारोपण में कोई प्रश्न नहीं है

एक के बिना दूसरे का अस्तित्व नहीं

हममें से अधिकांश लोग छोटी-छोटी भौतिक सीमाओं में रहते हैं, फिर
भी मानसिक रूप से हम बहुत कुछ झेलते हैं

मानसिक सोच वह अमूर्त सोच
है जिसके द्वारा हमने
समय को परिभाषित किया है जिसके द्वारा हमने स्वामित्व,
संबंध, नैतिकता, सीमाएं, पहचान को परिभाषित किया है

जिसे भौतिक कहा जाता है वह मानसिक के
माध्यम से देखा जाता है और जो कुछ
भी मानसिक है वह भौतिक धारणा से प्राप्त होता है

मानवीय पीड़ा मानवीय होना है

कल्पना की क्षमता आपको एक काल्पनिक
पुस्तक का आनंद लेने में मदद कर सकती है, लेकिन यह
आपको 'क्या हो सकता है' के डर से पंगु भी बना सकती है।

Machine Translated by Google

प्रश्न करने की क्षमता अन्वेषण में मदद कर सकती
है, जिससे हमने पता लगाया कि क्या खाने
योग्य है, जिससे हमने आग का पता लगाया, प्रश्न करने की वही क्षमता हमें स्वयं
से प्रश्न करने पर मजबूर कर सकती है कि 'मैं कौन हूँ'

जो कुछ भी 'अच्छा' समझा जाता है, उसका प्रयोग 'बुरा' के लिए भी किया
जा सकता है
इरादा मायने नहीं रखता

फिर भी हम एक समस्या को हल करने से खुद को रोक
नहीं पाते, हम दूसरी समस्या पैदा कर देते हैं

मुद्दा कार्रवाई या कोई कार्रवाई नहीं करने का नहीं है
यह क्रिया के साथ या बिना क्रिया के अंदर का खालीपन है

Machine Translated by Google

जैसे कोई जीवन जीता है

एक समय की इच्छा बाद में आवश्यकता बन सकती है, कोई फोटोग्राफी करना चाहता है, उपन्यास लिखना चाहता है, प्रकृति में रहना चाहता है, यात्रा करना चाहता है, जीवन का पता लगाने की इच्छा से पैदा हुई क्रिया

लेकिन धीरे-धीरे यह एक पैटर्न, एक आदत के अनुरूप होने लगता है, या तो अधिक की इच्छा से या वर्तमान मानव प्रणाली में फिट होने के लिए, इस तरह से गहरी आदतें पैदा होती हैं

वर्तमान मूल्य प्रणाली के आधार पर हम उन्हें अच्छा या बुरा कह
सकते हैं, लेकिन गहरे स्तर पर यह सिर्फ एक सीमा है, जिस क्षण
एक क्रिया किसी प्रतिक्रिया से पैदा होती है।

विकल्प खत्म हो गया है और जीवन
बोझ जैसा लगने लगेगा

इसलिए व्यक्ति को लगातार फ़िल्टर करने, रीसेट करने, फिर से इच्छाशक्ति खोजने की आवश्यकता होती है

मानव प्रणाली की सीमाएं, सीमाएँ हमेशा रहेंगी, फिर भी सीमाओं पर लगातार सवाल उठाने की आवश्यकता है ताकि वे दमघोंटू न बन जाएं

Machine Translated by Google

यह व्यक्ति की आंतरिक आवाज और बाहरी आवाज के बीच संतुलन और परस्पर क्रिया है

हर किसी को एक भूमिका निभानी होती है लेकिन उस भूमिका
को स्थिर न होने दें

गहरी साँस लें और समझें कि
क्या आवश्यक है और क्या नहीं

जो चीजें अब आवश्यक नहीं हैं उन्हें हटा दें, भार हल्का करें

जीवन का उद्देश्य और अर्थ एक बार की बात नहीं है, यह लगातार समायोजन, प्रश्न और अनुकूलन है

याद रखें कि जीवन इस बात का अन्वेषण है कि क्या हो सकता है, जो मौजूद है उसके आधार पर

Machine Translated by Google

जैसे हवा खुले वातावरण में हल्की ठंड के साथ खेलती

है, शब्द बस उड़ जाते

हैं, यह अहसास कि दुनिया सिर्फ विचारों में नहीं है

अंतरिक्ष में क्या है, एलियंस, तकनीक.....भविष्य किसे कहते हैं, इन सब के बारे में विचार

अपने और सभी पूर्वजों के अतीत के बारे में विचार

वह सब वहाँ है

फिर भी हवा सब कुछ बहा ले जाती है और जो बचता है वह है

स्वयं में सामंजस्य

Machine Translated by Google

यहाँ जो लिखा गया है वह कुछ नया नहीं है, इसे संप्रेषित और ताज़ा
किया गया है

समय के साथ बार-बार

शब्द कहे गए हैं
जिसका उस समय मतलब होगा

अब अर्थ खो गया

इसीलिए इन सब शब्दों के बावजूद भी आंतरिक शांति नहीं है

हम सोचते हैं कि शक्ति शब्दों में निहित है लेकिन
वास्तविक शक्ति उस व्यक्ति में निहित है जो अर्थ तय करता है

जब आउटपुट की अपेक्षा/पूर्वानुमान हो तो शब्द
की पुनरावृत्ति केवल ध्वनि है और कुछ नहीं

शब्द केवल वहीं पहुंच सकते हैं जहां विचार पहुंच सकता है, जहां तर्क/
तर्कसंगत पहुंच सकता है

यह मानवीय कहानी है, फिर भी पूरी कहानी
को देखने के लिए पहले इससे बाहर आना होगा

Machine Translated by Google

मैं शब्दों के साथ अच्छा नहीं हूँ, लिखने का
कोई भी तरीका केवल एक गंध है, याद रखें... ओह,
लेकिन याद रखना एक समस्या हो सकती है

किसी को कुछ भी करने की जरूरत नहीं है, इसका
मतलब है कि जो ऊपर आता है, बस वही करें

इस वर्ण संग्रह में

अपने जैसा चरित्र हो

इसमें कुछ भी नहीं है सिवाय इसके कि यह मन में

एक कहानी है और फिर भी यह सब कुछ है

किसी को किसी को कुछ साबित करने की जरूरत नहीं है, अहंकार से
नहीं बल्कि जीवन के प्रति प्रेम से

ये सभी शब्द प्रेम से लिखे गए हैं

यह सब है कि मैंने सब कुछ कैसे समझा है और शब्द वही हैं जो साझा किए जा सकते हैं

यह सब शब्दों में बिखर जाता है, हालांकि एक तरफ
यह है - किसी को कुछ भी साबित करने की जरूरत नहीं है और दूसरी तरफ -
आप जो कुछ भी हैं वह इसके कारण हैं

Machine Translated by Google

यह इस बात का एहसास है कि अभी साझा करने का एकमात्र तरीका शब्द ही हैं

लेकिन शब्दों का अर्थ तभी हो सकता है जब हम उस पर सहमत हों

शायद सारे शब्द ग़लत हैं

यह सब बेवकूफी है

आइये हम सारी रूमानियत को मिटा दें

और इन शब्दों को व्यक्तिगत बात समझिए जिसे बिना किसी अधिकार के साझा किया जा रहा है

अंदर ऐसी शांति है जो मैंने पहले कभी अनुभव नहीं की

और यही सब मैं साझा करने की कोशिश कर रहा हूं

Machine Translated by Google

ज़िंदगी

जीवन वर्तमान में घटित होता है
चाहे वह हँसी हो, डर हो, वासना हो... कोई भी विचार
यह हमेशा वर्तमान में रहता है

जब कोई साझा कर रहा है
एक अनुभव की तरह
क्या वह व्यक्ति अपने मन में अतीत के अनुभव को पुनः जीने में अधिक रुचि रखता है

या वह अनुभव वर्तमान में कुछ साझा करने का एक तरीका मात्र है

यह इस बात पर निर्भर करता है कि शब्दों की गति बाहर है या बाहर
अंदर
शेयर करते समय कितना खुला है

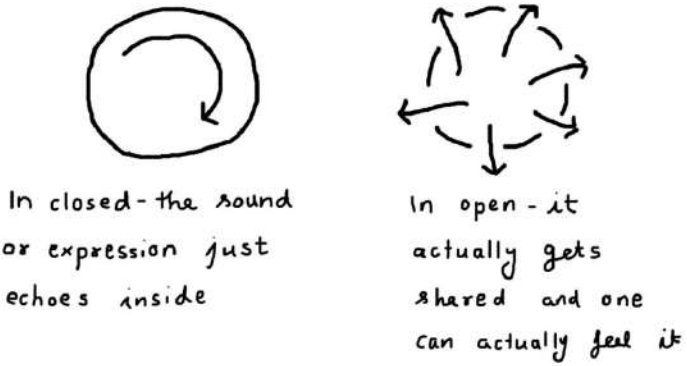

Machine Translated by Google

कुत्ते सभी घटनाओं के बीच बहुत शांत हैं, सूरज चमक रहा है, मक्खियाँ
दौड़ रही हैं, खोज कर रही
हैं, उड़ रही हैं, हवा पौधों के साथ नृत्य कर रही है, पक्षी
अपने सभी गीतों के साथ गा रहे हैं

और यह सब बस वहाँ है लेकिन व्यक्ति का ध्यान
अपने विचारों में इतना संकीर्ण है कि उसका ध्यान सीमाओं से बंधा हुआ है

क्या आप कहेंगे कि जीवन में यही सब कुछ गायब है?

या फिर उस पल में सारा जीवन

जीवन जीने का मतलब है पूरी तरह से जीना,
संवेदनशीलता, भेद्यता,
खुलापन, स्वीकार्यता

जीवन जीने का अर्थ है यह समझना कि जीवन अलगाव में नहीं रह सकता

एक संग्रह है
एक संग्रह जो समझ में आ सकता है
और ऐसा कोई संग्रह नहीं है जो
जब वजन, अतीत की स्मृति

Machine Translated by Google

और चिंता, योजना, भविष्य की कल्पना यह सब इस क्षण तक सिमट जाती है

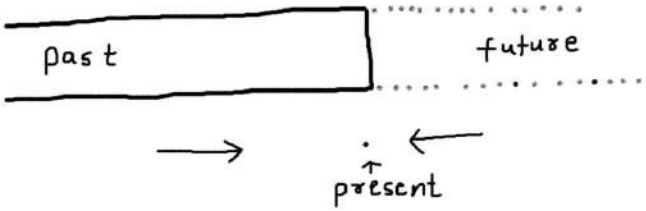


इसीलिए व्यक्ति रोमांच में जीवित महसूस करता है, व्यक्ति कामोन्माद में जीवित महसूस
करता है, व्यक्ति नयेपन में जीवित महसूस करता है

ध्यान और एकाग्रता में व्यक्ति जीवित महसूस करता है

वे क्षण अतीत और भविष्य में फैलाव को कम करके वर्तमान में ले आते हैं, उन क्षणों में जीवन की
खुशबू होती है

भूत और भविष्य में स्वयं को फैलाने के लिए प्रयास की आवश्यकता होती है एक बिंदु को एक रेखा में
फैलाने के लिए बहुत प्रयास की आवश्यकता होती है जो वास्तव में है वह यह बिंदु है वर्तमान

अब

अनुभव किसी तरह से यह
महसूस करने की क्षमता है कि वर्तमान हो सकता है

Machine Translated by Google

याद रखें, इंसान होना है
यह महसूस करने की क्षमता कि कोई वर्तमान क्या हो सकता है, इसका
पूर्वानुमान लगा सकता है, मानव होना है

उस अर्थ में
मानव चेतना इसी में निहित है
अतीत, वर्तमान, भविष्य में दुनिया का यह भाव

कल्पना करें कि क्या जीवन अनंत रूपों में प्रकट हो सकता है
हर रूप अपने तरीके से दुनिया को समझ रहा है
इस समझ को 'चेतना' कहा जा सकता है
रूप के सापेक्ष यह चेतना ही जीवन है

ये सभी शब्द सत्य नहीं हैं
यह किसी की सीमित क्षमताओं में वर्तमान को समझने का तरीका है

मानव चेतना की वर्तमान स्थिति में व्यवस्था बनाने का एक प्रयास

एकमात्र निरपेक्ष बात यह है कि 'मुझे नहीं पता'
ऐसा कोई भी पूर्ण घटक नहीं है जो विभिन्न रूपों में संयोजित हो सके

ऐसा नहीं है कि 'जीवन' जैसी कोई चीज है, जिसे बाद में भौतिक रूपों में रखा जाता है

यह कुछ ऐसा है जो केवल रूपों में मौजूद है

Machine Translated by Google

लेकिन हर रूप उसका अपना रूप है या वह ऐसा कुछ भी नहीं है
जो वह नहीं है

कुछ अपने आप में घूम रहा है कुछ अपने आप से खेल
रहा है

अब इस तरह से पूरी तस्वीर को देखें तो जीवन का कोई निरपेक्ष अर्थ नहीं है, कोई माप
नहीं है

जो बचता है वह प्रेम है

जब हम यह महसूस करते हैं कि हमारी दुनिया स्वयं में ही निहित है,
तो यह केवल स्वयं के लिए न किया गया कार्य है।

## प्रतिबिंब

तब प्रेम स्वयं के प्रति प्रेम होता है और बदले में वह दूसरे के प्रति प्रेम होता है

दूसरों के दिल को छूते समय हम खुद के भी कुछ हिस्सों को छूते हैं

जीवन की दिशा प्रेम होनी चाहिए
केवल एक दिशा हो सकती है क्योंकि केवल दिशा वर्तमान में
निहित है

प्यार की यह चमक बस खुद बने रहने की है, कम से कम प्रयास की

जब तक आप नहीं हैं तब तक आप ही बने रहें, यही उत्तर है

Machine Translated by Google

Machine Translated by Google

सत्य क्या है?

दुनिया/शब्दों के बारे में अब तक की मेरी खोज में, इस प्रश्न का उत्तर पाने का एकमात्र तरीका 'वर्तमान' शब्द है। हालाँकि हम फिर से इस शब्द 'वर्तमान' को परिभाषित करने की अगली समस्या पर जा सकते हैं।

वर्तमान एक ऐसा शब्द है जिसे मनुष्य सहज रूप से समझ लेता है।

समझ। यह समझ तर्क पर आधारित नहीं है। इसे नकारा नहीं जा सकता। केवल होने से, जीने से, जीवन की छोटी सी स्वीकृति से भी, कोई वर्तमान को नकार नहीं सकता।

वर्तमान वह शब्द/अवधारणा है जो मानव मन के विरोधाभासों से बच जाती है। यह है, फिर भी यह लगातार बदल रहा है। यह है, लेकिन जब तक मन इसे धारण करने की कोशिश करता है, तब तक यह पहले ही बदल चुका होता है।

कुछ ऐसा जिसका कोई विपरीत न हो, वह वर्तमान है। अतीत में पीछे की ओर गति होती है, भविष्य में आगे की ओर गति होती है, जब कोई गति नहीं होती है तो वह वर्तमान है। अगर कोई तार्किक रूप से इसे रखने की कोशिश करता है

, यह असंभव होगा.

वर्तमान ही एकमात्र ऐसी चीज़ है जो द्वैत के बाहर मौजूद है - द्वैत विपरीतताओं का अस्तित्व है। वर्तमान ही एकमात्र ऐसी चीज़ है जो द्वैत के बाहर मौजूद है - द्वैत विपरीतताओं का अस्तित्व है।

Machine Translated by Google

जो चीज समय की वैज्ञानिक परिभाषा के बाहर मौजूद है, वह एक बिंदु है, अंतराल नहीं, यहां तक कि गणित और विज्ञान भी केवल उसकी ओर संकेत कर सकते हैं, उसका संकेत दे सकते हैं।

आइए इसे और भी आसान तरीके से देखें। वर्तमान है। क्या आप इसका वर्णन कर सकते हैं? जिस क्षण आप सोचते हैं, वह पहले ही बीत चुका होता है।

मैं जानता हूं कि यह शब्दों का खेल है, लेकिन क्या यह दिलचस्प नहीं है कि एक शब्द/अवधारणा का कोई स्पष्टीकरण नहीं है।
यह सब लिखना भी शब्दों का खेल है, हम वास्तव में शब्दों के अर्थ या अस्तित्व को नहीं देख रहे हैं। हम किसी चीज़ की ओर इशारा करने के लिए अपने समय के साझा स्वीकृत अर्थ का उपयोग कर रहे हैं।

जिस अर्थ में हमने अब तक 'वर्तमान' का निर्माण किया है, वह अस्तित्व की सटीक स्थिति है। यह निरंतर बदलता संदर्भ है, फिर भी एक अर्थ में यह निरपेक्ष है।

वर्तमान का संकेत कई अलग-अलग तरीकों से मिलता है। जैसे साँप अपनी ही पूँछ खा रहा हो।
यह पूर्ण चक्र नहीं है, यह अपूर्ण चक्र भी नहीं है।
यह अपूर्ण वृत्त है जो पूर्ण वृत्त की ओर अग्रसर है।

Machine Translated by Google

प्यार,

लोग तुम्हें बहुत सी अलग-अलग बातें बताएंगे। यह ऐसा है, यह वैसा है। यह सही है, यह गलत है। लेकिन प्यार, कोई भी तुम्हें यह नहीं बता सकता कि तुम कैसे हो, तुम क्या हो।
कोई भी आपको यह नहीं बता सकता कि क्या संभव है, क्या नहीं।

आप जानते हैं, हर कोई उस स्थिति से गुज़रा है जिससे आप गुज़र रहे हैं। हम सभी के मन में बहुत सारे सवाल थे। हम सभी को खुद ही इसका जवाब ढूँढना था।

लोगों ने मुझे बताया कि नदी क्या रही है, क्या है, क्या हो सकती है..... लेकिन आप जानते हैं कि यह उसका एक टुकड़ा भी नहीं है। जब आप किसी धारा के पास बैठते हैं, तो उसमें आपके अंदर की सारी चीज़ें पिघलाने की शक्ति होती है, जब आप अपने पैर उसमें डुबोते हैं और नहाते हैं तो यह आपके अंदर की सारी चीज़ें जम जाती हैं। प्रकृति की अनंतता को बयां नहीं किया जा सकता। जीवन की अनंतता को बयां नहीं किया जा सकता।

यह मेरा दिल तुम्हारे लिए है, मेरा प्यार तुम्हारे लिए है, चलो मैं तुम्हारे साथ अपने जीवन का एक हिस्सा साझा करता हूँ। बहती नदी में जो सुंदरता मैं देखता हूँ, वह तुम्हारे साथ है। जीवन के सभी सवालों के जवाब मुझे मिले। जीवन में मुझे जो प्यार, सुंदरता, शांति मिली है। मैं वह सब तुम्हारे साथ साझा करने की कोशिश कर रहा हूँ।

लोग आपको बताएंगे कि जीवन क्या है, इसे कैसे जीना चाहिए। मेरे हिसाब से कोई भी आपको यह नहीं बता सकता

Machine Translated by Google

जीवन की आपकी परिभाषा क्या होनी चाहिए। एक फूल के लिए जीवन की परिभाषा खिलना है, एक नदी के लिए जीवन की परिभाषा बहना है, एक सूरज के लिए जीवन की परिभाषा चमकना है। पता लगाएँ कि आप क्या हैं, जीवन खुद को खोजने की यात्रा और मंज़िल दोनों है।

अगर कोई अंतिम बिंदु पर बहुत अधिक ध्यान केंद्रित करता है तो वह खो सकता है और अगर कोई स्थिर है तो वह खो सकता है। जीवन में कुछ भी स्थायी नहीं है, इसलिए भविष्य के लिए वर्तमान का त्याग करने का कोई अंत नहीं है। जब धूप हो तो अगर कोई बारिश की कामना करता है और जब बारिश हो रही हो तो अगर कोई सूरज की कामना करता है, तो वह कभी संतुष्ट नहीं हो सकता। जो है उसी में संतुष्ट रहो।

जीने के लिए सिर्फ़ ईमानदारी की ज़रूरत होती है। खुद के प्रति ईमानदारी। जब आपका दिल विरोधाभासों की गांठों से बंधा नहीं होगा। यह खिल उठेगा और प्यार की खुशबू फैलेगी। अब तक आपको यह एहसास हो गया होगा कि खुद पर शक करना सबसे अच्छा विकल्प नहीं है।

'मैं नहीं जानता' से शुरुआत करने के लिए बहुत साहस की आवश्यकता होती है।
चढ़ने के लिए सबसे बड़ा पहाड़ अंदर है। ईमानदारी का मतलब है और आगे बढ़ने का एकमात्र तरीका परिभाषित करता है। खुद के प्रति ईमानदार एक नदी सबसे खूबसूरत प्राणी की तरह बहती है।
जीवन को अंकों में गिनने वाले किसी व्यक्ति को यह जीवन जीने का खतरनाक या नीरस तरीका लग सकता है। लेकिन यह ऐसा ही है।
यह उदासीनता है और यह उदासीनता या निष्पक्ष होने की क्षमता केवल ईमानदारी पर आधारित हो सकती है।

Machine Translated by Google

इनमें से किसी भी शब्द में अनुभव के बिना शक्ति नहीं है, इसलिए आपको इसे स्वयं अनुभव करना चाहिए। विचार की सभी रचनाओं की तरह शब्द भी सीमित हैं, मन द्वारा सीमित हैं जो उनका अर्थ रखता है। ये सभी शब्द रोमांस हैं, यह पदार्थ नहीं है।

मानव अस्तित्व पदार्थ के इर्द-गिर्द घूमता रहा है।

यदि कोई इतनी मेहनत करना बंद कर दे तो जीवन की संभावना है।
जीवन जीने के लिए लगाया गया बल, स्थायित्व की इच्छा से निकलकर, एक क्षणभंगुर दुनिया में घर्षण पैदा करता है। जीने की इस गति पर संदेह करना नहीं है, बल्कि पूर्ण नियंत्रण की इस इच्छा पर संदेह करना है। इसके बारे में सोचें, हम लगातार खुद को खुश करने के लिए समस्याएं, चुनौतियां ढूंढते रहते हैं। अगर कोई वास्तविक समस्या है, तो उसे खोजने की जरूरत नहीं है। यह अंततः आपको ढूंढ ही लेगी। मूल में इच्छा की बहुत सी परतें हैं। अनुभव करने का एकमात्र तरीका है उसे जाने देना।

कोई पतंग उड़ा रहा है। इसमें लगातार खींचने और धकेलने की ज़रूरत होती है। अगर कोई प्रयास न करे तो क्या पतंग उड़ पाएगी? इसका जवाब देने का एक ही तरीका है, उसे छोड़ देना।

क्या आपने किसी पक्षी को उड़ते हुए देखा है? वह केवल तभी पंख फड़फड़ाता है जब उसे जरूरत होती है। फिर वह हवा के सापेक्ष खुद को स्थिर कर लेता है और बिना ज्यादा प्रयास किए भी उड़ जाता है।

यदि विचार या चिंतन ही जीवन है तो हमें उसे अपने जीवन में उतारना चाहिए।

Machine Translated by Google

विचार को स्वतंत्र छोड़ दें और देखें कि वह कहाँ जाता है। विचार की गति अनंत है, जो सीमित है वह नियंत्रण है, नियंत्रण कि उसे कहाँ जाना चाहिए और कहाँ नहीं जाना चाहिए।

यदि जीवन अन्वेषण है तो किसी भी तरह नियंत्रण से इसे प्राप्त नहीं किया जा सकता।

मानव स्मृति, मानव इतिहास, बुद्धि, ज्ञान, कहानी, यह सब केवल मानव के लिए उपयोगी और सार्थक है। केवल मानव बुद्धि ही इसका अर्थ निकाल सकती है। यह सबका साझा अनुभव है- यही आप हैं। अतीत के बोझ में न फंसें। यह आपकी मर्जी है कि आप इससे क्या अर्थ निकालते हैं। ऐसा लगता है कि अतीत को मुट्ठी भर लोगों ने बनाया था, लेकिन यह उसे देखने का एक पक्षपातपूर्ण तरीका है। ज़रा सोचिए, क्या आप उस इंसान का नाम जानते हैं जिसने चलना सीखा, आग जलाना सीखा, तैरना सीखा, खाना बनाना सीखा, खेती करना सीखा, जिसने हर चीज़ को चखकर देखा कि खाने में क्या है..... अब बताइए कि क्या आज के इतिहास रचने वाले इसके बिना जीवित रह पाएंगे। अस्तित्व सिर्फ़ अरबपति, मशहूर, ताकतवर से परिभाषित नहीं होता, यह गरीब, शक्तिहीन से भी परिभाषित होता है। जब हम यह स्वीकार करते हैं कि तितली के पंख फड़फड़ाने से भी पूरी दुनिया बदलने की क्षमता होती है, तो फिर जीवन के मूल्य में पदानुक्रम क्यों है? किस जीवन को परिभाषित करने में

Machine Translated by Google

कौन ज़्यादा महत्वपूर्ण है और कौन नहीं। जीवन के प्रति यह स्वार्थी और भ्रष्ट दृष्टिकोण कहाँ से आया?

क्या अब तक आपको यह एहसास हो गया है कि हमारा पूरा अस्तित्व अतीत से उधार लिया गया है। अगर कोई यह समझ लेता है, तो 'मैं इसका मालिक हूँ', 'मैंने यह किया है' का अहंकार अपने आप ही पिघल जाएगा। व्यक्ति विनम्र हो जाएगा, जो कुछ भी है उसके लिए आभारी होगा। मानवीय विचारों ने जो कुछ भी बनाया है और मानवीय विचारों से बाहर जो कुछ भी है, उसके प्रति विनम्र होगा। किसी भी चीज़ का असली मूल्य तब पता चलता है जब कोई निर्णय का शीशा हटाकर खुद को देखता है।

ये सभी शब्द किसी न किसी बिंदु पर रुक जाते हैं। ये सभी ऐसे तरीके हैं जिनसे कोई जीवन की ओर बढ़ सकता है। कोई कहीं से भी शुरू कर सकता है, किसी भी रास्ते पर चल सकता है... जब तक ईमानदारी है और कोई चलता रहता है, तब तक वह वहाँ पहुँच जाएगा जहाँ ये शब्द इशारा करते हैं। आप जानते हैं कि जिस दुनिया में हर कोई रहता है, वह वास्तव में एक सीमित व्यक्तिगत दुनिया है। यह किसी को जीवन की अपनी परिभाषा को परिभाषित करने की अनुमति देता है लेकिन यह हो सकता है

दूसरी तरफ भी जाएं। अगर कोई अपनी ही दुनिया में रहता है, तो संघर्ष हो सकता है, अकेलापन हो सकता है। अहंकार, अहंकार, निश्चितता की भावना के साथ जीवन की व्याख्या करने की शक्ति दूसरों के साथ घर्षण का परिणाम है, जिनके पास जीवन का अपना क्षेत्र है। मैं इसे स्पष्ट रूप से देख सकता हूं इसलिए मुझे कोशिश करनी चाहिए कि क्या इसे यहां स्पष्ट रूप से संप्रेषित किया जा सकता है।

Machine Translated by Google

'मैं' बचपन से लेकर अब तक का संग्रहित डेटा है, जो प्रत्यक्ष रूप से अनुभव के माध्यम से और अप्रत्यक्ष रूप से किताबों, कहानियों आदि के माध्यम से है। व्यक्ति की अपनी दुनिया इस संपूर्ण संग्रह के प्रतिबिंब में निहित है। कोई ऐसा व्यक्ति जिसने कभी अनुभव नहीं किया है, वह कभी भी अपने जीवन में कुछ नहीं कर सकता।

हवाई जहाज़ में उड़ने वाले लोगों को अभी भी उड़ान के बारे में कुछ अवधारणाएँ हैं। यह उनके लिए हवाई जहाज़ और उड़ान का मतलब है। शायद वे इसे पक्षी के उड़ने के तरीके के संदर्भ में सोचते हैं। कोई व्यक्ति जिसने वायुगतिकी और इसके पीछे के विज्ञान के बारे में पढ़ा है, वह इसे पूरी तरह से अलग तरीके से देखेगा। और फिर कोई व्यक्ति जिसने इसे पढ़ा है

वास्तव में एक के माध्यम से उड़ान भरने वाले को यह पूरी तरह से अलग दिखाई देगा। एक ही चीज़ का मतलब अलग-अलग लोगों के लिए उनके जीवन के आधार पर अलग-अलग होता है, उन्होंने क्या इकट्ठा किया है।
बाहरी चीज़ों की छवि अंदर से आती है।

यदि हम यहां तक पहुंच गए हैं, कम से कम तार्किक रूप से इसे समझ गए हैं तो हम मानव अस्तित्व की समस्या के अगले भाग पर जा सकते हैं।

हम अलग-थलग होकर नहीं रह सकते और जब हमें ऐसा करना पड़े तो

किसी और के साथ बातचीत करते समय, हम अपने पास उपलब्ध एकमात्र मार्गदर्शन के अनुसार चलते हैं, यानी हमारे मन में दुनिया की समझ। सीमित समझ जो हमने एकत्रित की है। यह

यह एक असंभव कार्य है, इसलिए इसमें कुछ व्यवस्था बनाने के लिए हमने व्यवस्थाएँ बनाईं। भाषा की व्यवस्था, नैतिकता की व्यवस्था, धर्म की व्यवस्था, विज्ञान की व्यवस्था, संविधान की व्यवस्था, कानून और व्यवस्था की व्यवस्था... सभी व्यवस्थाएँ

Machine Translated by Google

सिस्टम स्वाभाविक रूप से एक सरल उद्देश्य पर आधारित होते हैं - व्यवस्था बनाना। जैसे मैं अभी लिख रहा हूँ और पाठक को अर्थ की अनुभूति हो रही है। यह बातचीत, या साझाकरण, या संचार भाषा के ढांचे के माध्यम से किया जाता है। यदि कोई वास्तव में इस पर गहराई से विचार करता है, तो उसे एहसास होगा कि इन सभी ढाँचों के साथ भी, कोई यह कभी नहीं बता सकता कि दूसरे ने क्या समझा है। मैंने इन सभी ढाँचों की शक्ति या बुद्धिमत्ता का उपयोग किया है, फिर भी मुझे नहीं पता कि आप इससे क्या प्राप्त कर रहे हैं।

अब अगर कोई इसे समझ ले, या वाकई समझ ले, तो फिर इस ढांचे का इस्तेमाल सिर्फ़ मदद के तौर पर या फिर किसी संदेह के साथ ही किया जाएगा। कोई भी ढांचा चाहे विज्ञान हो या धर्म, उसे कभी भी पूर्ण दर्जा नहीं दिया जाएगा। लेकिन क्या आपने देखा कि अब क्या हो रहा है। अब संदेह के लिए कोई जगह नहीं बची है।

और यहीं पर मानवीय पीड़ा निहित है। पूर्ण होने की इस इच्छा में, पूरी तरह से निश्चित होने की। यही अहंकार, सही और गलत की जड़ है। जहाँ हर कोई अलग है, जीवन को समझने का अलग तरीका है और हर कोई 100% निश्चित है कि उसका दृष्टिकोण, उसकी समझ सही है। इसे इस तथ्य के साथ जोड़ दें कि हमें एक साथ रहना है। अब हर कोई यह साबित करना चाहता है कि वे सही हैं और दूसरे गलत हैं।

संदेह करने वाले को कमजोरी माना जाता है और जो भी कमजोर और असुरक्षित है उसे बलपूर्वक हटा दिया जाएगा।

Machine Translated by Google

क्या अब आप सभी मानवीय दुखों का कारण समझ गए हैं? यही मैंने अपनी सीमित क्षमताओं में समझा है। मैं जो कुछ भी साझा कर रहा हूँ, वह बहुत हद तक शब्दों पर निर्भर करता है, जो अपने आप में सीमित हैं और यहाँ तक कि शब्द भी सीमित अनुभव से आते हैं।

फिर भी मैं प्रेम की भावना के आधार पर प्रयास कर रहा हूँ। क्या होगा अगर यह बात किसी एक व्यक्ति को भी समझ में आ जाए और संघर्ष, लड़ाई, तुलना थोड़ी कम हो जाए।

मैं बार-बार प्यार की ओर क्यों लौटता रहता हूँ? क्योंकि यह वास्तव में साझा करने का एकमात्र तरीका है। जिसे प्यार कहते हैं, वह खुलेपन की यह अवस्था है।

आप जानते हैं कि मैं ये सभी शब्द साझा कर रहा हूँ। लेकिन ये सभी बेकार हैं। मैं कुछ खास नहीं जानता। एकमात्र चीज़ जो मैं जानता हूँ और वह भी सिर्फ़ अपने लिए कि 'इसे जाना नहीं जा सकता', 'इसका कोई पूर्ण अर्थ नहीं है'।

मुझे यह देखकर दुख होता है कि लोग खुद को इसलिए नीचा दिखाते हैं क्योंकि उन्हें कोई भाषा नहीं आती, वे पर्याप्त शिक्षित नहीं हैं, वे पर्याप्त लंबे नहीं हैं, पर्याप्त गोरे नहीं हैं। मैं जो विभिन्न तरीके खोज रहा हूँ, वे ऐसे तरीके हैं जिनसे आप फिर से इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि कोई निरपेक्ष नहीं है। सब कुछ एक कहानी है। पूरा मानव इतिहास एक कहानी है। मेरे अस्तित्व का पूरा इतिहास भी एक कहानी है। कहानी व्यक्ति के अपने दिमाग में चल रही है।

Machine Translated by Google

प्रेम वह सबसे सुन्दर तरीका है जिससे मनुष्य अस्तित्व में रह सकता है।
जिसे लोग चेतना का उच्चतम रूप कहते हैं, वह बुद्धि या स्मृति का उपयोग नहीं है, यह प्रेम की अवस्था है। किसी व्यक्ति का उच्चतम रूप तब होता है जब वह इसमें प्रयास करना बंद कर देता है। स्वाभाविक तरीके से जीना ही अस्तित्व का सर्वोच्च रूप है। और अगर यह स्वाभाविक है तो किसी को कोई प्रयास करने की आवश्यकता नहीं है।

Machine Translated by Google

क्या गुलाब के पास गुलाब न होने का विकल्प है?

इतना सुंदर होना बंद कर देना, इतना अच्छा महकना

बंद कर देना, सिर्फ इसलिए कि कोई इसके लिए इसे

तोड़ लेगा

## क्या कोई विकल्प है

जब तक जीवन है

सबसे गहराई तक जियो तुम बस रहो

वैसे भी कोई दूसरा विकल्प नहीं है

Machine Translated by Google

प्रेम ही जीवन की सच्ची गति, उद्देश्य, जीवन के अस्तित्व का कारण को परिभाषित करने का एकमात्र तरीका है

सबके लिए प्यार अपने लिए प्यार है, कोई भी चीज आपको उस तरह से
नहीं भर सकती जैसा प्यार भरता है

जो कोई भी खोज रहा है, जिसने खुद को भरने
की कोशिश की है और अभी भी खाली महसूस करता है, प्यार की कोशिश करो

जब आप देंगे तो प्रेम आपको भर देगा, जितना अधिक आप प्रेम
करेंगे उतना ही अधिक आपके पास आएगा, यह कभी समाप्त नहीं होता क्योंकि प्रेम
में तर्क की कोई सीमा नहीं होती।

प्रेम मानव का ब्रह्मांड है
जब कोई सीमा न हो तो मनुष्य की सम्पूर्णता

कोई दबाव नहीं, कोई प्रयास नहीं, कोई सीमा नहीं, तब स्वयं दूसरे में विलीन
हो जाता है
और कुछ ऐसा जन्म लेता है जो क्षणभंगुर होते हुए भी स्थायी होता है

प्यार तब होता है जब
खुद को बढ़ावा देने के लिए दूसरे के स्वामित्व के दो विकल्पों में से

Machine Translated by Google

या दूसरे के लिए खुद को भंग करके आप कोई भी नहीं
चुनते

क्योंकि प्यार कभी भी एक विकल्प नहीं होता

Machine Translated by Google

रास्ता

कुछ लोग जवाब खोजते हैं
कुछ लोग नहीं करते

प्रश्न मौलिक है या उत्तर मौलिक है

जो कोई भी पहुंचा है, वह नहीं पहुंचा है क्योंकि लक्ष्य लगातार बदल रहा है, करना और न करना एक साथ होना चाहिए और ऐसा होने के लिए जादू के अर्थ में संयोग होना चाहिए

## कोई रास्ता नहीं हो सकता

यह स्वाभाविक तरीका होना चाहिए, ऐसा
तरीका जो तर्क से न निकला हो, यह किसी
और का तरीका नहीं हो सकता, तरीका इस बात
पर निर्भर करता है कि आप कहां हैं, जब हर कोई अलग-
अलग बिंदु पर हो तो दूसरों का तरीका इस्तेमाल नहीं किया
जा सकता।

इसे इस तरह से देखें कि एक
व्यक्ति शब्दों में कहता है लेकिन दूसरा
केवल यह देख सकता है कि वे प्रश्न पर कैसे पहुंचे हैं

Machine Translated by Google

पहाड़ बदलता रहता है इसलिए रास्ता नया होना चाहिए
पहाड़ व्यक्तिगत है और चढ़ने के लिए बाहर की ओर
देखना बंद करना होगा

अंत में चढ़ने के लिए कोई पहाड़ नहीं है
एक तो पहले से ही मौजूद है, आपको
बस अपने मन में पहाड़ और रास्तों की छवि को छोड़ देने की जरूरत है

Machine Translated by Google

मैं लिखता हूं

क्योंकि शब्द दिए गए हैं क्योंकि शब्द हैं

सही और ग़लत के शब्द जीवन और मृत्यु के शब्द

मेरे और प्रकृति के शब्द

धर्म और विज्ञान के शब्द केवल वही नष्ट कर सकते हैं जो शब्दों
ने बनाया है

मेरे शब्द समय के शब्द हैं, सोचने के शब्द हैं

और सोचना बंद करने वाले शब्द

यह एक बेकार अभ्यास है

कोई एक शब्द बनाता है और दूसरा उसे नष्ट कर देता
है, शब्द नष्ट नहीं होता, अर्थ नष्ट होता है

Machine Translated by Google

मैं मन में रची एक कहानी
हूँ
क्या मैं उससे भी अधिक हूँ

शायद हाँ

शायद नहीं

## क्या मैं अपनी कहानी खुद लिख रहा हूँ क्या दूसरे लोग इसे लिख रहे हैं

सम्पूर्ण मानव इतिहास को अपने अंदर समेटे हुए
मैं खोजता हूँ कि मैं क्या हूँ

मैं उड़ना चाहता हूँ लेकिन
इसके कुछ नियम हैं

क्या कोई नियमों के तहत उड़ान भर सकता है?

मैं मुक्त होना चाहता हूं

किससे मुक्त

खुद से मुक्त

दाहिना हाथ बाएँ को रोक रहा है, दाहिना पंख बाएँ से विपरीत
दिशा में चल रहा है

मैं खुद में उलझा हुआ हूँ अगर एक ही झुके तो
लड़ना बंद कर दो

Machine Translated by Google

अगर एक पैर आगे बढा दिया जाए तो हम आगे नहीं बढ़ सकते
और दूसरा पीछे की ओर चला जाता है

हम इसे एक खास तरीके से क्यों चाहते हैं, जबकि यह सब एक कहानी है,
इसे क्यों नहीं खुलने देते? जब मंजिल की कोई
उम्मीद नहीं होती, तो कोई सचमुच उड़
सकता है।

अर्थ की धारणा के साथ मत लिखो, यही वास्तविक लेखन है, यही वास्तविक प्रवाह है

यह कभी अकेले नहीं हो सकता

एक पक्षी जो अकेले और हवा दोनों से उड़ता है, अगर कोई हवा के विपरीत उड़ता है
तो वह हवा के विपरीत उड़ रहा है।

क्या होगा अगर तुम गिर जाओ और हवा
तुम्हें ले जाए

जब यह सब है, तो क्या यह क्षण संदेह रहित है

कुछ मैं और कुछ हवा
एक दूसरे के साथ नृत्य

Machine Translated by Google

फिर कहानी खुद ही लिख जाएगी एक कहानी जो खुद से मुक्त

अंत की है

Machine Translated by Google

मैं अलग होकर भी अपना होना चाहता हूँ
मैं यहाँ रहना चाहता हूँ, फिर भी यहाँ नहीं

मुझे प्यार दो पर सब कुछ नहीं, मुझे
सच दो पर सब कुछ नहीं

नियम लेकिन पूरी तरह से
पूर्वानुमान योग्य नहीं लेकिन पूरी तरह से नहीं

मैं छोड़ देना चाहता हूँ पर सब कुछ नहीं
मैं चाहता हूँ कि सब कुछ मिल जाए पर सब कुछ नहीं

Machine Translated by Google

चलो बातचीत करते हैं

दूसरों के सामने तथा स्वयं के

सामने सिद्ध करने और

असत्य सिद्ध करने से विराम

लेकर क्या हम अपना ध्यान मुक्त कर सकते हैं और केवल

बंधनों से बंधे हृदय का निरीक्षण कर सकते हैं तथा उसकी

धड़कन को सुन सकते हैं?

.

.

.

.

मैं यह बात रूपकात्मक रूप से नहीं कह रहा हूँ, आइये हम ऐसा करें

क्या आप पढ़ना धीमा कर देंगे, शब्द कहीं नहीं जा रहे हैं

आइये हम ऐसी बातचीत करें जैसे कि यह आखिरी बातचीत हो

रोमांस हटाओ

उसके लिए कोई समय नहीं है

अगर हम सभी को हटा दें तो हम किस बारे में बात करेंगे

दुनिया के साथ दौड़ में

निर्णय

क्या हम रुक सकते हैं

Machine Translated by Google

किनारे पर बैठो

और यह बातचीत करें

इससे कुछ भी नहीं बदलेगा क्या हम बिना किसी अपेक्षा

के ऐसा कर सकते हैं

आइये लेबल हटा दें

किसी भी प्रकार के भेदभाव से हम जीवन पर से शर्तें हटा
दें

लेबल हटाएँ

उस पहचान पत्र में पुरुष/महिला, हिंदू/बौद्ध/ईसाई, युवा/बुजुर्ग,

मालिक/कर्मचारी, जन्म स्थान, जन्म समय, धर्म, करियर, लिंग, त्वचा का रंग, भाषा जैसे सभी पहचान चिह्न

और फिर उसी दृष्टि से खुद को देखें

और दूसरों को भी देखें

.

.

.

.

.

.

क्या हम स्वयं और दूसरों दोनों का निरीक्षण कर सकते हैं

बिना किसी भेदभाव के

.

Machine Translated by Google

.

.

किसी लड़की/लड़के से बात करना इस तरह होना चाहिए किसी काले/
भूरे/गोरे से बात करना इस तरह होना चाहिए किसी अमीर/गरीब व्यक्ति से बात करना इस
तरह होना चाहिए किसी बॉस/कर्मचारी से बात करना इस तरह होना चाहिए

.

.

.

क्या हम बातचीत पर इन शर्तों को हटा सकते हैं

और बस इंसान से इंसान की बात करो

.

.

.

.

सभी प्रकार के रिश्तों के मन पर ये भार, बिना किसी अपेक्षा के, बिना किसी लाभ की
इच्छा के बातचीत

एक वार्तालाप

अपने आप के साथ और दूसरों के साथ

.

.

.

आप यह बात खुद से

और दूसरों से कैसे पूछ रहे हैं

Machine Translated by Google

या

शायद सिर्फ एक मुस्कुराहट, खुद की

और दूसरों की स्वीकृति

.

.

सुनना

बस अपनी और

दूसरों की बात सुनो

.

.

.

यह कठिन हो सकता है, हो

सकता है कि आप कठोर शब्द पकड़ रहे हों, जिन्हें सुनना कठिन होगा

.

.

.

अपनी सुरक्षा को कम करने के लिए खुलने में यह

झिझक, चोट लगने का यह डर हर किसी के पास है,

लेकिन हमें कहीं से तो शुरुआत करनी होगी।

हमें एक मौका लेने की जरूरत है

.

.

Machine Translated by Google

.

क्या होगा अगर यह दर्दनाक हो जाए लेकिन क्या होगा

अगर यह आनंददायक हो जाए

.

.

क्या हम अतीत की यादों के डर से

बात करना और साझा

करना बंद कर सकते हैं?

.

.

.

क्या आप बिना किसी उम्मीद के फिर से कूदेंगे अगर आप गिर गए तो क्या

होगा लेकिन अगर आप उड़

गए तो क्या होगा

.

.

अगर हम असफल हो गए

हम फिर से कोशिश करेंगे क्या

आप फिर से एक मौका लेंगे ताकि हम यह बातचीत
कर सकें

Machine Translated by Google

तुम क्यों हंस रहे हो? एक ने पूछा

हम सांस क्यों लेते हैं? क्या कार्य
केवल तर्क से ही किए जा सकते हैं?

ख़ुशी का मतलब है 'मैं खुश हूँ', इसका मतलब
यह नहीं है कि 'मैं खुश हूँ क्योंकि...'

प्यार में पड़ा हुआ व्यक्ति किसी चीज़ की वजह से नहीं
बल्कि किसी और चीज़ की वजह से मुस्कुराता है

यह सिर्फ इसलिए घटित होता है क्योंकि यह वहां है

Machine Translated by Google

अपने आप में खोए हुए

कपड़ों में, बाहरी

क्या जवाब अंदर है

यह न तो अंदर है और न ही बाहर

यह वह जगह है जहाँ कोई अंदर और बाहर नहीं है

## जब कोई उनके कपड़ों की तारीफ करता है तो उन्हें अच्छा लगता है

फिर भी जब कोई उनसे कपड़ों के लिए नफरत करता है तो वे सवाल करते हैं

'माया' तभी ठीक है जब वह सुख दे रही हो

फिर भी जब इसका प्रयोग दुष्ट माया के विरुद्ध किया जाता है तो यह दुष्ट माया बन जाती है

आप

निर्णय आपके अंदर है

जो आप दुनिया पर लागू करेंगे वह आप पर भी लागू होगा

वही स्कूटर मेहनत कम कर देता है

और वही प्रदूषण पैदा करता है

एक दूसरे के बिना नहीं रह सकता

कुछ ऐसा जो खुशी दे सके

स्वतः ही दुख देने की शक्ति होती है

क्या आप भी आरामदायक रास्तों पर चलते समय सवाल करते हैं

क्या आप खुशी पर सवाल उठाते हैं

जैसे आप दुख पर सवाल उठाते हैं

सत्य का मार्ग

ईमानदारी का मार्ग है

Machine Translated by Google

या शायद
यह आपके लिए सिर्फ मनोरंजन है
मानसिक उत्तेजना के लिए एक और चर्चा
क्या तुममें यह सब छोड़ देने का साहस है
या फिर यह बाजार से कोई उत्पाद खरीदने जैसी मानसिकता है कि सब कुछ
खरीदा जा सकता है

तो आपको केवल नकल ही मिलेगी
नकली, नकल
यात्रा पथहीन है और इसके लिए अपार प्रयास की आवश्यकता हो सकती है
ऊर्जा
क्या आप सत्य के लिए यह कीमत चुकाने को तैयार हैं

ऑनलाइन खरीदा गया नकली सच नहीं
नेटफ्लिक्स देखते समय
एक और प्रेरक वृत्तचित्र, एक और मार्मिक गीत, ध्यान की पुस्तकें बेचने वाला एक
और गुरु, दुनिया का अंत दिखाने का वादा करने वाला एक और उद्यमी, एक और
प्रेरणादायी वक्ता

मैं तुम्हें सच नहीं बता सकता
सच को शब्दों में नहीं बताया जा सकता
लेकिन मैं नकली सत्य की मृगतृष्णा को साफ़ कर सकता हूँ
वह झूठ जो आप हर रात खुद से कहते हैं और फिर भी अंदर से खालीपन
महसूस करते हैं

Machine Translated by Google

मैं कोई नहीं हूँ, लेकिन

मुझे यह मत कहो कि तुम्हें मानव चरित्र में भ्रष्टाचार नहीं दिखता

दूसरों को अपने से भिन्न मानदण्डों से आंकना

मुझे नहीं पता कि ये शब्द आप तक पहुँचते हैं या नहीं स्वार्थ, दोहरे मापदंड,

आरामदायक रास्तों की लत इतनी गहरी जड़ें जमा चुकी है पूरी दुनिया से सवाल करो लेकिन

खुद से भी सवाल करो आप अपवाद नहीं हैं

मैं अपवाद नहीं हूं

निर्णय, घृणा, अकेलापन बाहर और भीतर दोनों के कारण है

बाहर तो बदला जा सकता है पर अंदर का क्या होगा

जो अंदर है उससे भागकर कहां जाओगे

Machine Translated by Google

क्या होगा अगर जीवन?

आप जीवन हैं। जीवन शब्द की परिभाषा आपके संदर्भ में की गई है, इसलिए इसका एकमात्र उत्तर या मान्यता यह है कि आप जीवन हैं।

जीवन क्या नहीं है?

इसका उत्तर देना असंभव है। यदि जीवन इस बात में निहित है कि आप दुनिया के प्रति सचेत हैं (अंदर और बाहर दोनों) तो आप जिस चीज़ के प्रति सचेत हैं वह जीवन या जीवन का हिस्सा/रूप है।

मनुष्य क्या है?

समानताओं का चक्र बाहर की ओर फैलता है।

जिस तरह से मन ने समूह बनाए हैं। पहले समूह को मानव के रूप में परिभाषित किया गया है। यह बताने का कोई तरीका नहीं है कि मैं जिस दुनिया के बारे में सचेत हूँ, वह किसी और चीज़ के समान है या नहीं। फिर भी समानताएँ हैं, एक सहमति है, एक सहमति है और जो भी इसका हिस्सा हैं उन्हें मानव के रूप में परिभाषित किया गया है।

भावनाएँ क्या हैं?

मन/चेतना द्वारा अर्जित उपकरण ताकि गति चलती रहे। सभी भावनाएँ दुनिया के साथ संबंधों में निहित हैं। ताकि चेतना अपनी रचनाओं की दुनिया में बहती रहे।

समय क्या है?

मन की विशेषता के आधार पर निर्मित एक भावना

Machine Translated by Google

स्मृति कहलाती है। यह एक अवधारणा/शब्द है जो समझने के एक तरीके से निकला है जो काफी उपयोगी साबित हुआ है।

इन सभी के उत्तर क्या हैं?

समय के सापेक्ष ढांचे पर आधारित मेरी दुनिया की एक पूर्ण समझ। यह केवल उसी के लिए मान्य है जिसे समय में 'वर्तमान' के रूप में परिभाषित किया गया है। वे वर्तमान शब्दों और देखने के सबसे स्वीकार्य तरीके की व्यक्तिगत समझ द्वारा लिखे गए हैं।

Machine Translated by Google

ये तो बस शब्द हैं पर ये जीवन बन
सकते हैं

यह आप पर निर्भर करता है

कि आप कौन पढ़ रहे हैं

यह सिर्फ एक पेड़ है लेकिन
यह जीवन हो सकता है

यह आप पर निर्भर करता है कि आप कौन देख रहे हैं

यह सिर्फ कागज है लेकिन

यह पैसा भी हो सकता है या किताब
भी हो सकती है

भाव, सौंदर्य इन शब्दों में नहीं है यह आप में है यह मेरे और आपके बीच

जीवन के समझौते

में है आपकी दुनिया में कोई नहीं है पूरी दुनिया आप हैं

आप सोचते हैं कि बुद्धि है इसलिए कोई न कोई इसे बनाता होगा

लेकिन बुद्धि आप में है और यह निरपेक्ष नहीं है

क्या रोकता है किसी को फूल की तरह खिलने से, आँखों में चमक

Machine Translated by Google

क्या सीमाएं तुम्हारे और मेरे द्वारा बनाई गई हैं जो चीज किसी को नाचने से रोकती है वह
है उपयोगी और बेकार का निर्णय कोई बिना वजह हंस नहीं
सकता कोई बिना वजह नाच नहीं सकता

तुमसे किसने कहा कि हर चीज के पीछे कोई कारण होना चाहिए, ये सीमाएं हमने खुद पर लगा रखी हैं,
जहां अनुचित अस्तित्व में नहीं हो सकता।

जहाँ अर्थहीन जीवन परिभाषित, सीमित नहीं हो सकता

कारण हमेशा प्रेम से हार जाता है, ऐसा पहले भी हुआ है
और यह फिर भी होगा, आप इसे कहीं गहरे में महसूस कर सकते हैं, है न? इसीलिए मैं लिख रहा हूँ
और आप पढ़ रहे हैं।

यदि आत्म-प्रेम केवल भौतिक शरीर तक ही सीमित है, तो यह स्वयं की संकीर्ण परिभाषा है, न कि स्वयं की
संपूर्ण दुनिया तक

कि प्रेम तो बस एक बेजान प्रतिरूप है, एक नकल है

एक प्रतिबिंब

Machine Translated by Google

## अवसाद क्या है?

यह मन की प्रतिक्रिया है, जैसे बुखार शरीर की प्रतिक्रिया है। मन व्यवस्था स्थापित करने की कोशिश करता है ताकि ध्यान कहीं और कम हो जाए। एक सख्त मन

विसंगति को अस्तित्व में न आने दें, अन्यथा सारी ऊर्जा समाप्त हो जाएगी।
व्यवस्था की स्थापना या अव्यवस्था को स्वीकार करना ही एकमात्र उपाय है।
विचार चक्र में उलझे रहने से ऊर्जा का रिसाव होता है। विचार और अर्थ (व्यवस्था) की भूमिका जितनी केंद्रीय होगी, ऊर्जा की आवश्यकता उतनी ही तीव्र होगी।

दुनिया के मानसिक और मानसिक रूप से नए वर्गीकरण के साथ
भौतिक के अलावा, हम यह भी समझ सकते हैं कि मानसिक भी सीमित है।
यह तो बस पहले से निर्मित वस्तुओं का पुनःचक्रण है।
इससे कुछ भी नया नहीं निकल सकता। जबकि भौतिकता हमेशा बदलती रहती है।

आजकल के समय में मानसिक को इतना महत्व दिया जाता है कि व्यक्ति के दूसरे अंग से संपर्क टूट जाने की पूरी संभावना है। मोबाइल भौतिक है, फिर भी सोशल मीडिया पर जो छवियाँ दिखाई देती हैं, उनका अर्थ मानसिक प्रक्षेपण है। भौतिक रूप में जो छवि दिखाई देती है, वह भी कहीं न कहीं मानसिक ही होती है। मन द्वारा निर्मित उपकरणों का उपयोग करने पर मानसिक ध्यान की मात्रा अधिक होती है। जितना अधिक ध्यान को प्रशिक्षित किया जाता है, उतना ही मानसिक ध्यान की मात्रा बढ़ती है।

Machine Translated by Google

महत्व जितना अधिक होगा, उतना ही उसके लिए वहाँ रहना आसान और स्वाभाविक होगा। जब विचार सपनों की तरह अवधारणाओं में गहराई से उतर जाता है, तो यह बहुत संभव है कि व्यक्ति पूरे अस्तित्व के बारे में जागरूकता खो देता है। 'सिर में रहना' इसका वर्णन करने के लिए एक बहुत ही करीबी वाक्यांश होगा।

जब मानसिक प्रक्षेपण इतना मजबूत हो जाता है, समाज और व्यक्ति दोनों द्वारा इसे दिए गए महत्व के कारण, कि यह पूरी तरह से उस चीज़ पर हावी हो जाता है जिसे हम भौतिक या वास्तविकता कहते हैं, तो यह बेकाबू हो जाता है। मानसिक धारणाओं पर आधारित एक लूपिंग मशीन है, अगर कोई यह भूल जाता है कि यह धारणाओं पर आधारित है और फिर इसे अधिक से अधिक ऊर्जा देते रहें, तो यह पूरी तरह से सब कुछ खत्म कर देगा।

आप।

इसे एक लूप में डिज़ाइन किए गए गेम के रूप में सोचें और खेलते समय व्यक्ति को यह अहसास नहीं होता कि यह एक गेम है। एक व्यक्ति सपनों या मानसिक परिदृश्यों में फँसा हुआ है।

किसी भी स्क्रीन पर आपको उत्तेजित करने वाली सभी कहानियाँ, आपके द्वारा पहले से एकत्रित किए गए डेटा के आधार पर मानसिक रूप से चल रही हैं। सभी किताबें मानसिक हैं। मानव मस्तिष्क में जो मूल्य होता है, वह बहुत हद तक मानसिकता पर निर्भर करता है जैसे कि करेंसी नोट या उसका आधुनिक संस्करण, क्रिप्टोकरेंसी।

Machine Translated by Google

अगर आप वाकई मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं के कारण को समझना चाहते हैं, तो आपको पूरी तस्वीर देखनी होगी। अगर आप अपने शरीर पर लगातार, बिना किसी ब्रेक के तनाव डालते रहेंगे, तो संभावना है कि यह टूट जाएगा। इसी तरह, अगर आप अपने दिमाग को हर समय तनाव की स्थिति में रखते हैं, तो निश्चित रूप से इसका नतीजा मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी कोई समस्या होगी।

हम ऐसे समय में जी रहे हैं जहाँ तनाव लेना जश्न मनाने जैसा है। अधिक से अधिक की संस्कृति। एक ही सामान का अधिक से अधिक ढेर। हम ऐसे लोगों की कहानियों में जी रहे हैं जो तनाव में रहते हैं और सुपरहीरो बनकर सामने आते हैं। 8 साल में सिर्फ़ 10 छुट्टियाँ लीं, दिन में सिर्फ़ 4 घंटे सोए। जहाँ चुप्पी को बेकार माना जाता है क्योंकि यह इस दौड़ में हिस्सा नहीं ले रही है। एक इंसान मन से इतना बंधा हुआ है कि उसका एकमात्र अंत विनाश है। मूल्य और लागत के उसी तर्क से, इस सब के लिए बहुत बड़ी कीमत चुकानी होगी।

यदि कोई इससे आगे देख सके
इन सीमाओं से परे देखो
जीवन की हर चीज़ को संख्याओं में परिवर्तित करना
अगर कोई यह समझ ले कि जीवन को रोका नहीं जा सकता
कि यह सब आपके साथ हो रहा है
और यह वैसे भी होगा
यदि कोई व्यक्ति बैठकर ध्यानपूर्वक निरीक्षण करे

Machine Translated by Google

जो सब पहले से ही दिया हुआ है, छाया
के पीछे भागने के बजाय, यदि कोई प्रतिबिंब देखता है, तो उसे अपने वास्तविक
स्वरूप का एहसास होता है, जो कि जीवन है,
बिना किसी सीमा के।

Machine Translated by Google

धारणाओं के प्रति सचेत रहने की आवश्यकता है
जब आधार बनाने वाली धारणाएं समाप्त हो जाती हैं
तब नश्वरता का एहसास होगा
शब्दों की निरर्थकता का एहसास होगा

क्या यह पूर्ण सत्य है?

मैं नहीं जानता, सत्य और निरपेक्षता की अवधारणाएं भी धारणाएं हैं।

क्या यह अनुभूति स्थायी है?
मुझें नहीं पता।

मुझे कैसे पता चलेगा कि ये उत्तर व्युत्पन्न नहीं हैं?

सिर्फ संचित शब्दों से?
शायद, शायद नहीं। लेकिन बिना कुछ स्पष्ट कहे भी ये शब्द अर्थपूर्ण लग रहे हैं।

क्या यह झूठ है, क्या यह एक झूठ है जिसे अच्छी तरह से जीया गया है?

इसमें कोई 'यह' नहीं है जिसे झूठा बनाया जा सके। जो लिखा है, वही सब है

अवलोकन और तर्क पर आधारित। यह सब बातचीत के लिए खुला है और यह जीवन जीने का कोई पूर्ण नैतिक कोड या जीवन क्या है इसका कोई वस्तुनिष्ठ उत्तर नहीं है।

इन शब्दों को लिखते हुए, मैंने बहुत कुछ मान लिया होगा। लेकिन धारणाएँ अन्य धारणाओं पर सवाल उठाने के लिए बनाई जाती हैं। मुझे दूसरों पर सवाल उठाने के लिए कुछ शब्दों पर खड़ा होना पड़ता है।

Machine Translated by Google

क्या आप इन शब्दों को बिना किसी धारणा के कुछ गुमनाम शब्दों की तरह पढ़ेंगे और देखेंगे कि क्या इनमें कोई अर्थ, कोई मूल्य है। और जीवन में हर चीज़ के लिए ऐसा करें। मूल्य को पहचानें, इसलिए नहीं कि यह कहाँ से आया है, बल्कि आपके लिए मूल्य के वास्तविक अर्थ में। जैसे आपको बिना नाम के एक सेब दिया जाता है और आपको इसका मूल्य तय करना होता है। इसके लिए वास्तविक से सतही चीज़ों को हटाना होगा। जागरूकता की भावना, और यही एकमात्र तरीका है जिससे आप और मैं दोनों ही समान मूल्य, वास्तविक मूल्य, अगर कोई है, पर पहुँच सकते हैं।

Machine Translated by Google

चाहे मैं तुम्हें उत्तर बताऊं या प्रश्न, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह मुझसे आ रहा है या नहीं।

मैं लिख सकता हूँ, लिखता रह सकता हूँ लेकिन अंत में, यह
सिर्फ एक और लिखा हुआ शब्द होगा यह सब एक मूर्खतापूर्ण खोज है एक धारणा है कि हमारी दुनिया आम
है कि कोई और आपके और मेरे दिमाग में
पहाड़ का रास्ता दिखा सकता है

हमारी दुनिया एक हो सकती है
अगर हम दोनों फॉर्म छोड़ दें
और रूप के अनुभवों के लिए एक स्थान और शब्द है, तार्किक अर्थ
में यह वर्तमान है और रोमांटिक अर्थ में

यह प्यार है

लेकिन ये सभी शब्द
हम सिर्फ आपका मनोरंजन कर सकते हैं, यहां
तक कि सारी ऊर्जा के साथ भी ऐसा कोई तरीका
नहीं है जिससे हम एक ही चीज का अनुभव कर सकें, अपने साथ ईमानदारी बनाए रखें और यदि आपके
पास कोई प्रश्न है तो आप उत्तर पर पहुंचेंगे

सवाल कोई मायने नहीं रखता

Machine Translated by Google

लेकिन प्रश्नों पर अड़े रहने वाला व्यक्ति उन्हें कारण और प्रभाव से बंधे हुए अस्तित्व में नहीं छोड़ सकता

अर्थहीन जीवन में आपके लिए
एकमात्र रास्ता आपका रास्ता है और मेरे लिए वह मेरा
रास्ता है

Machine Translated by Google

Machine Translated by Google

# भाग 3

Machine Translated by Google

यह उन चित्रों में नहीं है जो आपको और
मुझे बताई गई कहानियों में है, यह तो जीवन में है

जिसे आप और मैं जी रहे हैं

मैं कहानियों से विकसित उम्मीद के साथ एक
स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करता हूं और यात्रा के दौरान मैं देखता हूं
कि मन खुद के अलावा हर चीज में इसे खोजने की
कोशिश करता है और कहता है 'सब कुछ छोड़ दो, यह सब सतही है'

'लेकिन यह सब कुछ है' जवाब आता है

'क्या आपको यकीन है?'

'हाँ! हमने पूरा मन देखा है और वहाँ
'यह आपके लिए कहानियों से अधिक कुछ नहीं है।'

'क्या कहानियों से परे भी कुछ है?'

'खैर लोगों ने कहा है कि यह है, बुद्ध ने इसे प्राप्त किया।'

'क्या यह भी कोई कहानी नहीं है?'

'यह है।'

Machine Translated by Google

'क्या यह जानने का कोई तरीका है कि क्या यह वास्तव में संभव है, क्या यह कहानी सच्ची है?'

'यह सही नहीं हो सकता। सबसे पहले, हम नहीं जानते कि जो कहानी हम जानते हैं वह सच है या नहीं या यह वास्तव में घटित हुई थी। दूसरा, समय के साथ स्थानांतरित होने पर इसका कितना हिस्सा (यह मानते हुए कि यह एक वास्तविक कहानी है) खो जाता है।

तीसरा, यह सब मान लेने पर भी, शब्दों का अर्थ अपने आप में निरपेक्ष नहीं होता। एक शब्द का अर्थ प्रयोगकर्ता के अनुसार बदलता रहता है। आप इसे किसी भी तरह से देखें, सिद्धार्थ, क्राइस्ट, शिव या ऐसे किसी भी चरित्र की कहानी किसी भी तरह से 'ज़ॉम्बी' या 'हैरी पॉटर' की कहानी से अलग नहीं है।

'यह भी एक कहानी है न?'

'हां यह है।'

'तो फिर इन सबका क्या मतलब है? हम क्यों लिख रहे हैं? हम क्यों सोच रहे हैं?'

'क्या यही मुख्य सवाल नहीं है। मुझे लगता है कि यह सब मनोरंजन है।
मनोरंजन का कोई मतलब नहीं है।
क्या यह।'

'फिर कोई कैसे काम करेगा? हमारे काम इस पर आधारित हैं

Machine Translated by Google

अर्थ।'

'ठीक उसी तरह जैसे कोई बच्चा निरर्थक खेल खेलते समय व्यवहार करता है।'

'लेकिन एक बच्चा ऐसा व्यवहार केवल इसलिए कर सकता है क्योंकि वह मानव प्रणाली द्वारा संरक्षित है।'

'बच्चा दरअसल एक संकेत है, धारणाओं के बारे में एक संकेत। बच्चा एक खाली बर्तन है। समय के साथ, वह जिस माहौल में समय बिताता है, उसके हिसाब से बहुत सी चीजें इकट्ठा करता है। यह पहाड़ की कठोर चट्टानों पर ढीली रेत है। जो रेत हिल सकती है, उसमें संभावनाएँ होती हैं। उस बर्तन के भर जाने और ढीली रेत के कठोर चट्टान में बदल जाने की कहानी, यही एक इंसान की कहानी है। एक बच्चा, रेत बदलाव का, धारणाओं का, अस्थिर चीज़ों का, नश्वरता का संकेत है।'

'यह कहानी जो आप बता रहे हैं, यह धारणाएं, यह नश्वरता, यह सब, इसका प्रमाण क्या है?'

'आप किस तरह का सबूत चाहते हैं?'

'मुझे नहीं मालूम, इसकी पुष्टि कैसे की जा सकती है। आप कह रहे हैं

Machine Translated by Google

कुछ अमूर्त। यह दर्शनशास्त्र जैसा है। क्या इसे दूसरे तरीके से देखा जा सकता है? क्या हम इसे ऐसे शब्दों में कह सकते हैं जिन्हें समझना आसान हो? कुछ ऐसा जो सिर्फ़ दार्शनिक न हो बल्कि वास्तविक, भौतिक अवलोकन हो।

अमूर्त जीवन के लिए कुछ नहीं कर सकता।'

'अगर आप पूछ रहे हैं कि क्या यह कहानी भोजन, पानी या हवा दे सकती है या क्या यह बीमारी को ठीक कर सकती है, तो इसका जवाब है नहीं। लेकिन क्या बस इतना ही है? क्या ये सब पाने वाले लोग शांति से रहते हैं? हमारे समय के मशहूर लोगों को देखिए, जिन्हें रोल-मॉडल माना जाता है और हर कोई बनना चाहता है। कोई ऐसा जो तेज़ दौड़ सकता है, कोई ऐसा जो अच्छा दिखता है, कोई ऐसा जो अच्छी तरह से बात कर सकता है। आपके लिए उन कहानियों का क्या महत्व है?

क्या सवाल सिर्फ जीवित रहने तक सीमित नहीं है? क्या वे कहानियाँ भी दार्शनिक या अमूर्त नहीं हैं?

जब किसी को दूसरों से ज़्यादा महत्व दिया जाता है, सिर्फ़ दिखावे की वजह से। सुंदरता और इस तरह की दूसरी अवधारणाओं का अस्तित्व भी अमूर्त है और यह सब अस्तित्व के लिए कुछ नहीं करता। यह सब क्यों है और यह सब क्या है, यही हम समझने की कोशिश कर रहे हैं।

मानव को समग्र रूप में समझना, उसे आवश्यकताओं और इच्छाओं में विभाजित करके नहीं, बल्कि इन सबके आधार को समझने का प्रयास करना, यदि कोई है।'

Machine Translated by Google

'मुझे लगता है कि अब हम सवाल को स्पष्ट रूप से बता सकते हैं, कम से कम अब तक के शब्दों के आधार पर हम एक दिशा स्पष्ट कर सकते हैं। शायद ये शब्द इधर-उधर जाने के बजाय ज़्यादा उपयोगी होंगे।'

'जवाब शब्दों में नहीं हो सकता। हम सोच-विचार के ज़रिए वहाँ पहुँचने की कोशिश कर सकते हैं और शायद इससे कुछ दिशा, अवरोध दूर करने में मदद मिले, लेकिन रास्ता तो व्यक्ति को ही चलना है। हम ये शब्द साथ-साथ लिख रहे हैं, हमें नहीं पता कि इससे वाकई मदद मिलेगी या नहीं। कोई इससे क्या मतलब निकालेगा। यह शब्दों के ज़रिए बिना किसी दिशा के खोजबीन है।'

'हा हा हा .....खुली बातचीत होना अच्छा है। ऐसा लगता है जैसे आपको जंगल में टेलीपोर्ट कर दिया गया है और अब आपको आस-पास की हर चीज़ को समझना है। कोई उद्देश्य नहीं है, बस एक बुद्धिमत्ता है जो अपने तरीके से समझने की कोशिश कर रही है। क्या हमें सवाल को स्पष्ट रूप से बताने की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए, जो भी सीमित अर्थ में हम कर सकते हैं।'

'क्या सवाल है...हा हा हा। कहां से शुरू करें?
हम्म्म्म... 'जीवन क्या है?' के सवाल के बारे में क्या कहना है? सभी सवाल दरअसल एक ही सवाल हैं, जो अलग-अलग वेश में हैं। बाहरी दिशा के सभी सवाल भीतर की 'जीवन की दिशा' की धारणा पर आधारित हैं।

Machine Translated by Google

मैं'। तो इस अर्थ में सबसे मौलिक प्रश्न और धारणा यह है कि 'प्रश्न कौन पूछ रहा है और वह प्रश्न क्यों पूछ रहा है?'

'यह बहुत जल्दी व्यक्तिगत हो गया। मैं यहाँ इस बात को लेकर सहज धारणा के साथ बैठा था कि मैं कौन हूँ और हर चीज़ को बाएँ और दाएँ वर्गीकृत कर रहा था। बाहरी तौर पर सवाल पूछना बहुत आसान है। हालाँकि, सवाल पूछने वाले से सवाल पूछना समझदारी है, लेकिन मुश्किल यह है कि हम आगे कैसे बढ़ें। अब से मैं जो कुछ भी कहूँगा, वह सब 'मैं' की धारणा पर आधारित होगा। अगर हम जंगल के उदाहरण का इस्तेमाल करें, तो अब तक सब कुछ इस बारे में था कि यह कौन सा पेड़ है, क्या यह जानवर खतरनाक है, क्या खाने योग्य है। और अचानक आपने सवाल पूछने के ढाँचे को उलट दिया और अब हम आगे नहीं बढ़ सकते। सवाल पूछने वाले के लिए खुद से सवाल करना एक अजीब जगह है।'

'यह दिलचस्प है, है न। अगर कोई ईमानदार है, तो इसे देखना और इस स्तर पर पहुँचना आसान है। और हम भी कई बार यहाँ तक पहुँच चुके हैं। समस्या अगले चरण की है, अब एकमात्र मार्गदर्शक प्रकाश - सोच, बुद्धि चली गई है या कम से कम अवधारणा में, कल्पना में चली गई है। अगर यह वास्तव में अनुभव में चली गई होती तो यही उत्तर होता, या कम से कम एक कदम आगे। लेकिन यहीं पर 'तर्क' द्वारा बनाई गई सड़क समाप्त हो जाती है। 'न सोचने' का विचार भी 'सोचना' है।

Machine Translated by Google

विचार की रेलगाड़ी यहीं समाप्त हो जाती है, यह अंतिम स्टेशन है और अब रेलगाड़ी से उतरकर पैदल जाना होगा।
लेकिन किसी तरह हम इस ट्रेन से उतर नहीं सकते।'

'ठीक है, चूँकि शब्द आगे नहीं जा सकते। चलो इस आखिरी स्टेशन पर ट्रेन में ही बैठो और देखो कि यह इतना मुश्किल क्यों है। मुझे लगता है कि इसका मुख्य कारण डर है।

आप कह रहे हैं कि यह एक स्टेशन है लेकिन मुझे वहाँ कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा है। और शुरू से ही हमने यह स्थापित कर लिया था कि यह
वैसे भी यह सब एक कहानी है। मुझे लगता है कि जिज्ञासा की खोज की शक्ति तब बेकार है जब यह सचमुच मौत का सवाल हो। कोई भी जानबूझकर 100% मौत की ओर नहीं जाएगा।'

'तुम सही हो। यह जानबूझकर नहीं हो सकता। यह बिना किसी विकल्प के ही हो सकता है।
जब नदी का बहना स्वाभाविक है, तो वह झरने पर नहीं रुकने वाली। एक पेड़ को सिर्फ़ एक दिशा पता होती है और वह है बढ़ना। अब, क्या पेड़ बढ़ना बंद कर देगा क्योंकि उसे पता है कि एक बार पूरी तरह से पकने के बाद, मनुष्य अपने इस्तेमाल के लिए उसे काट देगा। क्या कोई विकल्प है? जब बात सिर्फ़ अपने होने की हो, तो डर का कोई स्थान नहीं है।'

'हा हा हा .... काफी काव्यात्मक। ईमानदारी से कहूँ तो यह एक अनुकरणीय मॉडल की तरह नहीं लगता। ऐसा लगता है कि बहुत कुछ करने की आवश्यकता है। लेकिन मैं भी आप ही हूँ,
इसलिए मैं वास्तव में जानता हूँ कि आपका क्या मतलब है। और मैं असंभवता भी जानता हूँ

Machine Translated by Google

शब्दों की कमी के कारण ऐसा नहीं हो पा रहा है। वैसे भी जंगल में देर हो चुकी है, इसलिए हमें आराम करना चाहिए।'

'हा हा...तुमने इस रोल-प्ले को बहुत गंभीरता से लिया है। यह थका देने वाला है, लेकिन फिर जीवन भी एक प्रयास है।'

Machine Translated by Google

'अगर मैं तुम्हें कुछ बताऊँ तो क्या तुम सुनोगे? हो सकता है कि इसका कोई मतलब न हो, बस इसे ऐसे सुनो जैसे तुम किसी पक्षी को सुनते हो। जब तुम यह न समझो कि उसका कोई मतलब है।'

'जारी रखें'

'तुम ही संसार हो। यह सत्य है।'

'हम्म'

'आप जो कुछ भी बाहर देखते हैं वह आपका प्रतिबिंब है। बिल्ली, कुत्ता, घोड़ा, पक्षी... यह सब आप में है।
वे आपके अंग हैं। इसी तरह समुद्र, नदी, बादल, अग्नि, सूर्य...ये सभी भी आपके अंग हैं। चेतना जिसके बारे में सचेत है, वह चेतना ही है। दुख तब होता है जब अंग सामंजस्य में नहीं होते, संतुलन में नहीं होते। गाय में महसूस किया जाने वाला डर आपका डर है, कुत्ते को दिया जाने वाला प्यार आपका खुद से प्यार है, बिल्ली की चौकसी आपका ध्यान है, नदी में जो प्रवाह आप देखते हैं वह आपके अंदर चल रहा है, सब कुछ आप ही हैं।'

'मनुष्यों के बारे में क्या? तुमने उनका ज़िक्र क्यों नहीं किया?'

'मनुष्यों के बिना इसे समझना आसान है।

Machine Translated by Google

जाहिर है, हर इंसान जिसे आप देखते हैं वह भी आपका ही हिस्सा है।
यहाँ हमें और गहराई में जाना होगा और समझना होगा कि यहाँ जिस 'आप'
का ज़िक्र किया गया है, वह 'आप' की आम परिभाषा नहीं है। मेरा मतलब है कि
यह 'आप' ही हैं, बस सीमाओं के बिना। इसीलिए मैंने अनजाने में इंसानों को
इसमें शामिल नहीं किया। अब यह एक और विचार यात्रा होगी और यह फिर से पहले
की तरह उसी चक्र में समाप्त होगी।'

'ठीक है, रहने दो। मैंने वादा किया था कि मैं सिर्फ़ सुनूंगा ताकि तुम अपना पक्षी
गीत जारी रख सको।'

'प्यार ऐसी चीज़ है जो सभी तर्कसंगत सीमाओं से परे है। मेरे अंदर का घड़ा भर जाता है और फिर
छलकने लगता है। इसे रोकने का कोई तरीका नहीं है और यही प्यार है। एक बच्चा याक मेरे पास आता
है, थोड़ा डरा हुआ, थोड़ा उत्सुक। मैं चुपचाप खड़ा होकर बस देखता रहता हूँ, निरीक्षण करता हूँ। वह पास
आता है, सूँघता है, चाटता है और फिर एक फूल की तरह खिलता है, उछलता हुआ भाग जाता है, जीवन से
भरपूर, एक घड़ा छलकता हुआ। वह याक वास्तव में मेरा हिस्सा है जो खिल गया।'

'.....'

'यह वाकई दुखद है कि जो जीवन कमल बनने में सक्षम है, जो फूल सीवेज के पानी
में खिलता है। वह जीवन भय के कारण पूरी तरह से बंद हो गया है। यह एक व्यक्ति
की तरह है

Machine Translated by Google

जो भयानक चीजों को देखने के डर से देखने से इनकार करता है। हम एक ऐसे चरण में हैं जहाँ डर ने हमें अपंग बना दिया है और प्यार की ओर जाने के बजाय हम उससे दूर भाग रहे हैं।'

कुछ अभी भी अधूरा लगता है
खुजली
अंतर्ज्ञान की भावना
आंदोलन अभी भी अटका हुआ है
शायद और शायद नहीं का विचार
अभी भी इसे सीमित कर रहा है
हालांकि कोई रास्ता नहीं है
और कुछ भी नहीं किया जा सकता
बस निरीक्षण करें

यहाँ जो कुछ भी लिखा गया है वह एक दृष्टिकोण से विचार को अर्थपूर्ण बनाता है

यह निरपेक्ष नहीं है
यदि हम समझ लें, तो अधिक से अधिक यह उस समय की भावना का सर्वोत्तम संभव संस्करण हो सकता है

अगर यह आपके अंदर हो रहा है, तो यह आपके पास पहले से ही है
जब हम केवल उसी पर ध्यान केंद्रित करते हैं जिसे
शब्दों द्वारा वर्णित किया जा सकता है, तो शब्द ही मिलते हैं

यही वह समय है जब हम इसे खो देते हैं

Machine Translated by Google

उदाहरण के लिए, 'सेक्स क्या है?' या 'नींद क्या है?', इन दोनों प्रश्नों में बहुत सारी धारणाएं हैं

'सेक्स' और 'नींद' शब्द यादों, धारणाओं का बोझ ढो रहे हैं

फिर 'क्या' शब्द है जो यह मानता है कि क्या

उत्तर के रूप में स्वीकार किया जाएगा

एकमात्र प्रश्न जो शब्दों में काम कर सकता है वह है 'मैं कौन हूँ?'

लेकिन फिर हम फिर से 'प्रश्न जो स्वयं प्रश्न है' वाली जगह पर अटक जाएंगे

'तो जब तक हम उस प्रश्न का उत्तर नहीं देते, तब तक कोई अन्य प्रश्न पूछने का कोई मतलब नहीं है?'

'आप पूछ सकते हैं लेकिन इस समझ के साथ कि सब कुछ धारणा पर आधारित है। यह
ऐसा है जैसे हर किताब जो मूल प्रश्न का उत्तर नहीं देती है, उसे एक अस्वीकरण के साथ शुरू करना
चाहिए कि जो कुछ भी लिखा गया है वह सब सच है।

"यह धारणाओं पर आधारित है और उन धारणाओं को स्पष्ट रूप से बताएं। हर संविधान, धर्म की किताब,
पौराणिक कथाओं की किताब, हर विज्ञान की किताब, हर डॉक्यूमेंट्री, समाचार... कोई भी चर्चा इसी से शुरू
होनी चाहिए।"

'यह शाब्दिक अर्थ में तो सही है, लेकिन व्यावहारिक रूप से क्या इससे लिंग जैसे तात्कालिक प्रश्नों का
समाधान नहीं निकलेगा?

Machine Translated by Google

असमानता, गरीबों का शोषण, जलवायु परिवर्तन आदि। क्या दर्शन वास्तव में एक विशेषाधिकार नहीं है?'

'चर्चा और गर्व की मानसिक उत्तेजना के लिए किया गया दर्शन विशेषाधिकार है। अगर हम वाकई गहराई में जाना चाहते हैं और इन सभी मुद्दों को हल करना चाहते हैं, न कि केवल उनके स्वरूप को बदलना चाहते हैं बल्कि वास्तव में उन्हें हल करना चाहते हैं, तो मानव जाति के लिए एकमात्र तरीका यह है कि वह मौलिक प्रश्न को संबोधित करे। अब इसका मतलब यह नहीं है कि 'जब तक आपको पूरी स्पष्टता न हो, तब तक कुछ न करें' बल्कि कार्रवाई के साथ-साथ विनम्रता रखना है कि हम गलत हो सकते हैं। यह विनम्रता प्रेम और करुणा का मार्ग प्रशस्त कर सकती है, जिससे अधिक सहिष्णु, खुली दुनिया में सही और गलत का बोझ कम भारी हो सकता है।'

'इसे हम आदर्श दुनिया, स्वप्नलोक कहते हैं। मुझे लगता है कि हम बहुत पहले ही उस रास्ते से भटक चुके हैं और ऐसी किसी चीज़ के बारे में बात करने का कोई मतलब नहीं है जो व्यावहारिक रूप से संभव न हो।'

'यह वह भावना है जो मैंने बनाई है और मेरे अनुसार शांति का एकमात्र रास्ता है। अगर हम वास्तव में कुछ करना चाहते हैं तो प्रेम और खुलापन मुख्य तत्व हैं। अगर हर कोई सहमत हो, तो यह हो सकता है। हालांकि यह अंदर से आना चाहिए, बाहरी ताकत ही काम आएगी

Machine Translated by Google

इसे और भी बदतर बना दो। वैसे भी जीवन से स्थायी रूप से हासिल करने के लिए कुछ भी नहीं है।'

इस कहानी सहित हर कहानी को
त्याग दो, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता
कि तुम कितनी ख्वाहिश रखते हो, किसी और की दुनिया कभी तुम्हारी
नहीं हो सकती

सेकंड हैंड कहानियां खरीदना बंद करें और जो आपके पास
है उसे जीना शुरू करें

हर झूठ जो आप जीएंगे, आपके अंदर एक उलझन
पैदा कर देगा, खुद में बंधा हुआ है वह जीवन
जिसे आप जीना चाहते हैं

Machine Translated by Google

तुम बनाम मैं का कोई अंत नहीं है

नफरत ख़त्म नहीं होगी
इससे आपको भी उतना ही नुकसान होगा जितना दूसरों को

शब्द अंदर तक पहुंचना बंद हो गए हैं
वे उथले, खोखले हो गए हैं
लेकिन अगर किसी तरह ये शब्द
आप तक पहुंच गए
न केवल गणनाशील दिमाग के लिए बल्कि दिल के लिए भी
तो अपने जीवन को प्यार से भरने की कोशिश करो
नफरत करने के बजाय

भय प्रेम की गति को रोकता है
उपलब्धियां, स्वामित्व सीमाएं प्यार
क्या आपको लगता है कि विनाश, मौत, दर्द सिर्फ किसी नफरत करने वाले व्यक्ति के कारण होता है?
यह समान रूप से किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा भी होता है जो इस बात पर बहुत अधिक आश्वस्त है कि वह अच्छे काम कर रहा है
खलनायक सिर्फ बाहर नहीं हैं
यह आपके अंदर है
अज्ञानता ने हमें अंधा कर दिया है

'आपके अनुसार, यदि हम धारणाओं में जीते रहेंगे, बिना यह स्पष्ट किये कि ये सब क्या है - जीवन, मानव, मृत्यु, समय, प्रश्न - तो क्या होगा?'

Machine Translated by Google

'कोई भी व्यक्ति भविष्य की भविष्यवाणी नहीं कर सकता, लेकिन विज्ञान की तरह हम कुछ दिशा का अनुमान लगा सकते हैं। तर्क के अनुसार, केवल मृत्यु ही जीवन का मार्ग प्रशस्त कर सकती है। रात के जन्म के लिए दिन मरता है, समुद्र के जन्म के लिए नदी मरती है... एक तरह से यह सब परिवर्तन है। इसी तरह, ज्ञान के जन्म के लिए अज्ञान को मरना पड़ता है, या तो इसे छोड़ दिया जाएगा या इसे छीन लिया जाएगा। केवल सत्य ही स्थायी है।'

'आप जानते हैं कि हम भूमिका निभा रहे हैं, लेकिन हम जो कह रहे हैं वह बहुत गंभीर बात है। हा हा हा... हमें यह भी नहीं पता कि यह किसी को समझ में आ भी रहा है या नहीं।'

'हम बस इतना ही कर सकते हैं, अपना जवाब साझा कर सकते हैं। उसके बाद कोई इसे कैसे या कैसे समझता है, यह सब हमारे हाथ में नहीं है।'

'जीवन बहुत जटिल होते हुए भी बहुत सरल हो सकता है'

'ऐसा लगता है जैसे जीवन शून्य है, एक व्यक्ति जो खुद को गिनती से पहचानता है वह वही करने की कोशिश करेगा जो वह कर सकता है। उसे कुछ करने की ज़रूरत नहीं है। आप जानते हैं कि भले ही शब्द समझ में न आएं, लेकिन प्यार/अनुभव अभी भी भेद सकता है।'

Machine Translated by Google

जीवन और मृत्यु का प्रश्न
वह जो जानता है वह स्वयं है
जो वह जान सकता है वह स्वयं है

अगर आप इसे जीवन कहते हैं, तो केवल जीवन ही है
जन्म और मृत्यु नहीं है

मूलतः जो है उसके ऊपर
बाकी सब तो उसके अस्तित्व का तरीका है
रास्ता, मतलब निर्माण है

जन्म और मृत्यु को संसार के सापेक्ष परिभाषित किया जाता है
माना जाता है कि यह हमेशा वहां रहता है
लेकिन जो दुनिया वहां है
'आप + बाकी सब' का योग अस्तित्व का एक और तरीका है

वह दुनिया तुमसे पहले भी अस्तित्व में थी
और यह तुम्हारे बाद भी अस्तित्व में रहेगा
समय का यह बोध
यह भी एक मौजूदा का हिस्सा है

'मुझे विचारों पर बहुत सारे अवलोकन मिल रहे हैं, वास्तव में हमें उस क्षेत्र में बहुत सारे शब्द मिल रहे हैं
जो विचारों, विचारों के नियंत्रण, विधियों और युक्तियों से संबंधित चीजों में कुछ व्यवस्था बनाने में मदद कर रहे
हैं।'

Machine Translated by Google

'ठीक है, देखते हैं कि अब तक हम क्या समझ पाए हैं।
मन नामक एक अमूर्त इकाई है, जिससे विचार नामक एक और अमूर्त इकाई उत्पन्न होती है। ऐसा लगता है कि सभी क्रियाएँ इसी 'विचार' पर आधारित हैं। यही मन और विचार के खेल की अस्पष्ट स्थापना है।

चलिए आगे बढ़ते हैं। विचार की गति या विचार का काम करना परिस्थितियों पर आधारित है। पहली शर्त है तर्क या तर्कसंगतता। यह 'कारण और प्रभाव' की मूल अवधारणा है। इसे द्वैत के रूप में भी देखा जा सकता है और यहीं से समय की अवधारणा आती है। जैसे मूर्त वस्तु अंतरिक्ष में गति करती है, वैसे ही अमूर्त वस्तु समय में गति करती है। यह सबसे बुनियादी गति की तरह लगता है

'समय ए से समय बी तक विचार की प्रक्रिया। हम इस पर आगे काम कर सकते हैं लेकिन पहेली को एक साथ लाने के लिए इसमें अभी भी कुछ अंतराल हैं।'

'कुल मिलाकर, ऐसा लगता है कि विचार की समस्याएँ विरोधाभास से आती हैं। जब यह खुद को चुनौती देता है। सबसे पहले, मुझे लगता है कि नैतिकता होनी चाहिए, ईमानदारी का अभ्यास किया जाना चाहिए और फिर मैं उस पर काम नहीं करता क्योंकि यह मुश्किल हो सकता है, इच्छा, कंडीशनिंग या किसी ऐसे कारण से। यह इच्छा कि केक खाया जाए और उसे भी रखा जाए, यहाँ और वहाँ दोनों जगह रहना, मन को आदतों में प्रशिक्षित करना और फिर आदत को तोड़ने की कोशिश करना।

Machine Translated by Google

यदि किसी विचार को शक्ति, अधिकार, महत्व दे दिया जाए तो वह एक मशीन की तरह है, वह अपनी स्वीकृत प्रारंभिक स्थितियों के आधार पर, स्वतः ही उसका उपयोग करेगा।'

सत्य एक ही है। इसके अलावा जो कुछ भी लिखा, बताया, सिखाया जाता है, वह सब मानव में व्यवस्था बनाने का प्रयास है।

यह आदेश अस्थायी है जिसे बार-बार दोहराना पड़ता है।

'क्या हम वाकई ईमानदार हैं? हम ये सब बातें कह रहे हैं, खुद को श्रेष्ठ दिखाने की कोशिश कर रहे हैं जैसे कि हम सब कुछ जानते हैं। मुझे नहीं पता, कहीं न कहीं यह गलत दिशा में जाने जैसा लगता है।'

'आप सही कह रहे हैं। और मैं ऐसा यूं ही नहीं कह रहा। असल में यहां जो कुछ भी लिखा गया है, वह सब बकवास हो सकता है। इसलिए संदेह के साथ तर्क हमें ईमानदार बनाए रख सकता है।

अगर जो लिखा गया है, उसमें सिर्फ़ लिखने वाले की पृष्ठभूमि की कहानी की वजह से जान है, तो शब्दों को सही मायने में समझा नहीं जा सकता। यह सब लिखने का मेरा प्रयास है कि मैं ईमानदार रहूँ और दुनिया को जिस तरह से देखता हूँ, उसका वर्णन करूँ।'

'अतः सभी उत्तर मनगढ़ंत हो सकते हैं या हो सकता है कि सभी उत्तर व्यक्तिपरक हों और केवल हमारे लिए ही काम करते हों।'

Machine Translated by Google

'यह बहुत संभव है कि उत्तर किसी बिंदु पर विफल हो जाएं। ये शब्द पाठक के साथ बातचीत हैं।

साथ मिलकर खोज करने के लिए बातचीत, न कि सत्य की एकतरफा घोषणा। और उत्तरों की व्यक्तिपरक प्रकृति के लिए, मैं 100% सहमत हूँ। सभी उत्तर हमारे अपने प्रश्नों से संबंधित हैं।'

'मैं हम दोनों की ओर से संक्षेप में बताना चाहता हूँ।

वर्तमान क्षण में, हमारे पास शांति है और कुछ उत्तर हैं।

हम इस बात को लेकर आश्वस्त नहीं हैं कि क्या उत्तर निरपेक्ष है, क्या यह स्थायी है और क्या यह वस्तुनिष्ठ है।'

'यह वास्तव में एक ईमानदार चर्चा में शामिल होने का प्रयास है। चर्चा की निरर्थक प्रकृति पर चर्चा करना। यह देखना कि क्या हम सभी के बीच कोई सामान्य आधार है। शब्द अर्थ के वस्त्र की तरह होते हैं, अर्थ जो शरीर है, पदार्थ है और अर्थ अनुभव में निहित है।'

'शब्दों को वस्त्र और अर्थ को शरीर के रूप में देखना अच्छा है... या शायद नहीं भी, क्योंकि अर्थ आदर्शतः अमूर्त होना चाहिए।'

'हम नकल की दुनिया में जी रहे हैं। किसी ने समुद्र को देखा और उसका वर्णन करने के लिए शब्दों का इस्तेमाल किया, वे शब्द समुद्र नहीं हैं। अब लोग शब्दों की नकल करने की कोशिश करते हैं,

Machine Translated by Google

कपड़े, बाहरी। वे दूसरों द्वारा देखी जा सकने वाली चीज़ों की नकल करते हैं, जिन्हें साझा किया जा सकता है, जिनका स्वामित्व हो सकता है। शब्द का स्वामित्व हो सकता है, इसका कॉपीराइट हो सकता है लेकिन शब्द जिस ओर इशारा कर रहे हैं, उसका स्वामित्व नहीं हो सकता। हम शब्दों को याद करते हैं, यह किसी के कपड़ों की नकल करने जैसा है। क्या हम किसी के दिखने के तरीके की नकल करके कोई बन सकते हैं? यह किसी की नकल करने, वास्तविक जीवन के चरित्र का अभिनय करने और यह सोचने के अलावा और कुछ नहीं है कि नकल करके उसने वह सब कुछ जान लिया है जो वास्तविक व्यक्ति जानता था।

दुख की बात है कि हमारे पाखंड के कारण हम अभिनेता को अधिक महत्व देते हैं, हम वास्तविकता की परवाह नहीं करते, हम बस कुछ शॉर्टकट चाहते हैं। जिसने वास्तव में समुद्र देखा है, वह शब्दों का गुलाम नहीं होगा। जैसे समुद्र अनंत है, वैसे ही इसका वर्णन करने के भी अनंत तरीके हैं। जिसने देखा है कि जीवन एक रंगमंच है, वह मुख्य अभिनेता बनने की कोशिश नहीं करेगा, उसे पता है कि वह एकमात्र पात्र है।'

'कोई कैसे जान सकता है कि यह नकल है? यह नकली नहीं है।
संभव है कि सही हो। हमने इस पर पहले भी चर्चा की है।'

'तार्किक रूप से यह असंभव है। हालांकि अनुभव और तर्क इसे छान सकते हैं। कोई कैसे जान सकता है कि यह असली पक्षी है या कंप्यूटर में कोई आवाज़, कोई कैसे जान सकता है कि यह सूरज की रोशनी है या ट्यूबलाइट की रोशनी, कैसे जान सकता है कि यह सूरज की रोशनी है या ट्यूबलाइट की रोशनी,

Machine Translated by Google

क्या पता ये फूल है या खुशबू

इत्र। इसे इससे अधिक समझाना कठिन है क्योंकि हम पहले ही तर्क से दूर जा चुके हैं।'

'यहाँ समस्या यह है कि हमने असली फूल को नहीं देखा है और न ही उसका पूरा अनुभव किया है। क्या यह किसी ऐसे व्यक्ति के लिए असंभव नहीं होगा जिसने असली पक्षी का अनुभव नहीं किया है, यह बताना कि असली पक्षी की आवाज़ क्या है और स्पीकर से क्या आ रही है।'

'अब हम वास्तविक समस्या पर पहुंच गये हैं।

अगर हम इस निष्कर्ष पर भी पहुंच जाते हैं कि यह असंभव है, तो हम सब कुछ एक तरफ रखकर उत्तर खोजने का प्रयास कर सकते हैं। कम से कम, हम यह तो देख ही सकते हैं कि कुछ गड़बड़ है। कि दुकानों में अध्यात्म या किसी और नाम से उत्तर बेचना संभव नहीं है। कि उत्तर कभी भी किसी से नहीं मिल सकता।

बाहर।'

'मन पर नियंत्रण' वाक्यांश को गलत समझा गया है। सबसे पहले, यह मानता है कि कोई और चीज़ है जो 'मन' कहे जाने वाले को नियंत्रित करने की कोशिश कर रही है। क्या यह मन ही नहीं है जो खुद को नियंत्रित करने की कोशिश कर रहा है। मेरे अनुसार 'मन पर नियंत्रण' की जगह 'मन को समझना' होना चाहिए।

एक बार जब आप समझ जाते हैं कि यह कैसे चलता है, क्यों चलता है, कोई विशेष विचार इतना शक्तिशाली क्यों लगता है, कैसे

Machine Translated by Google

एक खास विचार उठता है और चला जाता है। यह समझ मन की पूरी तस्वीर देखने में मदद करेगी। एक बार जब यह खुद को समझ लेता है, एक बार जब इसकी संरचना, व्यवस्था का एहसास हो जाता है, तो यह खुल जाएगा और 'मन पर नियंत्रण' का सवाल खत्म हो जाएगा।

'क्या तुम्हें याद है जब हमने बात की थी कि चेतना किस बात के प्रति सचेत है?
, स्वयं है और
'जिस चीज के बारे में वह सचेत है, क्या वह उसका अपना हिस्सा है?'

'मुझे याक वाला वाला याद है। वह बहुत काव्यात्मक था। लोल'

'उसी स्थापना का उपयोग 'कर्म' और पुनर्जन्म की अवधारणा को स्पष्ट करने के लिए किया जा सकता है .....
.....हमें ऐसा नहीं करना चाहिए। हा हा हा। शब्द हैं बेकार।'

'अचानक क्या हुआ?'

'इस तथ्य का पुनः बोध कि 'मैं नहीं जानता'... हर शब्द और हर भाव निरर्थक लगता है।
कुछ तो है और हम शब्दों के ज़रिए उसे समझने की कोशिश कर रहे हैं लेकिन उसे समझने की पूरी कोशिश, यह सब बहुत अस्थायी है। किसी ऐसी चीज़ में इतनी ऊर्जा खर्च करना जो बुनियादी भी नहीं है और सिर्फ़ वर्तमान समय के इर्द-गिर्द घूमती है, समय जो बदल सकता है

Machine Translated by Google

हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि भले ही हम मन, विचार, चेतना के बारे में चर्चा कर रहे हों... ये सब सिर्फ़ शब्द हैं/

वे वास्तव में जो है, उसके उत्पाद हैं।
मान्यताओं का उपयोग करके परिभाषित उत्पाद। हम इन पर चर्चा नहीं कर रहे हैं क्योंकि सत्य को इसकी आवश्यकता है। वास्तव में, यह विपरीत है, इन सभी अवधारणाओं को त्यागने की आवश्यकता है और एकमात्र तरीका इसे समझना और इसे जाने देना है। मैं अपने सामने नदी को बहते हुए देखता हूँ और कोई भी शब्द इसका कोई अर्थ नहीं निकाल सकता। इसे किसी इंसान द्वारा गढ़ी गई किसी भी चीज़ से नहीं पकड़ा जा सकता।'

Machine Translated by Google

मनुष्य होने के नाते हम
दिन और रात दोहराव के पिंजरे में बंधे रहते हैं,
और दिन फिर भूख और भोजन, और भूख फिर
समस्या और समाधान, और समस्या फिर जीवन और मृत्यु, और
फिर जीवन

समय से थक गया
नयेपन की तलाश में एक बार जो मिल
जाए, वह चला जाता है, चक्कर काटते रहने का
अभिशाप चलता रहता है।

समस्या केवल एक है, कोई धूम्रपान करता है
और यह चला जाता है, केवल वापस आने के लिए, कोई पदोन्नति पाता है और यह
चला जाता है, केवल वापस आने के लिए, अस्थायी समाधान

क्या वहाँ आज़ादी है
क्या इसका कोई स्थायी समाधान है क्या हम वास्तव
में ऐसा पूछ रहे हैं

....
हम लाइट बंद नहीं करेंगे तो तारे कैसे देखेंगे?

विरोधाभास यह है

Machine Translated by Google

एक व्यक्ति टॉर्च से प्रकाश देखने का प्रयास कर रहा है
कुछ सुनने के लिए बोलना बंद करना पड़ता है
क्या आप बोलकर सुन सकते हैं

'देखने का तरीका देखना नहीं है। देखने का तरीका यह है कि आप एक चोटी पर खड़े हों और चारों ओर देखें। आपने चारों ओर देखा लेकिन क्या आपने वह स्थान देखा जिस पर आप खड़े थे। एक धारणा है। एक स्थान जो अंधेरा है, जिस पर ध्यान नहीं दिया जाता।'

'क्या यह फिर से विरोधाभास नहीं है? यह समझ में आता है, लेकिन इससे कैसे निपटा जाए?'

'दो दिशाएँ हो सकती हैं। आधार यह है कि एक
एक तस्वीर होती है, एक छवि होती है जिसे कोई खोज रहा होता है, जैसे कि एक तस्वीर के साथ कुत्ते की खोज करना। दूसरी संभावना यह है कि किसी के पास कोई छवि नहीं होती, यह बिना किसी उम्मीद के नए की खोज होती है कि क्या मिलेगा।

पहले मामले में, चूँकि किसी के पास एक छवि है, इसलिए उसे उस पर पूरा भरोसा रखना चाहिए और देखने वाले को जाने देना चाहिए। अगर कोई बिना छवि के देख रहा है, तो उसके साथ चलें, यह एक नई खोज होनी चाहिए और उसे जोखिम उठाने में सक्षम होना चाहिए और खोज करने वाले को जाने देना चाहिए।

दोनों ही मामलों में, ऐसा लगता है कि यह मान लिया गया है कि कार्य को पूरा करने के लिए आधार की आवश्यकता होगी।'

Machine Translated by Google

'एक तरह से, यह एक आस्तिक का खुद के प्रति सच्चा होना और बिना किसी संदेह के उस पर पूरी तरह से विश्वास करना है। इस बात पर 100% विश्वास करना कि जो विश्वास करने वाला है, आस्तिक, उसके सामने कुछ भी नहीं है।

दूसरा है खोजकर्ता, जो केवल अनुभव पर भरोसा करता है, विश्वास पर नहीं, उसे मूल रूप से खोजकर्ता बनना चाहिए और 100% अंधकार में कूद जाना चाहिए, सब कुछ जोखिम में डालना चाहिए, खोज करने वाले को छोड़ देना चाहिए।

संक्षेप में, हम कह सकते हैं कि यह अपने प्रति सच्चा होना है। अपने शुरूआती बिंदु के प्रति सच्चे रहना और चाहे जो भी कीमत हो, उसे पूरा करने से न डरना।'

'अगर काम यह है कि देखने वाले को छोड़ दिया जाए, 'मैं' की जागरूकता को। फिर तार्किक रूप से अगर हम 'मैं' के पूरे स्पेक्ट्रम को एक अकाट्य स्थिति में लपेटते हैं और फिर 'मैं' को उस स्थिति का सामना करने देते हैं जिस पर वह आधारित है।

तर्क के आधार पर 'मैं' वाले से प्रश्न करने पर, प्रश्न घूमकर वापस आएगा और प्रश्न करने वाले 'मैं' पर प्रश्न उठाएगा।'

मैं इसे फिर से दोहराता हूँ और हम इस पर चर्चा कर सकते हैं - केवल एक ही सत्य हो सकता है। हम इसके व्यक्तिपरक वर्णन के बारे में बात नहीं कर रहे हैं, बल्कि इसकी वस्तुनिष्ठ प्रकृति के बारे में बात कर रहे हैं। और हम 90% सत्य या 99% सत्य की बात नहीं कर रहे हैं, यह सत्य है और सत्य नहीं है। तर्क को मानकर, द्वैत को मानकर, सत्य और असत्य को मानकर, शुरू करें

Machine Translated by Google

और अंत, कारण और प्रभाव... हम एक बात के बारे में निश्चित हो सकते हैं, एक सत्य, एक शुरुआत, एक कारण होना चाहिए। कई शुरुआत नहीं हो सकती, नहीं तो यह शुरुआत नहीं है, इसके पीछे कुछ है।

यदि तर्क को आधार माना जाए तो मनोविज्ञान का सत्य, भौतिकी का सत्य, गणित का सत्य, बौद्ध धर्म का सत्य नहीं हो सकता... यह सब सैद्धांतिक रूप से एक बिंदु पर एकत्रित हो जाएंगे।

यह कथन तर्क की धारणा पर आधारित है। तर्क जो भाषा और किसी भी विचार प्रणाली का आधार है।
तर्क ही बातचीत करने, चर्चा करने और आम सहमति पर पहुंचने का एकमात्र तरीका है।
कोई व्यक्तिगत उत्तर नहीं बल्कि वस्तुनिष्ठ उत्तर।

Machine Translated by Google

यदि कोई अतीत नहीं है, तो कोई भविष्य भी नहीं है

अगर पाने को कुछ नहीं है और खोने को भी कुछ नहीं
यदि सब कुछ 'क्या है'

आप कैसे होंगे?

क्या आप तंग, खिंचे हुए, न्याय करने वाले, घृणा करने वाले, जोर से बोलने वाले, सुरक्षात्मक, चिंतित होंगे
या आप सौम्य, मुक्त, अवलोकनशील, प्रेमपूर्ण, शांतिपूर्ण, खुले और शांत रहेंगे

अब भले ही हमने इसे पूरी तरह से महसूस नहीं किया है

क्या हमारे पास दिन में, जीवन में ऐसे क्षण नहीं हो सकते और क्या हमारे पास दिन में, जीवन में ऐसे क्षण नहीं होते

जब आप बस सहजता से
क्या है में

'मुझे आश्चर्य है कि क्या ये सब, ये बौद्धिक प्रकार के शब्द और अमूर्त अवधारणाएँ, ये किताबें, ये सब, वास्तव में महत्वपूर्ण हैं। जब मैं किसी ऐसे व्यक्ति से बात करता हूँ जिसका जीवन केवल घर वापस भेजने के लिए पैसा कमाना है, तो ये सब बहुत निरर्थक लगता है। क्या आप समझते हैं। उनके लिए इन सबका क्या उपयोग है।'

'मैं समझता हूँ कि आप क्या कहना चाह रहे हैं। और यह एक वैध टिप्पणी है, क्योंकि कुछ लोग वीआईपी कमरों में बैठकर यह तय कर रहे हैं कि किसी व्यक्ति को किस तरह से जीवन जीना चाहिए, जिसका आपने ऊपर उल्लेख किया है। क्या आपको आश्चर्य है कि ऐसा क्यों है?

Machine Translated by Google

इस तरह की स्थिति सबसे पहले आती है, जहाँ एक व्यक्ति के पास प्रश्न करने का समय नहीं होता और दूसरे के पास बौद्धिक विचार करने के अलावा कुछ और करने को नहीं होता। इन सबका मूल एक ही है और वह है सीमित संसाधन और

सीमित पहुंच के कारण, किसी भी और हर धारणा पर सवाल उठाया जाना चाहिए।'

'लेकिन इससे उस व्यक्ति के लिए कुछ भी नहीं बदलेगा।'

'हो सकता है कि इससे किसी के लिए कुछ भी न बदले। या हो सकता है कि यह मानव चेतना को हमेशा के लिए बदल दे।'

'आपको नहीं लगता कि इन सबके बारे में सोचना श्रेष्ठ है और अगर कोई इन सबके बारे में न पूछे तो यह निकृष्ट है।

'इन सवालों पर इतना समय खर्च करो।'

'कोई भी चीज़ श्रेष्ठ या निकृष्ट नहीं है। हर चीज़ और हर कोई अपनी भूमिका निभा रहा है।'

'विचार की इस खोज को देखना अजीब और दिलचस्प है...लोग मंगल ग्रह तक पहुंचने की कोशिश कर रहे हैं, सबसे कठिन बीमारियों का इलाज कर रहे हैं, कला के नए रूप, नए तरीके/

शासन प्रणाली और वह सब। और दूसरी ओर कोई व्यक्ति भोजन उगा रहा है,

Machine Translated by Google

किसी कारखाने में मशीन के यांत्रिक भाग, माल और लोगों का
परिवहन। यदि आप खुले तरीके से देखें, तो यह सब जुड़ा हुआ है, फिर भी एक
पदानुक्रम है जिसमें विचार और नए को अधिक महत्व दिया जाता है।'

'और अधिकांश लोगों के मन में इस पदानुक्रमिक दृष्टिकोण के कारण, मृगतृष्णा/भ्रम को उसके निर्माण के तरीके से तोड़ना महत्वपूर्ण है। जब गणित, तर्क, विज्ञान, प्रयोग, विचार में मॉड्यूलर संरचना, और सभी उप-भाग... यह सब हमारे समय का स्वीकृत तरीका है, तो विचार की एक प्रणाली को क्रॉस-चेक करने का एकमात्र तरीका इसे स्वयं पर लागू करना और यह देखना है कि कोई विरोधाभास नहीं है।'

'क्या यह कहना निष्कर्ष पर पहुँचने वाली मृगतृष्णा नहीं है। क्या भ्रम है और क्या वास्तविकता है? क्या यह सब विचार या ऐसा ही कुछ नहीं है?'

'तत्त्व सत्य है, अर्थ भ्रम है।
इससे ज़्यादा गहराई में जाना मुश्किल होगा क्योंकि हम शब्दों के खेल में फंस जाएंगे। मैं इसे एक उदाहरण के रूप में बताता हूं, जो वास्तविक है वह 'जो है' है, इससे अतीत समाप्त हो जाता है जो सिर्फ़ स्मृति है और भविष्य जो एक प्रक्षेपण है। अब 'जो है' में कोई कुछ अनुभव करता है, वह अर्थहीन अनुभव वास्तविक है।

यदि कोई पहाड़ देखता है, तो वह बिना किसी अवधारणा के

Machine Translated by Google

पहाड़ असली है। यह उदाहरण इतना सोचा-समझा नहीं है, इसलिए इसे शाब्दिक रूप से न लें। यह सिर्फ़ यह दिखाने के लिए है कि पदार्थ और अर्थ से मेरा क्या मतलब था।'

'प्यार क्या है? क्या यह सच्चा है?'

'प्रेम क्या है
यह तब होता है जब इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि असली क्या है
जब मन की सीमा हट जाती है और अनंत असीम हो जाता है

जब कोई सीमित पहचान हटा देता है, तब सब कुछ आप ही होते हैं

प्यार वो है जिसे रखने की जरूरत नहीं
इसे बनाए रखने के लिए प्रयासों की आवश्यकता नहीं है
यह वह है जो ढूंढ़ने से नहीं पाया जा सकता
यह अपने आप आ जाएगा

यह सशर्त नहीं है
यह दिशात्मक नहीं है
जैसे सूरज रोशनी देने के लिए जल रहा हो
यह बस प्रकाश देता है, बिना किसी शर्त के कि इसे कौन प्राप्त करेगा

प्रेम वह है जो एक मनुष्य हो सकता है।'

Machine Translated by Google

'कोई बिना शर्त के कैसे प्यार कर सकता है? इसका मतलब है किसी ऐसे व्यक्ति से प्यार करना जिसने जघन्य अपराध किए हों।'

'हमने यहां एक बहुत ही संवेदनशील चीज को छुआ है।
नैतिकता, सही और गलत, अपराध और निर्णय का क्षेत्र। आइए सबसे पहले आधार को स्पष्ट करें।
अपराध और उसकी डिग्री, सही और गलत के नैतिक कोड पर आधारित है। तो आइए सबसे पहले चर्चा करें कि सही और गलत क्यों है। सही और गलत कहाँ निहित है - इरादे में या कार्रवाई में?'

'हत्या करना गलत माना जाता है, लेकिन आत्मरक्षा में हत्या करना तथा पुलिस और न्यायपालिका द्वारा हत्या करना भी स्वीकार्य है।
आत्महत्या, भूख और गरीबी, कारखानों से फैलने वाली बीमारियों, युद्धों, धर्म के नाम पर होने वाली अप्रत्यक्ष हत्याओं की तो बात ही छोड़िए... ऐसे कई प्रकार की हत्याएँ हैं जिन्हें स्वीकार किया जाता है और न केवल स्वीकार किया जाता है बल्कि उन्हीं लोगों द्वारा इसकी मांग की जाती है जो कहेंगे कि 'हत्या गलत है'। तो इस अर्थ में, मुझे लगता है कि यह इरादों की बात है, न कि कार्रवाई की।'

'क्या आप सही और गलत की इस अवधारणा की समस्याओं को समझ रहे हैं? इरादे बहुत अस्थिर होते हैं। यह जानना संभव नहीं है कि यह व्यक्तिगत पसंद है या फिर यह आसपास के माहौल द्वारा दिमाग में डाला गया है। कुछ मायनों में हम

Machine Translated by Google

सभी परिस्थितियाँ परिवेश से प्रभावित होती हैं। अगर बचपन से ही दिमाग में बैठा बच्चा कोई अपराध कर दे तो कौन जिम्मेदारी लेता है। अज्ञानता का एक और पहलू है - एक बंदूक कारखाने में काम करने वाला एक कर्मचारी और उन बंदूकों का इस्तेमाल नरसंहार के लिए किया जाता है, या उस समय की अधूरी जानकारी के साथ पुल का निर्माण करना जिससे दुर्घटना हो जाती है।

क्या आप देखते हैं कि सही/गलत का दर्पण कैसे धुंधला हो जाता है?

'मुझे लगता है कि आप जो इशारा कर रहे हैं वह क्रियान्वयन की असंभवता है। सही/गलत की मौलिक अवधारणा के बारे में क्या?'

'ऐसा लगता है कि यह उसी का विस्तार या दूसरा रूप है
वांछनीय और अवांछनीय के संदर्भ में मन का द्वंद्व। किसी विशेष इरादे की सामूहिक
अवांछनीयता फिर धीरे-धीरे अधिक कठोर सही/गलत में बदल जाती है।'

वह अपराधी कभी मासूम बच्चा था, बिल्कुल वैसा ही जैसा कि जज के रूप में बैठा हुआ, वकील के रूप में बैठा हुआ, लिखने वाला और पढ़ने वाला। मैं कौन होता हूँ यह तय करने वाला कि उस बच्चे को किस तरह से एक ठंडा, आत्म-केंद्रित, हिंसक, कट्टरपंथी व्यक्ति में बदल दिया गया। क्या यह उस बच्चे की गलती है या हमारी? एक बच्चा जो असीम प्यार करने में सक्षम है, वह कैसे एक मासूम बच्चे के रूप में बड़ा होता है?

Machine Translated by Google

वह वयस्क जो प्रेम से दूर भागता है, जो प्रेम से घृणा करता है।

क्या हमें इस बात पर गहराई से विचार नहीं करना चाहिए कि ऐसा क्यों होता है?

क्या हमें कहीं न कहीं संदेह और अपराध बोध नहीं होना चाहिए?

समस्या बहुत गहरी है। इसे सही/गलत के आकर्षक आवरण से ढकने से यह दूर नहीं होगी। क्या हम इसके बारे में तभी सोचेंगे जब इसका खामियाजा हमें भुगतना पड़ेगा?

Machine Translated by Google

जीवन कहां है?

क्या यह 9 से 5 तक लगन से काम करने में है? क्या यह रैप, सूफी,
पॉप सुनने में है? क्या यह आध्यात्मिक संस्थानों में प्रवेश लेने में है?
या क्या यह वास्तविक या नकली समस्याओं को लगातार हल करने में है?

'मैं' का एक जार खाली है लेकिन
शून्यता से भरा हुआ है, बस 'मैं' का जार, मैं की चेतना का जार

लोग आते हैं और जो कुछ डाल सकते हैं डाल देते हैं, दयालु व्यक्ति दयालुता
डालता है, कठोर व्यक्ति कठोरता डालता है

क्या अंदर का सामान मेरा है
उस घड़े के अलावा मेरा क्या है?

## घड़े की कहानियाँ, 'मैं' के खालीपन की कहानी, यह कहने की कहानी कि सब कुछ एक कहानी है, कहानी में उत्तर खोजने की कहानी

यह एक खाली जार था और यह एक
खाली जार है जहां जीवन है

क्या ये शब्द जीवन हैं
या जो लिख रहा है वो है

Machine Translated by Google

जीवन को पढ़ने वाला व्यक्ति है या पढ़ी गई
बात का अर्थ

तुम्हें क्या लगता है जीवन कहाँ है?

यदि कोई व्यक्ति अपने आप को जार में मौजूद कहानियों के साथ पहचान लेता है तो वह पूरा जार
नहीं देख पाएगा

बाकी अवस्था में, डिफ़ॉल्ट अवस्था में जागरूकता को बिना
किसी बाधा के फैलाया जाता है

तनाव की स्थिति एकत्रित हो रही है और संकुचित हो रही है
जागरूकता
एक बहुत ही संकीर्ण क्षेत्र पर ध्यान

अब बारी है उन कहानियों से जुड़ने की, उनसे खुद को जोड़ने की

ऐसा होना स्वाभाविक है, जब शुरू से ही किसी को नाम, लिंग, रंग,
जातीयता... और इन सभी सीमित, संकीर्ण पहचानों के साथ पहचान
करने के लिए तैयार किया जाता है

भले ही किसी को घुटन का एहसास हो
क्योंकि विकल्प शून्यता है, इसलिए उसे छोड़ना असंभव कार्य लगता है

Machine Translated by Google

जाने देना खुद के एक हिस्से को काटने जैसा महसूस होगा
अधिक का महत्व है, कम का डर है
कुछ भी मायने नहीं रखता है
कम ही ज़्यादा है और ज़्यादा ही कम है

'तुम्हारा क्या विचार है कि अंधकार क्या होगा, या दुख का चरम रूप क्या होगा?'

'वाह, आपको ये सवाल कहाँ से मिलते हैं, हाहाहा। इनमें से बहुत कुछ अनुमान और कल्पना है। आइए देखें कि क्या हम इसके ज़रिए तर्क का कोई धागा बना सकते हैं। अंधकार तब होता है जब सत्य मर जाता है, और कोई भरोसा नहीं रह जाता, जब डर के कारण सब कुछ बंद हो जाता है। यह विचार के पक्षाघात का क्षण होता है। इसकी गति पूरी तरह से रुक जाती है। व्यक्ति अपनी आँखें बंद कर लेता है, अपने कान बंद कर लेता है और खुद को अंधेरे कमरों में कैद कर लेता है।

अब कोई सोचेगा कि कोई ऐसा क्यों करेगा, क्योंकि मन में डर के अलावा कुछ नहीं होगा। अंधेरा एलियंस का आक्रमण नहीं है, या कुछ रोबोट का कब्ज़ा नहीं है, यह तब होता है जब किसी व्यक्ति की गति को रोक दिया जाता है। इच्छाएँ उसे आगे बढ़ने के लिए मजबूर करेंगी, ऊर्जा देंगी, लेकिन डर उसे बांध देगा और आगे बढ़ने नहीं देगा। और यह सब खुद के साथ किया जाता है

यदि आप इसे अकेले ही करेंगे, तो यह शून्यता में एक पूर्ण जाल होगा।

Machine Translated by Google

किसी ऐसे व्यक्ति से पूछें जो गंभीर अवसाद या चिंता से ग्रस्त है और आपको एहसास होगा कि असली चोट, पूर्ण पीड़ा अंदर है। यह मृत्यु नहीं है, यह इतना भय है कि आत्महत्या भी एक विकल्प नहीं होगा। आपने इसकी झलक देखी है। जब डर के कारण आप बोल नहीं पाते या कुछ नहीं कर पाते... अब इसे पूर्ण निष्क्रियता पर लागू करें और क्रिया का मूल विचार है। इच्छा गति, क्रिया का विचार है और भय बाधाओं, निष्क्रियता का विचार है... अब एक मन की कल्पना करें जो एक ही समय में दोनों काम कर रहा है। यह पूर्ण शांति है लेकिन

अनंत प्रयास, यही शांति के विपरीत है। मुझे लगता है कि आप समझ गए होंगे कि मैं क्या कहना चाह रहा हूँ। अगर कोई अपनी आँखें खोले तो यह पहले से ही हो रहा है।'

'हम फिर से शून्य पर पहुंच गए हैं। यह बार-बार लूपिंग है। लगातार लिखते रहना और फिर से इस निष्कर्ष पर पहुंचना कि यह सब बेवकूफी है, हास्यास्पद है।'

'यह उस विचार की तरह है जो अर्थ के बिना अस्तित्व में नहीं रह सकता, फिर भी वह जानता है कि अर्थ काल्पनिक है।'

'यह एक गतिरोध है, जब हम दोनों तरफ से खेल रहे हैं और हम गतिरोध पर पहुंच गए हैं तो क्या करें।'

'वैसे भी यह सब मनोरंजन ही है। जीवन का पूरा खेल एक बोनस मनोरंजन है। यह है, इसलिए है

Machine Translated by Google

'जब वह वहां नहीं होता, तो वह बस वहां नहीं होता।'

'अगर यह सब मूर्खतापूर्ण और निरर्थक है और हमें कम से कम एक विकल्प चुनना है, तो मुझे लगता है कि यह ठीक है।'

'हम उस मूर्खता को चुनते हैं जो स्वाभाविक रूप से आती है और एक तरह से यह सब लिखना हमारे लिए स्वाभाविक प्रवाह है।'

'स्वाभाविक मूर्खता। हा हा... जब संगठित मूर्खता की बात आती है, तो लोग नाराज़ हो जाते हैं यदि कोई इसे हल्के में करता है, गंभीरता का मुखौटा, भले ही नकली हो, ही सराहना का एकमात्र तरीका है।'

'अर्थ तय करने की खोज, 'यह सब कैसे अर्थहीन हो सकता है' से बाहर आकर इस बेवकूफी भरे नाटक का परिणाम है। काश कोई इसे छोड़ दे। हा हा हा।'

'जब तक जीवन क्या है, इस बारे में अज्ञानता रहेगी या इसका अर्थ समझ में नहीं आएगा, तब तक यह चलता रहेगा।'

'अगर जीवन को एक खेल के रूप में देखा जाए, तो उस खेल को गंभीरता के बिना भी खेला जा सकता है। जब हारने वाला पक्ष जीतने वाले पक्ष जितना ही इसका आनंद लेता है। दौड़ शुरू होती है, संघर्ष होता है, जब जीत/हार के खेल में हर कोई जीतने वाले पक्ष में होना चाहता है। हम जानते हैं, अगर खेल है तो कोई न कोई हारने वाला है, इसलिए

Machine Translated by Google

पूरा ध्यान 'मैं' पर केंद्रित हो जाता है, यहां तक कि स्वयं को नकली नैतिकता में बांधकर यह दिखावा किया जाता है कि हर कोई विजेता हो सकता है।
'विजेता की अवधारणा मात्र से ही हारने वाले की उत्पत्ति हो जाती है।'

'ऐसा नहीं है कि हमने इसके बारे में नहीं सोचा, प्रणालियाँ प्रस्तावित और आजमाई गई हैं लेकिन हर प्रणाली विफल हो जाती है क्योंकि वह प्रेम पर आधारित नहीं होती बल्कि किसी विचार पर आधारित होती है।

'मन द्वारा रचित नैतिकता।'

'यदि प्रेम हो तो मूलतः किसी व्यवस्था की आवश्यकता नहीं होगी।
और यही एकमात्र समाधान है, लेकिन हमें कुछ ऐसा चाहिए जो अर्थ पैदा करे और इस तरह चक्र फिर से शुरू हो जाए।'

जब प्रश्न को 'मन पर नियंत्रण' के रूप में नहीं बल्कि 'मन को समझने' के रूप में समझा जाता है, तो किसी भी विचार, व्यवहार को समझने का अगला कदम उसे समग्र रूप से देखना है। शुरू से अंत तक। विचार को क्या लाता है और विचार अमूर्त से मूर्त कैसे बनता है। निष्पक्ष स्थान से देखे गए संपूर्ण को देखने से पता चलेगा कि यह कैसे घटित हो रहा है।

'मुझे कई बार लगता है कि मैं इसे साझा क्यों नहीं कर सकता। मैं शब्दों के माध्यम से कोशिश कर रहा हूं और कुछ लोग कहते हैं कि यह काफी अच्छा है।
लेकिन कहीं न कहीं, कभी-कभी मुझे नुकसान का एहसास होता है

Machine Translated by Google

इसे शब्दों में परिवर्तित करना।'

'तुम कौन होते हो किसी को कुछ देने वाले। तुम किसी चीज के मालिक नहीं हो, जिसे तुम बांट सको। और मूल्य की यह धारणा... यह सब बस मन की कोशिश है कि जो वास्तव में अर्थहीन है, उसे अर्थ दिया जाए।'

'तुम सही हो। अंत में, यह सिर्फ जीने के बारे में है।
सूरज को सूरज ही रहना है और आग को आग ही रहना है।
कोई इसका उपयोग खाना पकाने या किसी के घर को जलाने के लिए करता है, यह आग के लिए नहीं हो सकता।'

'ऐसे ही पलों में मुझे प्यार की तीव्रता और स्पष्टता का एहसास होता है। प्यार जिसमें खुद का बलिदान नहीं बल्कि खुद होना शामिल है।'

'अगले' का सवाल, भविष्य और वर्तमान का अभाव। खुले सिरों को बंद करने की प्रवृत्ति।
वास्तविकता यह है कि खुले सिरे कभी भी पूरी तरह बंद नहीं हो सकते।
समय की अवधारणा से परे, गहराई में जाने पर, यह सिर्फ़ विचारों में तनाव है। 'क्या है' यह निश्चित है लेकिन क्या हो सकता है यह विचार अभ्यास है। तो अंत में, यह समय के उस क्षण में जीना कितना तनावपूर्ण है।

एक तरह से जीवन को इस प्रकार देखा जा सकता है:
'जितना अधिक प्रयास किया जाता है, उतना अधिक जीवन मिलता है

Machine Translated by Google

अनुभवों का जितना अधिक डेटा एकत्र किया जाता है, उतना ही अधिक जीवन मिलता है

'जितना अधिक व्यक्ति भावनाओं को महसूस करता है, उतना अधिक वह जीवित रहता है।'

अगर जीवन को गति के रूप में देखा जाए, तो यह सच होगा, मुद्दा लूप में गति का है। अब क्या वह गति वास्तव में गति है। हा हा... हम एक ऐसी जगह पर पहुँच गए हैं जहाँ हम न तो इनकार कर सकते हैं और न ही स्वीकार कर सकते हैं। लूप में गति भी गति ही है, लेकिन इसे समय की अवधारणा से देखने पर यह स्थिर महसूस होगी। इस लेखन की तरह, एक गति जहाँ यह सितारों तक जाती है, फिर भी यह हमेशा एक ही स्थान पर वापस आती है - कि यह सब मन का मनोरंजन है।

ये शब्द कलम, कागज, भाषा और सभी स्मृतियों तक पहुंच के माध्यम से सोचे जाते हैं।

और फिर वह एक बच्चे की तरह यहां-वहां नाचने लगता है।
कभी-कभी यह एक रास्ते पर गहराई में चला जाता है, कभी-कभी यह बस इधर-उधर उछलता है, कभी-कभी रास्ता एक सीधी सी सीढ़ी की तरह होता है, कभी-कभी यह एक पहाड़ी ट्रेक की तरह होता है - जंगली और अनिश्चित, अंत में, यह सब एक कहानी है। पथ, दूरी, गहराई की अवधारणाएँ सभी अलग-अलग खेल हैं, कुछ चल रहा है फिर भी इसे शब्दों में नहीं पकड़ा जा सकता है।

Machine Translated by Google

जैसे कोई शतरंज, या पबजी, या क्रिकेट का खेल खेलता है।

उस खेल की सभी अवधारणाएं काल्पनिक हैं, फिर भी कुछ ऐसा है जिसका कोई नाम नहीं है, जो इसके द्वारा निर्मित विभिन्न परिदृश्यों, कहानियों के माध्यम से आगे बढ़ रहा है।

वह क्या है जो चल रहा है...रहस्य...हाहा

Machine Translated by Google

नदी के किनारे लेट जाओ

एक पुराने पेड़ के नीचे

छाया को फड़फड़ाते हुए देखो

दिल की धड़कन वाली हवा

तुम्हें धो रही है

चहचहाते पक्षियों को देखो

और भूल जाओ कि दुनिया कहीं और है

यह बात है

आखिरी, पहला और एकमात्र पल जो आपके पास हो सकता है

रोमांटिक तरीके से और वास्तविक तरीके से

अर्थ को बहुत अधिक महत्व दे देने से व्यक्ति का जीवित रहना कठिन हो जाता है।

नैतिकता की संकीर्ण भावना, उच्च भूमि की वजह से यह गणना करना और साबित करना आसान हो जाता है कि जीवन अधिक या कम हो सकता है

जीना तो जीना है

कोई भी अधिक नहीं जीता और कोई भी कम नहीं जीता

यह बस और सिर्फ जीना है, जब तक यह नहीं है

'अब हमें कहां जाना चाहिए? अंतहीन चक्करों की ओर।'

'अगर कोई परिप्रेक्ष्य नहीं है तो कोई लूप नहीं है। लेकिन तब तनाव होगा।'

'ब्ला... ब्ला... ब्ला... हाहा'

Machine Translated by Google

'चलो एक कहानी लिखें
एक इंसान की कहानी

वह पैदा हुआ था

उन्हें एक फॉर्म मिला

इस फॉर्म के साथ सभी प्रकार के शब्द जुड़े हुए हैं

भेदभाव

और अहंकार, अहंकार, निर्णय के स्थान से देखा गया भेदभाव ही विवेक है इसलिए उसने विवेक प्राप्त किया

वह भेदभाव विरासत है

यह तब हुआ है जब पक्ष में थे तो भेदभाव का आनंद लिया और जब विरोध में थे तो आलोचना की।

तो उसे कुछ मिला

जब 'वह' करोड़पति, उच्च जाति, गोरी चमड़ी वाला पैदा हुआ... और वह सब जो सद्गुण, वांछनीय माना जाता है, तब उसने इसे स्वीकार कर लिया और कभी इस पर सवाल नहीं उठाया। फिर वही चेतना गरीब, निचली जाति, काली चमड़ी वाला पैदा हुआ... और फिर उसने इस पर सवाल उठाया, विरासत में मिला।

दोनों मामलों में अवांछनीयता है और

दोनों में एक स्वतंत्र उपलब्धता, फिर भी यह जिस भी रूप में आता है, यह दुनिया को केवल सही और गलत के रूप में देखता है। इसने कभी भी खुशनुमा समय पर सवाल नहीं उठाया। जो मुफ़्त था लेकिन खुश था, उस पर कभी सवाल नहीं उठाया गया। यह था और है

Machine Translated by Google

हमेशा पक्षपातपूर्ण। जैसे जीवन स्वतंत्र है, वैसे ही जीते रहना वांछनीय है लेकिन जीवन के साथ मृत्यु भी आती है। इसमें कोई विकल्प नहीं है। मृत्यु और जीवन दोनों को पास-पास और समान दूरी पर रखें और यह सभी भेदभाव को धो देगा।

चेतना में केवल निर्णय ही नहीं होते
इसमें प्रेम भी है

लेकिन वह केवल खरीदी गई चीज की ही सराहना कर सकता है

उन्हें बार-बार अधिकारों के बारे में बताया गया है

गलतियों को सुधारने

क्या वह जाने देगा?

न केवल वह जो असुविधा देता है बल्कि वह भी जो आरामदायक है

वह अत्याचारी भी है और शोषित भी
वह पीड़ित भी है और अपराधी भी

वह गिलास को आधा भरा या आधा खाली देखता है

क्या वह सिर्फ शीशा देख पाएगा?

'बाद में जो हुआ, यह कहानी फिर से लूप्स जैसी लगती है...हा हा। देखिए, एक कहानी एक बार की बात से शुरू होती है...और एक निष्कर्ष, एक नैतिकता के साथ खत्म होती है।'

'ठीक है, चलो फिर से शुरू करते हैं। एक बार की बात है, एक इंसान का जन्म हुआ, उसके जन्म के साथ ही समय शुरू हो गया।

मानव का जन्म हुआ अर्थात मानव होना, यही शुरू हुआ।

यह एक ऐसी कहानी है जो कहानीकार के कारण शुरू हुई

Machine Translated by Google

दोनों एक ही समय पर शुरू हुए।'

'फिर वही बौद्धिक पहेलियाँ। चलो, हम भी ऐसी कहानी सुनाते हैं, जैसे तुम किसी बच्चे को सुना रहे हो।'

'हाहा... मुझे लगता है कि बच्चा आपकी तरह नहीं सोचेगा। यह आपके अंदर की जटिलता है जो कहानी को तब तक स्वीकार नहीं करती जब तक कि उसे आपकी इच्छानुसार न बताया जाए।'

'ठीक है! तो फिर चलिए, आप इसे जिस भी तरीके से कहना चाहें, बताते हैं।'

'जीवन, मनुष्य, मृत्यु..... मैं यह कैसे कहूँ। मुझे बातचीत करने का मन कर रहा है, लेकिन अब हमारे पास शब्द और पृष्ठ ही हैं। एकतरफ़ा लेखन की तुलना में बातचीत ज़्यादा खुली हो सकती है। कोई उलझा हुआ क्यों महसूस करता है? दिल इतना भारी क्यों लगता है? जितना ज़्यादा कोई स्वामित्व, नियंत्रण करने की कोशिश करेगा, चलने के लिए जगह या चलने के तरीके कम होते जाएँगे।

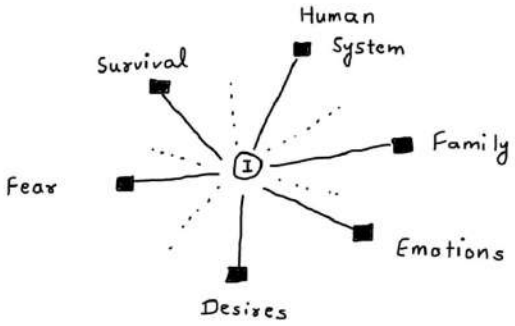

Machine Translated by Google

यही आसक्ति है। जब कोई किसी को बांधता है या

किसी की पहचान को पैसे या किसी भी तरह के अर्थ, मूल्य से जोड़ देता है। फिर यह आसक्ति की सभी बाधाओं के साथ आगे बढ़ने का एक कभी न खत्म होने वाला प्रयास बन जाता है।

यह इससे भी कहीं अधिक गहरा है, लेकिन हम यहीं से शुरू करते हैं। जो हो रहा है, उसके अवलोकन से। जैसे स्वीकृत मानव व्यवस्था कर्फ्यू लागू करती है, लेकिन इच्छाएँ चाहती हैं कि यह किसी दूसरी दिशा में चले और मृत्यु का भय

इसे दूसरी दिशा में खींचता है। इससे तनाव पैदा होगा, जो जुड़ा हुआ है, वह खिंच जाएगा। इसीलिए व्यक्ति उलझा हुआ महसूस करता है और दिल भारी लगता है।

यह अनुभव को व्यापक रूप से स्वीकृत तरीकों और अवधारणाओं में समझने का एक प्रयास है।
शायद इसे बेहतर तरीके से समझाया जा सकता है, एक अलग दृश्य के द्वारा समझा जा सकता है
लेकिन अभी के लिए हम इसके साथ काम करते हैं

सरल मॉडल/उदाहरण.'

'आपने मुझे भावनाओं से, रिश्तों से अलग दिखाया है, क्या वे स्वयं मैं नहीं हूं।'

'यह जानना संभव नहीं है कि 'मैं' वास्तव में कहां तक फैला हुआ है। और आसक्ति कहां से
शुरू होती है।
इस तरह देखा जा सकता है.

Machine Translated by Google

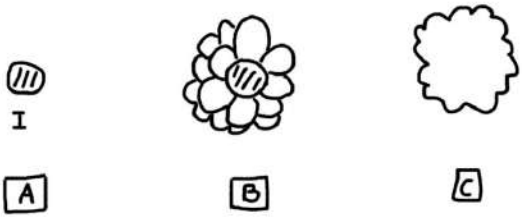


जो महसूस किया जाता है, देखा जाता है वह 'सी' है। जहाँ आसक्ति अलग-अलग नहीं बल्कि एक इकाई के रूप में महसूस होगी। क्या वे वास्तव में कुछ अविभाज्य भाग हैं, यह केवल घटाव या उन्हें एक-एक करके हटाने और जो होता है उसे देखने से ही जाना जा सकता है।'

प्रेम का स्थान
शून्यता का स्थान फिर भी सब कुछ है
मौत से क्या नहीं रुकता
जो समय से नहीं रुकता
यह वह है जो हमेशा मौजूद रहता है
यह वह है जो कभी ख़त्म नहीं होता
यह नयापन नहीं है, यह आसक्ति नहीं है
यह प्रकाश और अंधकार दोनों है
यह मैं और तुम एक साथ हैं
यह छोटी गौरैया है
और यह थोड़ी डरी हुई गाय है
यह बहता पानी है
और ये बादल हैं
वो सब कुछ आप में है

Machine Translated by Google

मैं भी तुझमें हूँ और तू भी मुझमें है
यह शून्यता में पूर्णता है
यह संभव है
यह यहाँ और हर जगह है

यदि कुछ सम्भव है तो संवाद कैसे किया जाए?
मान लीजिए कि यह अस्तित्व का एक नया आयाम है। अपने आप में यह नया नहीं हो सकता क्योंकि यह केवल तुलना में ही होता है।
फिर भी यह अपने आप में नया लगता है। यह अन्वेषण है। किसी प्रश्न की वास्तविक गहराई पूरा प्रश्न है - जो उत्तर है। कोई भी व्यक्ति दूसरों के सापेक्ष नया या पुराना नहीं जान सकता। अनुभवों को किसी सामान्य शब्द से टैग नहीं किया जा सकता। संचार में एक अजीब आयाम है जो अनुभव के संकेत के रूप में दूसरे द्वारा बोले गए शब्द से पूरी तरह परिचित होने को मानता है। यह 'क्यों' पूछे बिना बस जीना है।

यहां तक कि संचार की अनावश्यकता को भी संप्रेषित किया जाना चाहिए।
यह कभी समाप्त नहीं होता।

Machine Translated by Google

प्रिय,

आप इसे भविष्य में फिर से पढ़ेंगे क्योंकि नदी का स्वभाव बहना है और जो चक्र में बह सकता है वह बंध जाता है

उसी जगह पर फिर से जाना। हालाँकि, ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे शब्दों में बताया जा सके जो आपकी मदद कर सके। एकमात्र संकेत है 'पर्यवेक्षक का निरीक्षण करें'। केवल आप ही खुद को और अपनी दुनिया को जान सकते हैं, इसलिए आपको बताई गई हर बात को हटा दें, और भले ही कोई निश्चित दिशा निर्दिष्ट न हो, आप इसे समझ लेंगे। शब्दों में जिस पर चर्चा की जा सकती है वह है तर्क। और तर्क की समानता की धारणा के माध्यम से, हम एक समझ बनाने की कोशिश कर सकते हैं/

शब्दों की दुनिया में व्यवस्था.

बहुत कुछ है जिसके बारे में बात की जा सकती है लेकिन यह सब खत्म हो जाएगा

अंततः अंतर करने की क्षमता पर निर्भर करता है।
यही वह मूल तत्व है जिस पर 'मैं' उसे अलग करता है

बाकी से। विभेदन, जो अलग करने की क्षमता है, जैसे दृश्य में: जो आकाश से बादल को अलग करता है, जो लाल रंग के शेड्स को अलग करता है, ध्वनि में: जो बजने वाले वाद्यों को अलग करता है... स्थूल स्तर पर जो कुछ भी इंद्रियों द्वारा देखा जा सकता है वह वास्तव में मन का एक मौलिक गुण है। इंद्रियाँ केवल तरीके हैं जिनसे इसे क्रियान्वित किया जाता है।

एक और शब्द जो सभी संघर्षों का आधार है,

Machine Translated by Google

'भेदभाव'। जब दूसरे दृष्टिकोण से देखा जाए तो अंतर

इच्छा का पक्षपातपूर्ण दृष्टिकोण भेदभाव है।

भेदभाव इसे दो भागों में बांटता है जैसे काला और सफेद, अग्रभूमि और पृष्ठभूमि, मैं और दुनिया, बायाँ और दायाँ, पुरुष और महिला... और भेदभाव तब होता है जब सफेद को बेहतर या श्रेष्ठ माना जाता है या पसंद किया जाता है, जब मुझे पसंद किया जाता है, जब दायाँ पसंद किया जाता है, जब पुरुष को पसंद किया जाता है। यह वरीयता पदानुक्रम बनाती है जिसके परिणामस्वरूप संघर्ष होता है।

इसे विभेदीकरण और भेदभाव के रूप में देखने का यह तरीका भी समझ बनाने का एक तरीका है।

यहाँ या कहीं और लिखी गई कोई भी बात आपको गहरी समझ बनाने के अलावा किसी और तरीके से मदद नहीं कर सकती। लेकिन क्या वह समझ बौद्धिक बहस से ज़्यादा होगी, क्या यह आपके जीवन में ज़्यादा अंक पाने से ज़्यादा होगी.. यह सब आप पर निर्भर करता है। और सामान्य ज्ञान के विपरीत, इस समझ का वास्तविक अंत ज्ञान नहीं बल्कि अज्ञानता का बोध है।

हमारे अस्तित्व की जितनी परतें पलटी जाएँगी, उतना ही उसमें छिपे अर्थ की सतही प्रकृति का एहसास होगा। यहाँ जो कुछ भी लिखा गया है, वह सब मूर्खता है, यह हमारे समय के सामान्य अर्थ के दृष्टिकोण से लिखा गया है। यह ऐसा है जैसे 1+1=2 को आम तौर पर स्वीकार कर लिया गया हो

Machine Translated by Google

यह हमारे समय का आधारभूत स्तंभ है और मैं इस आधार का उपयोग यह प्रश्न करने के लिए करता हूँ कि क्या जोड़ना कभी इतना बड़ा हो सकता है कि वह हमें भर सके।

ऐसा कुछ भी नहीं है जो बाहर से दिया जा सके। पढ़कर आपने अपने अंदर कुछ बदलाव की अनुमति दे दी है। यही खुलापन है। लेकिन सब कुछ आप ही हैं और जो भी बदलाव हो सकता है, वह आप ही होंगे।

इस जीवन से कुछ भी प्राप्त नहीं किया जा सकता। अगर हम वास्तव में इसे समझ लें, तो जीवन बहुत आसान हो जाएगा, बहुत अधिक प्रेमपूर्ण हो जाएगा। मैं यह कैसे बताऊं कि आपके पास जो कुछ भी है, वह 'है'। अतीत या भविष्य को प्रक्षेपित करने के लिए स्मृति के आयाम का उपयोग करना व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए ठीक है, लेकिन यह सब प्रक्षेपित करने वाले पर केंद्रित है, इसे मत भूलिए।

'सुनो, तुम वहाँ हो?'

'मैं हमेशा यहाँ हूँ, मैं तुम हूँ...लोल'

'मानव चेतना केवल मानव जगत के प्रति सचेत है। चेतना स्वयं में जगत है। सोचो

इसके बारे में, अंत में मनुष्य केवल वही समझ सकता है, केवल वही समझ सकता है जो उसकी क्षमताओं में निहित है। देखने की क्रिया की तरह, यदि इसका सब कुछ प्रकाश के प्रति संवेदनशील हिस्सा है, तो इसका मतलब है कि जो कुछ भी देखा जा सकता है वह प्रकाश है।'

Machine Translated by Google

'मैं कुछ हद तक इसे समझता हूँ। यदि हम संकेत को संकेत के अर्थ से अलग कर दें, तो
हम जो कुछ भी समझ पाते हैं, वह मूल संकेत ही है।
लेकिन हम इस मामले में कहां जा रहे हैं?

'कोई विचार नहीं, जैसा कि पहले लिखा गया है। मुझे यह पसंद है, जब विचार बिना किसी उद्देश्य के आगे बढ़ता है, तो यह स्वतंत्रता है और इसमें कम प्रयास लगते हैं इसलिए यह अधिक है

शांतिपूर्ण।'

'काव्यात्मक मैं...हाहा। जहाँ हवा ले जाती है, वहाँ जाता हूँ।
जंगल में जिज्ञासा के साथ, शांति के साथ घूमना, जहां मन करे बैठ जाना, जब मन करे चल देना, बात करने या चुप रहने की कोई बाध्यता नहीं।'

'यही वह बात है जो सामने आती है...जब कोई यह समझ जाता है
हंसना भी रोने की तरह ही प्रयास है। जब कोई व्यक्ति स्वाभाविक रूप से दोनों से अलग हो जाता है तो शांति आती है।
नारियल के पेड़ की शांति अपने आप में है। अब अगर हवा उसे तोड़ दे, या कोई इंसान या पक्षी उसका इस्तेमाल कर ले, तो इसकी कोई चिंता नहीं है।'

'यह एक खूबसूरत जगह है। यहां तूफान के बीच भी शांति का अहसास होता है। दूसरी तरफ,
मैं समझता हूं कि ईमानदारी हमारे अस्तित्व का सबसे महत्वपूर्ण स्तंभ है।

ईमानदारी सत्य नहीं हो सकती, लेकिन अज्ञानता की स्थिति में ईमानदारी सत्य के साथ मिल जाती है। सबसे गहरी और शुद्धतम ईमानदारी सत्य है।

Machine Translated by Google

एक दूसरे की प्रशंसा करना ही ईमानदारी है। क्या ईमानदारी के बिना जीना संभव है? क्या ईमानदारी के बिना प्यार संभव है?

'मैं सहमत हूं, यदि कोई भ्रष्ट है तो किसी भी प्रश्न का उत्तर नहीं दिया जा सकता है, यदि हम स्वयं से झूठ बोल सकते हैं तो उत्तर जानने या उसका मूल्यांकन करने का कोई तरीका नहीं होगा।'

'सामान्य रूप से भी, जो भ्रष्ट है वह मृगतृष्णा है, वह टेढ़ा-मेढ़ा है, विभाजित है, विरोधाभासों की गांठें शांति नहीं रहने देंगी, धीरे-धीरे वह भ्रम में जकड़ लेंगी और गांठें खिंचती जाएंगी तथा तनाव पैदा करती जाएंगी।'

'हालाँकि, ईमानदारी से जीवन जीना आसान नहीं है। बचपन से ही माता-पिता जानबूझकर या अनजाने में नियंत्रण करने के लिए बेईमानी की तरकीबें अपनाते हैं। फिर स्कूल में शिक्षक ईमानदार नहीं होता, जीवन की नींव या शुरुआती दौर में सब कुछ हेरफेर के बारे में होता है। कॉलेज के बाद की अवधि, नौकरी वैसे भी भरी होती है - जो सच है उसे नहीं बल्कि जो काम करता है उसे कहते हैं। और हम बेचते हैं

अमूर्त के लिए - सत्य, मृगतृष्णा के लिए - अस्थायी मूर्त चीजों के लिए।'

'हम दोनों तरफ से तनाव में हैं। सबसे पहले

'मैं', व्यक्तित्व का निर्माण होता है और इसमें बहुत ऊर्जा लगती है। आपको अपना नाम, अपना खुद का व्यक्तित्व बनाना होगा

Machine Translated by Google

पहचान, ब्रांड और वह सब। और फिर उसे छोड़ देना पड़ता है, वह पहचान जिससे आप इतना जुड़े हुए हैं। आप आबादी में सिर्फ़ एक और संख्या हैं, सिर्फ़ एक और वोट, सिर्फ़ एक और राय। विरोधाभास होने का यह पाखंड तनाव पैदा करता है और व्यक्ति को अपने अंदर ही फंसा देता है।'

'इच्छाशक्ति होनी चाहिए। ईमानदारी पर आधारित प्रयास, वास्तव में निष्पक्ष दृष्टि से देखने के लिए। अगर हम प्रयासों को आउटपुट के विरुद्ध मापना शुरू कर दें तो हम कभी नहीं देख पाएंगे। हर वह चीज जिसका मूल्य/ लागत विश्लेषण किया जा सकता है, पहले से ही देखी जा चुकी है। खुलेपन से एक नया अनुभव तलाशना होगा।'

'ये सब प्रयास उस व्यक्ति के लिए बेकार हैं जिसने

जीवन क्या है, यह क्या हो सकता है, इसे कैसे जीना चाहिए, इसके बारे में पहले से ही कुछ तैयार उत्तर स्वीकार कर लिए गए हैं।

ईमानदारी से कहूँ तो मुझे नहीं लगता कि अगर सवाल अंदर से नहीं आता है तो इसका कोई मतलब है।

लत, बेकार की संतुष्टि जो क्षणिक है, लूप में घूमना... ये सब तभी उपयोगी जानकारी या ज्ञान है जब यह आत्म-चिंतन के बाद आए और किसी किताब या चर्चा से न लिया जाए।'

Machine Translated by Google

'इंद्रिय सुख की लत किसी को सवाल करने नहीं देती। और अगर कोई सवाल भी करता है, तो वह मानसिक चरमसुख पाने के लिए होता है, न कि वास्तव में जानने के लिए।'

'यह सब बस इधर-उधर घूम रहा है। जो वास्तव में खोज रहा है, उसे कुछ भी हो, वह मिल ही जाएगा। फिर भी, एक्शन तो करना ही है, कहानी को आगे बढ़ाना है।'

'वाह... इतने सारे अमूर्त शब्द और गहरी बातें। मुझे लगता है कि इन सबमें एक मुख्य बात खुली चर्चा का अभाव है। हर किसी को बताया जाता है, सूचित किया जाता है, प्रभावित किया जाता है, मजबूर किया जाता है... कोई भी ईमानदारी से साथ नहीं चलता। देखिए, अब मैं भी फैंसी शब्दों का इस्तेमाल कर रहा हूँ। मेरा मतलब था कि एक ऐसी जगह जहाँ किसी भी चीज़ और हर चीज़ पर चर्चा की जा सकती है, उदासीनता की स्थिति से उसका विश्लेषण किया जा सकता है। चाहे वह ज्ञान हो, या सवाल, या अज्ञानता, भेदभाव या भेदभाव... हर चीज़ पर खुलकर चर्चा की जा सकती है और यही प्यार नहीं है।'

Machine Translated by Google